स्वप्नलोक

स्वप्नलोक

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5391-547-6
दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण :2019

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
Phone: 01202343563 M-9968502767

स्वप्नलोक

A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

समर्पण

समस्त मैथिलीभाषीकेँ सप्रेम समर्पित

रबीन्द्र

आभार

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि । संगहि हमर भातिज श्री राज किशोर मिश्र(आइ.इ.एस), चीफ जेनेरल मैनेजर(सीजेएम),बीएसएनएल हमर पुस्तकसभकेँ मनोयोग पूर्वक पढ़ि बहुत रास रचनात्मक सुझाव दैत रहलाह । हमर अनन्य मित्र श्री ओम प्रकाश सपरा,श्री मदन मोहन सिन्हा, एवम् श्री संजीव सिन्हा हमरा लिखबाक हेतु निरंतर उत्साहित करैत रहलाह । एहि हेतु ओ सभ प्रशंसाक पात्र छथि। हिनकासभकेँ हार्दिक धन्यवाद।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिन पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

04/10/2019

स्वप्नलोक

१

मधुबनी सहरसँ पाँच माइलपर छल हीरापुर । इलाकामे ओ एकटा प्रतिष्ठित गाम छल । ओतए सहरक बहुत रास सुविधासभ सुलभ छलैक । सड़कक कातेमे बसल रहबाक कारण मधुबनीसँ बेनीपट्टी जाएबला बससभ ओतए अवश्य ठहरैत छल । लग-पासक गामक बहुत रास दैनिक यात्रीसभ ओहि बसमे चढ़ैत - उतरैत छलाह । बसक परिचालक ओही गामक छल । तेँ हीरापुरक लोकसभकेँ ओ बस किरायामे किछु कए छूट दए दैत छलैक । तेँ ओहिगामक लोकसभ ओही बसमे चढ़बाक प्रयास करैत छल ।

हीरापुर गामक विशेषता छलैक शिक्षाक प्रति आकर्षण । खेत-पथार बेचिओ कए लोकसभ अपन संतानकेँ नीकसँ नीक शिक्षाक व्यवस्था करैत छलाह । तकर फएदा सद्यः देखाइत छल । गाममे जेम्हरे जाउ एकसँ एक विद्वान भेटि जेताह ।

ओहि गामक शिक्षित परिवारमे वसंत पंचमी दिन सौरभक जन्म भेल रहनि । पिताक ओ एकमात्र संतान रहथि । तेँ जतेक मनोरथ छलनि से हुनके माध्यमसँ ओ पूर्ण करबाक प्रयास करथि। हुनका मधुबनी स्थित वाटसन इसकूलमे मैट्रिकधरि पढ़ाइक व्यवस्था भेल । छात्रावासमे रहथि । गामसँ घी,मधुर आ की-की ने सनेस जाइत रहैत छलनि । मुदा हुनका पढ़ाइ-लिखाइमे कम नाटकमे बेसी मोन लगैत छलनि। तथापि ओ एकहि बेरे मैट्रिकक परीक्षा पास कए गेलाह । तकर बाद की कएल जाए ? एहि विषयमे

परिवारमे बहुतरास घमर्थन होइत रहल । अंततोगत्वा, हुनकर नाम पटनामे लिखाओल गेल ।

गामसँ एतेक दूर बौआ कोना रहताह? एही चिंतामे हुनकर पिता परेसान रहथि। मुदा जखन पता लगलनि जे लग-पासक कैकटा विद्यार्थी ओहिठाम पढ़ि रहल छथि तँ हुनकार चिंता कम भेलनि । पटना गेलाक बाद सौरभक नाटक खेलेबाक सौख बढ़िते गेलनि । पटनासँ कालेजक तरफसँ ओ जहाँ-तहाँ नाटक खेलेबाक हेतु जाइत छलाह । एहिमे हुनकर पढ़ाइ हरमाद होनि तँ होनि ,तकर हुनका परबाह नहि रहनि । कहथि -

"सभटा हमही कए लेब तँ शेष लोक की करत?

सौरभ सालक-साल गााम-गाम,सहर-सहर दोस्तसभक संगे नाटक खेलाइत रहि गेलाह । कालेजक संगी सभक संगे ओ नाट्यमंचक स्थापना केलाह । संयोग एहन भेलैक जे ओ नाटक मंडली बहुत लोकप्रिय होइत गेल । कैक बेर कालेज दिससँ हुनकासभकेँ नाटक खेलेबाक हेतु दोसर कालेजसभमे सेहो पठाओल जानि । कतेकठाम इनाम सेहो जितलनि ।

निरंतर भेटि रहल सफलताक कारण सौरभक रुचि नाटकमे बढ़िते गेलनि । लग-पासमे जतए कतहु नाटक होइत ,ओ जेबे करितथि। हुनकर ख्याति दूर-दूर धरि पसरि गेल । ओही क्रममे पटना सहरक कलाप्रेमीक मध्य नाट्यमंचन करबाक हेतु अवसर भेटलनि । सहरक नामी लोकसभ नाटक देखबाक हेतु उत्सुक रहथि । आरतीक नामसँ इलाकाक कलाप्रेमी पूर्व परिचित रहथि। ओहि समयमे पटनामे कैकटा कन्यासभ कलाप्रदर्शनमे नाम केने छलीह । जाहिमे आरती सभसँ लोकप्रिय रहथि।

नाटकक तैयारी जोर-सोरसँ चलि रहल छल । सौरभ नायक छलाह आ नायिका छलीह आरती । पूर्वाभ्यास हेतु इसकूलपर सभ कलाकार जमा होइत छलाह । एहिना एकदिन साँझमे पूर्वाभ्यास चलि रहल छल । नाटकक निदेशक, सौरभ आ आरतीक अभिनय देखि दंग रहथि । मोने-मोन सोचि रहल छलाह–

"ई दुनू कलाकार तँ गजब अछि । एकरसभक अभिनय एकदम मौलिक होइत अछि ।"

ओहिठाम बैसल आओर कलाकारसभ सेहो हिनका लोकनिक अभिनय देखि मंत्रमुग्ध रहथि । रहि-रहि कए आपसमे चर्चा करथि ।

"कमालकेँ जोड़ी अछि ।"-एकटा कलाकार बाजल ।

"सत्ते कहैत छी । लगैत छैक जेना एकरा दुनूक जन्म-जन्मक संग होइक ।"-दोसर बाजल ।

"जेहने देखबामे सुन्दर अछि तेहने दुनूक बाजब मिठ्ठ छैक ।"-तेसर बाजल ।

आरती विद्यापतिक वियोग गीत 'माधव तूँ जनि जाह विदेसे....' गाबि रहल छलीह । सभगोटे मंत्रमुग्ध सुनि रहल छलाह। सभकेँ लगैत जेना आरतीक स्वरमे जादू अछि । ओही समयमे नाटकक नायक सौरभ आरतीक सौंदर्य देखि बौरा गेलाह। ओ इएह-ले ,ओएह- ले नायिकाकेँ घीचने बाहर चलि गेलाह । संयोग एहन भेलैक जे ओही समयमे बिजली चलि गेलैक । चारूकात अन्हार गुप्प । ओहिठाम बैसल कलाकारसभक मोनमे लाबा फुटि रहल छल । तरह-तरहक काना- फुसी होबए लागल । रिहर्सल बंद भए गेल। ई सभ देखि नाटकक निदेशक छगुन्तामे रहथि । "सौरभसँ एहन उमीद नहि छल ।"-ओ मोने -मोन सोचथि ।

थोड़बे कालक बाद बिजली आबि गेल । ई दुनूगोटे सेहो रिहर्सल घरमे वापस आबि गेलाह । निदेशकक तामस देखि दुनूगोटे सिटपिटाएल रहथि । नाटकक समय लगीच रहैक तैं माहौलकेँ सम्हारब जरूरी रहैक । ओ दुनूगोटेकेँ आगासँ एहिसभसँ बँचबाक हेतु चेतौनी दैत कहलथि-
"एहि तरहक घटनासभसँ अहाँसभक नाटक नाटके रहि जाएत । रच्छ भेल जे ई सभ रिहर्सले कालमे भेल ।

ओहि समयमे उत्तेजनासँ लाल भेल आरतीक मुँह देखैत बनैत छल । हुनकर सौंदर्य लोकसभकेँ सम्मोहित कए रहल छल । कैकटा कलकारसभ उचकि-उचकि कए एक बेर आरती केँ तँ एकबेर सौरभकेँ देखथि आ मोने-मोन कहथि-'चाबस सौरभ! चाबस! "

२

सौरभ आ आरती तकर बाद कैकटा नाटकमे संगे-संग पार्ट खेलाथि । जतेक स्वभाविकता हुनकासभक नाटकमे रहैत छलनि सएह बहुत किछु कहि जाइत छल । नाटकक आनंदक संगे-संग कैकटा गंभीर दर्शक एहि प्रेम प्रसंगसँ सेहो वाकिफ छलाह । कैक बेर सौरभ आरतीक बाँहि तेना ने झिकथि जे दर्शकक सभ देखिते रहि जाइत छलाह। कैकगोटे नहु-नहु बजितथि-ओह! ओह! कैकगोटे फुसफुसाइत -" हीरो बहुत चलाक अछि । नाटक करिते-करिते ई अपनो सुतारमे लागल अछि । कारण जे रहल होइक मुदा सौरभक नाटकमे लोकक करमान लागि जाइत छल । दर्शक कहुना

कए आगूबला सीटपर बैसए चाहथि । मुदा से कोना होइतेक? ककरो-ने-ककरो पाछु हेबेक रहैक ।

मुदा ओहि राति तँ हद भए गेलैक । कनी देरीसँ नाटक शुरु भेलैक । पेट्रोमैक्स जरबे नहि करैक। कहुना कए दोसर इंतजाम कएल गेल । ओही चक्करमे डेड़घंटा देरीसँ नाटक शुरु भेल। मुदा केओ वापस नहि गेल । अन्हारोमे सभ बैसले रहि गेल। आखिर लाइट जरल । चारूकात इजोत भेल । नाटक शुरु भेल । दर्शक लोकनिक प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

आरती आ सौरभ ओहिदिनक नाटकमे कमाल कए गेलाह। दर्शकसभ रहि-रहि कए थपड़ी पारि रहल छलाह । सभक ध्यान हिनकेसभपर लागल रहल । नाटकक सफलतासँ प्रसन्न भए स्थानीय जिलाधीश हिनका दुनूगोटेकेँ पुरस्कार देबाक घोषणा केलथि । मंचेपर तमका पहिरेबाक हेतु ओ आगू बढ़लाह । माइकपर बेरि-बेरि आरती आ सौरभकेँ मंचपर अएबाक आग्रह कएल गेल मुदा हिनकरसभक कोनो अता-पता नहि छल। दर्शकसभ से उताहुल छलाह । मुदा किछु बुझेबे नहि करनि जे बात की अछि? लोककेँ जाहि बस्तुक प्रतीक्षा छलैक से नहि भेटैक । मंचपर सौरभ आ आरती नदारद छल ।

"की भेल? की भेल? दुनू कहाँ छथि?
नाटक मंडलीमे फुसुर-फुसुर होबए लागल। दर्शकसभ से अपसियाँत भए गेलाह। अंततोगत्वा,मंचसँ घोषणा कएल गेल-
"किछु अपरिहार्य कारणसँ पुरस्कार वितरणक कार्यक्रम अखन नहि भए पाबि रहल अछि । अहाँ लोकनिक सहयोग आ उत्साहवर्धनक हेतु नाटक मंडली बहुत कृतज्ञ अछि । आशा अछि जे अपने लोकनिक सहयोग एहिना बनल रहत । "

लोकसभकेँ बहुत निराशा भेलैक । मुदा उपाय की रहैक?सभ अछताइत-पछताइत बिदा भेल । मुदा ई दुनूगोटे गेलाह कतए? नाटक मंडलीक निदेशक मोनमे बेर-बेर इएह बात घुमि रहल छल।

सौरभ आ आरतीक पारस्परिक आकर्षण तेना ने गहराइत गेल जे कालक्रमे नाटक खेलाएब तँ एकटा बहाना मात्र रहि गेल छल । ओ सभ दिन राति एहि प्रत्याशामे रहैत छलाह जे अगिला नाटक कहिआ आ कतए होएत? लोक की जाने गेलैक जे भीतरे-भीतर मामिला एतेक गहींर भए गेल अछि । मुदा जखन ओहि राति दुनूगोटे अन्हारेमे रंगमंचपर सँ कतहु बिला गेलाह तखन तँ ई चर्चाक विषय हेबेक रहैक, से भेलैक ।

पानि-बुन्नीक समय रहैक । दुनू गोटे रंगमंचपरसँ अपन-अपन झोरासंगे लेने आगा बढ़ि रहल छलाह। कतेको काल धरि सड़कपर काते-काते चलैत रहल । एहन तँ कहिओ ने होइत छलैक। एकहुटा रिक्साबला कतहु ने देखाइक । एना कतेक काल धरि चलैत रहब? जँ केओ चिन्हल आदमी देखि लेलकैक तखन की होएत?

पैरे चलैत-चलैत दुनूगोटे पटना टीसन पहुँचि गेलाह । संयोगसँ प्रयाग जाएबला ट्रेन प्लेटफार्म संख्या एकपर ठाढ़ रहैक । ट्रेन खुजबाक समय भए गेल रहैक । ओ सीटी पर सीटी मारि रहल छल मुदा खुजि नहि रहल छल । कोनो बड़का नेताकेँ सेहो ओही ट्रेनसँ जेबाक रहैक । तेँ ट्रेनकेँ रोकल जा रहल छलैक । सौरभ एकर फएदा उठबैत टिकटक जोगार कए लेलाह । दुनूगोटे जेना-तेना स्लीपर किलासमे पैसि गेलाह । अंदर जा कए देखैत छथि जे दूटा मुस्टंड हिनकर सभक शायिकापर जमल छथि । कतबो इसारा

केलखिन ओसभ टस सँ मस नहि भेल । कनीकालक बाद ट्रेन सीटी मारलक आ आगा घुसकए लागल । दुनूगोटे ठामहि ठाढ़ । ओहि मुस्टंडसभकेँ एतबो विचार नहि भेलैक जे जकर आरक्षण छैक तकरा कम सँ कम बैसबोक जगह दिऐक । करीब आधा घंटाक बाद टीटी आएल । बेस नमगर-पोरगर , कारी घनगर -तलवार कट मोंछ । हम किछु कहितिऐक ताहिसँ पहिने ओएह गरजए लागल-
"बिना टिकटकेँ स्लीपर बोगीमे चढ़बाक साहस केना भेलह?"
"हमरा टिकटो अछि आ एही बोगीमे दूटा शायिकाक आरक्षण सेहो। हम कैक बेर हिनका लोकनिकेँ कहलिअनि जे शायिका खाली करथि मुदा सुनिए नहि रहल छथि ।"
सौरभकेँ भेलनि जे ओ हुनकासभक कष्ट देखि हस्तक्षेप करताह आ ओ सभ अपन शायिकापर जा सकताह । मुदा भेल उल्टे । ओहो मुस्टंडसभक पक्ष लैत कहए लागल-
"पुलिसक आदमी छैक से नहि देखि रहल छह । ई सभ काजपर जा रहल छथि । तूँ सभ कतहु आओर बैसि जाह ।"

सौरभ टिकट लेने घुमैत रहि गेलाह मुदा किछु नहि भेल । दूपहर रातिमे ओ मुस्टंडसभ उतरि गेल । संभवतः मुगलसराय आबि गेल रहैक । तखन जा कए ओसभ अपन शायिकापर जा सकलाह । शायिकापर पहुँचि तँ गेलाह मुदा दुनूगोटेमे सँ ककरो रातिभर निन्न नहि भेलनि । कखनो सौरभ तँ कखनो आरती उचकि-उचकि कए एक-दोसरकेँ देखबाक प्रयास करैत रहलाह । दुनूगोटे रातिभरि टकटकी लगओने रहि गेलाह । भोरे ट्रेन प्रयागराज पहुँचि गेल ।

३

प्रयागराज पहुँचि ओ दुनूगोटे टीसनसँ लगीचेमे सीभील लाइन्समे एकटा होटल लेलनि । होटलमे कनी काल विश्राम कए संगम स्नान करबाक हेतु पहुँचलाह । संगमपर परबासभ यत्र-तत्र पसरल छल ,रहि-रहि कए झुंड बना कए उड़ि जाइत छल । आकाससँ भगवान भास्करसँ निकलैत रश्मिपुंज संगमक लग-पासक क्षेत्रकेँ ज्योतिर्मय केने छल । घाटपर सावधानक मुद्रामे बैसल नाविकसभ तीर्थयात्री लोकनिक स्वागत हेतु तत्पर छलाह । संगमधरि पहुँचि गेल यात्री लोकनिकेँ पण्डासभ नाना प्रकारक व्योंत लगाकए अधिकसँ अधिक टाका घिचबाक फिराकमे व्यस्त छलाह ।

दुनूगोटे नाओपर बैसल गंगा-जमुनाक संगमक विहंगम दृश्य देखि अतिशय आनंदित रहथि । बड़ीकाल धरि आरती सौरभकेँ आ सौरभ आरतीकेँ देखैत रहि गेलाह ,नाओपर बैसल-बैसल संगम स्नान करबाक हेतु अबैत -जाइत जोड़ासभकेँ देखैत रहलाह । नाविक नाओ खेपैत रहल । मुदा सौरभ अपने दुनिआमे रमल रहथि ।

संगममे नाओपर बैसल आरती आ सौरभक चित्र पानेमे उल्टा लटकल देखाइत छल । सौरभ बहुत ध्यानसँ ओहि चित्रकेँ देखि रहल छलाह कि आरती भभाकए हँसि देलीह ।

"की भेलैक?"

"हेतैक की? एतेक ध्यानसँ कथी देखि रहल छलिहुँ?"
सौरभ लजा गेलाह ,जेना सेन्ह कटैत चोर पकड़ा गेल होइक ।
कनीकालक बाद संगममे स्नान कए भीजल -तीतल ओ सभ वापस नाओसँ उतरि रहल छलाह । घंटाभरिक बाद ई यात्राक अंत होबए जा रहल छल । तखने अचानक आरती कहैत छथिः

"की विचार?"-आरती पुछलखिन ।

"नहि बुझलिऐक?"-सौरभ बजलाह ।

"एतेक पवित्र स्थान छैक । किएक ने हमसभ बिआहक संकल्प एतहि कए कइए ली ।"

" बाबूकें गाम चिठ्ठी लिखने छिअनि तकर किछु उत्तर नहि आएल ।"

“अएबो नहि करत । एकहि संगे मीठ आ तीत नहि भए सकैत अछि । जँ साहस अछि तँ आगा बढ़ू नहि तँ एहि बातकें बिसरि जाउ । हमहु बूझब जे ई सभ एकटा दुःस्वप्न छल ।"

"की बात करैत छी? जे अहाँ कहबै सएह हेतैक । हम तँ मात्र एतबे कही जे बाबूक आशीर्वाद लए आगा बढ़ितहुँ तँ बेसी नीक ।"

"आशीर्वाद कोनो भागल जाइत छैक? हमसभ एकर बाद चलब गाम । ओतहि बाँचल-खुचल काज भए जेतैक ।"

दुनूगोटे आपसमे गप्प करिते रहथि कि सौरभक ग्रामीण चंद्रकान्त सेहो संगममे स्नान करबाक हेतु ओतए अएलाह। हिनका लोकनिकें अंतरंग गप्प करैत देखि चंद्रकान्त दुबिधामे पड़ि गेलाह। एक मोन होनि जे अन्ठा कए बाहर चलि जाइ ।

मुदा मोन नहि मानि रहल छलनि कारण हुनका गामसँ बहुत जरूरी सूचना भेटल छलनि । आरती आ सौरभकें देखि हुनका

अनुमान भए गेलनि जे हिनकासभकेँ से सभ नहि बूझल छनि ।
“यद्यपि ई समय तेहन सूचना देबाक हेतु उपयुक्त नहि अछि मुदा नहिओ कहब ठीक नहि होएत।"-से सभ सोच विचारि कए ओ आबाज देलखिन-

"सौरभ! सौरभ !”

सौरभ अपन नाम सुनितहि पाछा घुमलाह तँ चंद्रकान्तकेँ देखैत छथि ।

" भाइ! की समाचार?"

"समाचार तँ बहुत दुखद अछि ।"

"की?"

"आइ भोरे गामसँ फोन आएल छल ।"

"की बात से फरिछा कए कहू ने ।"

"अहाँक बाबूजी नहि रहलाह ।"

"ऐँ! ई की कहि रहल छी?"

" संयोगेसँ अपनेसभ एतए भेटि गेलहुँ। हम दुविधामे रही जे अखन ई बात कही की नहि कही । मुदा नहि रहल गेल ।"

देखिते-दखिते माहौल एकदम बदलि गेल । चंद्रकान्त अपना भरि बहुत सम्हारबाक प्रयास केलाह मुदा सौरभक अश्रुप्रवाह रुकबाक नामे नहि लिअए ।"

आरती सेहो दुखी भए गेलथि । ओहिठामसँ ओ सभ चोट्टे टीसन बिदा भेलाह । चंद्रकान्त संगे रहथिन। पटना धरिक टिकटक ओरिआन ओएह कए देलखिन । संयोगसँ पटनाक ट्रेन आबहि बला छल । थोड़बे कालमे पटना जाएबला ट्रेन टीसनपर लागल छल । ओ सभ जेना-तेना ट्रेनमे पैसि गेलाह । जाबे ट्रेन खुजल

नहि चंद्रकान्त ओतहि हुनका सभकेँ बौसैत रहथि । आखिर ट्रेन खुजल। तकरबादे चंद्रकान्त वापस भेलाह ।

४

सौरभक पिता कतेक उमीदसँ पढ़ाइक हेतु हुनका पटना पठओलाह । कहि नहि ओ केना-केना मासे-मास हुनका हेतु टाकाक ओरिआन करैत रहलाह । एतेक कष्टोक बादो मोनमे आशा छलनि जे थोड़बे दिनक बात छैक । जहाँ सौरभकेँ नौकरी लगलनि तँ सभ कष्ट बिला जेतनि । खूब धनिक घरमे बेटाक बिआह करताह। तेहन लोककेँ किछु कहबाक थोड़े पड़ैत छैक । ओ सभ तँ टाका पैसा फेकबाक कोनो गर तकैत रहैत अछि । तखन देखि लिहथि गामक लोकसभ । अखन जतेक कुचेष्टा करबाक होनि से कए लेथु ।” ओहि दिन हर्षित सएहसभ सोचैत रहथि की एकटा रजिष्ट्री चिठ्ठी आएल । डाकपीन हुनकर बालसखा छलखिन ।
“आउ! आउ! "
" डाकपीन बाबू हँसैत चिठ्ठी दैत छथि ।”- हर्षित डाकपीन बाबूकेँ इसारासँ बैसबाक हेतु कहैत छथि ।
"किछु गोटेक मनीआर्डर आएल छैक, से देने अबैत छी ।"-से कहि डाकपीन बाबू आगा बढ़ि गेलाह । मनीआर्डरक नाम सुनि जेना हुनकर मोनमे बिजलौका चमकलनि । ओहो किछुए दिनक बाद डाकपीन बाबू हमरो एहिना मनीआर्डर आनि कए देताह, देबे करताह । डाकबाबू अपन लोक छथि । मनीआर्डर अबितहि ओ कतहु आनठाम जाइए नहि सकैत छथि ।

सौरभक पिता हर्षित इतमिनानसँ दनान सँ सहटि कए ओसारापर आबि गेलाह जाहिसँ चैनसँ चिठ्ठी पढ़ताह।
"पूज्य बाबूजी,
सादर प्रणाम !

एमहर हम बीए परीक्षा भए गेलाक बाद खालिए छलहुँ । सोचलहुँ जे कनी-मनी घुमि फिरि ली । फेर नौकरी भए गेलाक बाद एहन समय कतए भेटत? तकर बाद तँ काजे-काज । एक्कहु दिनक छुट्टीक हेतु बाट ताकू । तेँ हम एकटासंगीक संगे प्रयागराज घुमए चलि आएल छी । हमरा भेल जे केओ आन जे किछु कहत तँ अनेरे चिंता होएत । तेँ सही बात अपनहि कहि रहल छी । हमरसंगे छथि आरती जिनकासँ हम बिआह करबाक हेतु मोन बना लेने छी । ओहो ताहि हेतु तैयार छथि । कोनो नीक दिन तका कए राखब । आगाक कार्यक्रम अहाँक पत्रोत्तर भेटलाक बादे तय होएत । हम ताबे पटना वापस आबि गेल रहब । हमर सभक बीएक परिणाम सेहो ताबे निकलि गेल रहत । अहाँक मोनमे होएत जे आरती के छथि?हुनकर परिवार केहन छनि? तरह-तरहक जिज्ञासा मोनमे हेबे करत, हेबोक चाही । मुदा हम आश्वस्त छी जे हमर जीवनक ई सभसँ सही निर्णय अछि।"

अहाँक आशीर्वादक प्रतीक्षामे ,
अहाँक पुत्र,
सौरभ

चिठ्ठी पढ़ितहि हर्षित देबालमे औंगठि गेलाह । दुनू आँखिसँ नोर ढबर-ढबर खसि रहल छलनि। किछु बाजए चाहथि,ककरो लगमे बजाबए चाहथि मुदा मुँहसँ बकार निकलबे

नहि करनि । चिठ्ठी पढ़लाक बाद ओ ओकरा कैक बेर उल्टा-पुल्टा कए देखलथि । मोनमे होनि-

"साइत ई कोनो धूर्तक काज थिक जे सौरभक नामे हमरा तंग करबाक हेतु चिठ्ठी लिखि देलक अछि । मुदा अक्षर तँ अनमन सौरभेक लगैत अछि । तकर कोन ठेकान? आइ-काल्हि एकसँ एक घटना होइत रहैत अछि । कहि नहि सौरभ कतए छथि? कोन हालमे छथि? कहीं हमर कोनो दुश्मन हुनकर अपहरण तँ नहि कए लेलक? आइ-काल्हि ई एकटा धंधा भए गेल छैक । जे होउ मुदा सौरभ एहन भइए नहि सकैत छथि । हुनका हमरासँ बहुत लगाव छनि । ओ एहन सोचिओ नहि सकैत छथि ।"- एवम् प्रकारेण हर्षित तरह-तरहसँ अपनेमे सबाल-जबाब करए लगलाह ।

एहि अंतरद्वंदसँ की परिणाम निकलैत ?एक तरफ छल चिठ्ठीमे लिखल सद्यः सत्य समाचार आ दोसर दिस मोनक भ्रम। घर भम्म पड़ि रहल छल । असगगर हर्षित समय काटि रहल छलाह। सभ कष्टक अछैत मोनमे एकटा आश छलनि जे आइ ने काल्हि हुनकर दिन फिरतनि । कोना ने फिरतनि? ओ ककर अधलाह केलखिन ? ककरो नहि? सभदिन सभक हिते सोचलथि। मुदा ई कलियुग छैक । किछु नहि कहल जा सकैत अछि । कोनो जरूरी नहि थिक जे नीक करबै तँ नीके होएत ।"

ऐहि दुविधासभमे छलाह कि अचानक छातीमे दर्द उटलनि । ओतए के छल जकरा हाक दितथि?दहिना हाथमे चिठ्ठी लेनहि टगि गेलाह से टगले रहि गेलाह । हर्षितक घर कातमे छलनि। तेँ रातिभरि ककरो किछु पता नहि चललैक । भोरे अन्हरोखे महिषबारसभ जहन बार निकलल तँ ओकरासभकेँ गन्ह लगलैक। ओ सभ अकचकाएल,जे आखिर ई केमहरसँ आबि रहल

अछि? ओ सभ आपसमे गप्प करिते छल कि ओही गुटमेसँ एकटा चिकरलैक-

"देखैत नहि छहक ओसारापर की भेल छैक?"

"की छैक से बाजि ने होइ छनि जे बुझऔअलि बुझा रहल छथि? - दोसर चरबाह बाजल ।

"भाइ! हमरा तँ गड़बड़ लक्षण लागि रहल अछि । लगैत अछि हर्षित काका खतम भए गेलाह । ओमहरेसँ गन्हो आबि रहल छैक।"-तेसर बाजल ।

सही कहि रहल छह भाइ! आन दिन तँ एहिबेरमे हर्षित काका पराती गबैत रहैत छलाह ।"-चारिम चरबाह बाजल। चिंताक बात तँ छलैहे । चारूगोटे आगू बढ़ल ।

“हर्षित काका! हर्षित काका!”- कतेको बेर चिकरैत गेल ।

कोनो जबाब नहि भैटलैक । एहिमे सँ एकगोटे हुनका हिलओलक। ओ ठामहि धराम दए खसलाह । चरबाह सभकेँ नहि रहल गेलैक। ओ सभ चिकरए लागल -

"दौरैत जाउ गौंवासभ! जुलुम भए गेल । हर्षित काका नहि रहलाह।" देखिते-देखिते सौंसे गामक लोक ओहिठाम करमान लागि गेल ।

५

गाम पहुँचितहि लोकसभ सौरभकेँ धेरि लेलकिन । सभकेँ किछु-ने-किछु पुछबाक रहैक ,किछु-ने-किछु कहबाक रहैक । एमहर असगर सौरभ आ ओमहर सौंसे गाम । ककर बात सुनितथि आ ककर-ककरा जबाब दितथि। जेना-तेना अपन घर लग

अएलाह। ओहिठाम निःसहाय पड़ल अपन पिताक लास देखि ओ ठोह पाड़ि कए कानए लगलाह ।

"बाबू! औ बाबू !"

एना किएक रुसि गेलहुँ औ बाबू! हमरासँ की गलती भेल औ बाबू!"

सौरभक ई स्थिति देखि सौंसे गामक लोक दुखी छलाह। बुझेबे नहि करनि जे हुनका कोना सम्हारल जाए? बेराबेरी सभ अपन-अपन बात कहि देलनि । मुदा सौरभक मोन शांते नहि होनि। असलमे हुनका मोनमे अपराधबोध तँ रहबे करनि । हुनका एहि बातक अंदाज भए गेल रहनि जे ने ओ चिठ्ठी लिखतथि ,ने हुनकर पिताक ई हाल होइतनि । मुदा आब सोचिए कए की होएत? जे हेबाक छल से भए गेल । गौंवासभकेँ ओ की कहथिन ,कुन मुँहे कहथिन ?सभ तँ इएह बुझए जे पिताक मृत्युक हुनका हार्दिक कष्ट छनि तेँ एना कए रहल छथि । बात ई सहिओ रहैक मुदा ई बात केओ केना अखिआसत जे हुनकर मूल कष्टक कारण हुनकर अपने व्यवहार छलनि । खैर! जखन बड़ीकाल धरि सौरभ बेसुम्हारे रहि गेलाह तँ लोकसभ हुनकर हाथमे सुनगैत गोरहाकेँ पकड़ा देलक । आगा-आगा सौरभ पाछा-पाछा समाजक लोक चलि पड़ल । सभ एकस्वरसँ बजैत रहल-"राम नाम सत्य अछि!"

तेरह दिनमे पिताक श्राद्ध संपन्न भेल । तकर बाद सौरभकेँ गाम काटए लगलनि । चौदहम दिन अहल भोरे ओ गामसँ पटना बिदा भए गेलाह । पटना पहुँचितहि हुनका परीक्षाक जानकारी भेटलनि । चारिए दिनक बाद बीएक परीक्षा शुरु भेलैक । सौरभकेँ कनीको पास हेबाक उमीद नहि रहनि मुदा जखन परिणाम आएल तँ हुनकर नाम पास भेल विद्यार्थीसभमे सामिल छल , बेसक हुनका तृतिय श्रेणी भेलनि। मुदा ओ फेल हेबासँ बचि गेलाह । ओहि

समयमे बीए पास करब मामुली बात नहि रहैक । परीक्षा पास करिते हुनका पटनेमे तदर्थ आधारपर अध्यापकक नौकरी भेटि गेलनि । एहि बातसँ ओ बेसी प्रसन्न रहथि जे पटनामे रहलासँ नौकरीक संगे हुनकर नाट्यमंचक काज सेहो चलैत रहत ।

सौरभकें पटनामे अध्यापकक नौकरी भेटि तँ गेलनि मुदा ओ चललनि नहि । नौकरी अस्थायी छल । दूसाल नीकसँ काज केलाक बाद स्थायी कए जा सकैत छल । मुदा सौरभक ध्यान नाटकमे बेसी आ नौकरीमे कम रहनि । संयोग एहन भेलैक जे एकदिन शिक्षा अधिकारीक निरीक्षणक दौरान ओ समस्तीपुर नाटक खेलाए गेल रहथि । शिक्षा अधिकारी बहुत तमसाएल आ हिनकर नौकरी खतम कए देलक । एहि बातसँ सौरभ बहुत दुखी भेलाह । मुदा जे हेबाक छल से भए गेल ।

६

सौरभक मोनमे पिताक असामयिक मृत्युक घटना सदरिकाल घुमैत रहैत छलनि । कतहु मोन नहि लगैत छलनि । यद्यपि हुनका नौकरी जल्दिए भए गेल रहनि मुदा ताहिसँ की? पेटे भरब सभकिछु नहि होइत छैक ,जँ मोन अशांत अछि तँ सभकिछु व्यर्थ लगैत रहैत छैक । सएह मनोदशा सौरभक रहनि । नाटकमे भाग लेनाइ सेहो बंद भए गेल रहनि । एहन परिस्थितिमे कोना नाटक करितथि जखन हुनकर जिनगी-ए नाटक बनि गेल छल ।

कहि नहि कोना दिन-राति बीतैत छल? तखन तँ समय छैक,बितिते रहैत अछि । जँ सूर्योदय भेलैक अछि तँ सूर्यास्तो हेबे करतैक ।

एक दिन साँझमे सौरभ पटना हनुमान मंदिर हनुमानजीक दर्शन करबाक हेतु गेल रहथि । मंगल दिन रहैक। मंदिरमे लोकक करमान लागल छल । ओ जेना-तेना मंदिरमे प्रवेश केलाह आ हनुमान चालीसा लए कोनमे बैसि पढ़ए लगलाह । तीन बेर संपूर्ण हनुमान चालीसाक पाठ कए लेलाह । चारिम बेर हनुमान चालीसाक पाठ शुरुए करएबला छलाह कि सामनेमे आरती एकटा संगीक संगे देखेलनि । हनुमान चालीसा पढ़ब रोकि सौरभ आरती दिस बढ़लाह । ताबे आरती हनुमानजीकेँ गोहराबएमे लागि गेल रहथि । सौरभ ठामहि रुकि गेलाह। आरती हनुमानजीकेँ प्रणाम कए आगा बढ़ैत छथि कि हुनको ध्यान सौरभपर पड़लनि । कहल नहि जा सकैत अछि जे ओ कतेक खुश भेलीह । कतेको दिनसँ सौरभक किछु समाचार नहि भेटि रहल छलनि । तेँ हनुमानजीकेँ गोहराबए आएल छलीह । कबुला-पाती सेहो केने छलीह-"हे हनुमानजी! जँ हमरा सौरभक समाचार भेटि जाएत तँ हम सवाकिलो लड्डू चढ़ाएब।”

सौरभकेँ देखितहि आरती कहैत छथि-

"अहाँ एतहि रहू । हम प्रसाद किनने अबैत छी । हनुमानजीकेँ कबुला अछि ।"

"हमहु संगे चलैत छी । एहिठाम असगरे की करब?"

"ठीक छैक ।"

दुनूगोटे सवाकिलो लड्डू कीनलाह । सौरभ टाका देबए लगलखिन। मुदा आरती मना कए देलखिन ।

" से किएक? हमही दाम दए देबैक तँ की हर्जा?"-सौरभ बजलाह ।

"बात हर्जाक नहि छैक । कबुला केने छी ने , तेँ हमही दाम देबैक ।"

प्रसाद लए दुनूगोटे फेर मंदिरमे अबैत छथि । पुजारीजी प्रसाद चड़ाए आशीर्वाद दैत छथिन । प्रसाद लए दुनूगोटे मंदिरसँ बिदा होइत छथि ।

जाइत-जाइत आरती कहैत छथि-

"काल्हि साँझमे नाटक छैक, चलब?"

"कतए?"

"विश्वविद्यालयमे ।"

"अहाँ छी ओहिमे?"

आरती स्वीकारोक्तिमे मुड़ी हिला दलखिन ।

"तखन तँ अवश्य आएब ।”

७

आरतीकसंगे एतेक घनिष्टताक बाबजूद ओकरा बारेमे सौरभकेँ एतबे बुझल रहनि जे ओ हुनके किलासमे पढ़ैत छथि,हुनका सौरभे जकाँ नाटक बहुत प्रिय छनि । ताहिक्रममे ओ सभ एक-दोसरक समीप अबैत गेलाह आ आब एक-दोसरक बिना व्याकुल भए उठैत छथि । ओ कोनगामक छथि. पारिवारिक पृष्ठभूमि की छनि,से सभ किछु नहि बूझल छनि । ओ पटनामे कतए आ ककरासंगे रहैत छथि सेहो नहि बूझल छनि । हद भए

गेल । जखन एहनो जरूरी बातसभ नहि बुझल छनि तखन ओ कोन हिसाबे अंतरंग मित्र कहल जा सकैत छथि ? मुदा ई बात हमरा-अहाँकेँ बुझबाक चाही जे ई दुनिआ गोल छैक,रहस्यसँ भरल छैक । तँ ककरो बारेमे के की जनैत अछि तकर कोनो स्पष्ट मापदंड नहि निर्धारित कएल जा सकैत अछि। सभक स्वभाव,परिस्थिति भिन्न-भिन्न छैक, रूचि भिन्न छैक । जे छैक, से छैक मुदा आजुक समयमे आरती सन प्रिय सौरभक हेतु केओ नहि छनि । ओकरे बारे मे सोचैत उठैत छथि आ ओकरे बारेमे सोचैत सुतैत छथि ।

आइ भोरे जखन सौरभक निन्न टुटलनि तँ तुरंत आरती ध्यानमे अएलखिन । बड़ीकाल धरि हुनके बारेमे सोचैत रहि गेलाह। कखन के चाह राखि गेलनि सेहो सुधि नहि रहलनि । राखल-राखल चाह सेरा गेल । मुदा ओ अपन दुनिआमे मग्न छलाह।

"आइ जौँ आरती भेटतीह तँ सभ बात खोइछा छोड़ा कए पुछबनि। आखिर ओ एना रहस्यात्मक कतेक दिन रहि सकतीह आ किएक? हमरा संगे एतेक अंतरंगताक की माने भेलैक जखन की हमरा हुनकर कोनो बातक जानकारी अछिए नहि ?

"आ जँ किछु उलत-पुलट जानकारी भेटल जे हमरा लेल अरुचिकर भेल तखन की होएत?"-मोने-मोन सोचथि।

" जे हेतैक, मुदा अखनुका स्थितिसँ नीके हेतैक । ई कोनो बात भेलैक जे सालक-साल संगे छी आ छी एकदम अपरिचित?"

साँझमे पुर्वनियोजित कार्यक्रमक अनुसार विश्वविद्यालय रंगमंचपर बेस गहमा-गहमी छल । नाटकक उद्घाटन हेतु मंचकेँ बहुत नीकसँ सजाओल गेल छल । नाटक मुख्य महिलापात्र

छलीह-आरती । प्रायः बहुत दिनका बाद एहन भेल रहैक जे सौरभ बिना आरती नाटक कए रहल छलीह ।

नाटक शुरु हेबामे विलंब होइत देखि आरती मौका देखि सौरभ लग सरकि कए आबि गेलीह । दुनूगोटे औढ़ ताकि कए बड़ी काल फुसुर-फुसुर केलथि ।

नाटकक घंटी बाजि रहल छल । माइकसँ बेरि-बेरि घोषणा भए रहल छल -

"नाटक कलाकारसभ जे जतए छी से नेपत्थ्यमे पहुँचि जाउ । नाटक शीघ्र प्रारंभ होएत । बातकेँ बीचेमे छोड़ि आरती मंच दिस बढ़ि गेलीह ।

जाधरि नाटक चलैत रहल ताबे थपड़ी बजैत रहल । सौंसे नाटकमे आरती जेना सभकलाकार पर भारी पड़ि रहल छलीह । केओ-केओ बीचमे बाजि उठैक-"आइ ओहि युवक कलाकारकेँ नहि देखि रहल छिअनि ।”

“जौं आइ ओहो रहितथि तँ कमाल भए जैतैक। "-केओ दर्शक बाजल ।

"देखैत नहि छिऐक? ओ तँ मंचसँ सटले दर्शकक संगे बैसल छथि।" -दोसर दर्शक बाजल ।

"सही कहि रहल छी ।"- तेसर दर्शक बाजल ।

सौरभकेँ देखितहि दर्शकसभ आग्रह करए लागल-"सौरभ सन कलाकार बाहर किएक बैसल छथि? हमसभ हुनका मंचपर देखए चाहैत छी ।" चारूकातसँ अबैत एहने स्वरकेँ रोकनाइ नाटकमंडलीक हेतु कठिन भए गेल । हारिकए निदेशक अपने सामने अबैत छथि -

"प्रिय दर्शक लोकनि! अपनेसभक भावना हमसभ नीकसँ बूझि रहल छी मुदा मजबूर छी । सौरभकेँ हमसभ बहुत मनओलिअनि मुदा हुनकर मानसिक हालत एहन नहि छनि जे ओ नाटकमे भाग लए सकथि ।"
"की बात छैक? हमरासभ सँ जे बनि सकत से करब । एहन कलाकारकेँ असगर नहि छोड़ल जा सकैत अछि। "
हल्ला ततेक बढ़ि गेल जे अंततः निदेशकक अनुरोधपर सौरभ स्वयं मंचपर आबि कए सभबात साफ केलाह । कहलखिन-
"हमरा किछु समय दिअ। हम स्वयं अपनेसभक बीचमे हाजिर भए जाएब । "
"लोकसभ एकस्वरसँ कहलक-
" जगदंबा अहाँकेँ जलदी स्वस्थ करथि ।"
तकरबाद नाटक फेर शुरु भेल । दूघंटा कोना बितल से लोक नहि बूझलक । नाटक समाप्त होइतहि आरती सहटि कए सौरभ लग पहुँचि गेलीह ।
"हमरा तँ अहाँसँ इर्ष्या भए रहल अछि । आइ तँ अहाँ कमाल कए देलिऐक ।"-सौरभ बजलाह ।
" हमर सोलहो आना ध्यान अहाँपर रहैत छल, तथापि नाटक सुतरि गेल से संयोगे कहक चाही ।
बडी़काल धरि हिनका लोकनिक गप्प-सप्प एहिना चलैत रहल । ओहीक्रममे सौरभ बजलाह –
"आइ हम अहाँकेँ किछु पुछए चाहैत छी ।”-
"पुछू की पुछैत छी?" -आरती कहलखिन ।
"एतेक दिनसँ हम अहाँक संगे छी मुदा अखन धरि अहाँक परिचय नहि जनैत छी ।'

"से तँ हमहु अहाँक बारेमे किछु नहि जनैत छी । मनुक्ख स्वयं अपन परिचय होइत अछि । ओकर काज, व्यवहार आ योग्यतासँ पैघ परिचय की भए सकैत छैक? अहाँक जिज्ञासा सही अछि । मुदा ओहि प्रश्नक उत्तर तँ हमरो नहि बूझल अछि ।"- से कहि आरतीक आँखिसँ नोर झहरए लागल । सौरभ मोसकिलमे पड़ि गेलाह । हुनका आरतीक तर्कमे दम बुझेलनि मुदा ताहिसँ की? केहनो प्रतिभाशाली लोक होअए ओ आकाससँ तँ नहि टपकि जाएत?" ओकर कोनो नाम-गाम,कोनो ठेकान तँ हेबे करतैक ।
"बेकारे ई प्रश्न उठओलहुँ ।"-ओ मोनेमोन सोचथि । सौरभ कतबो प्रयास केलाह, तकर बाद आरती बिना किछु बजने ओहिठामसँ चलि गेलीह ।

सौरभ नहि सोचि सकल रहथि जे हुनकर ई जिज्ञासा आरतीकेँ एना आहत करतनि । “एहिमे कोन बात छलैक? ई तँ एकटा सामान्य जिज्ञास छल जकर समाधानक हेतु हम कतेको दिनसँ उत्सुक छलहुँ । सरिपहुँ कहल गेल अछि जे ई संसार रहस्यमय अछि,एकर एक-एक व्यक्ति रहस्यसँ भरल अछि । जकरा अहाँ बरखोसँ जनैत छी,अपन हेबाक दाबा करैत छी,भए सकैत अछि ओकरा बारेमे अहाँक जानकारी बहुत सीमित हो ।”-सौरभ मोने-मोन सोचथि ।

आरती नाटक समाप्त होइतहि चुप्पे चलि चलि गेल रहथि। नाटकक बाद कलाकारसभक हेतु जलखैकक ओरिआन छलैक। ततबे नहि, सभसँ नीक पाट खेलेबाक कारण हुनका हेतु पुरस्कारक घोषणा सेहो हेबाक छलैक । नाटकमंडलीक निदेशक हुनका सौंसे तकलथि मुदा ओ नहि भेटलथि । हारि कए हुनकर अनुपस्थितिएमे पुरस्कारक घोषणा कएल गेल । दर्शकसभ वाह!

वाह! करए लगलाह । लोकसभ क्रमश: अपन-अपन गंतव्य दिस बिदा भए गेल।

आरती आ सौरभक प्रेम अकस्मात शुरु भेल छल । संयोग रहैक जे दुनू नाटकक कलाकार छलाह जाहि माध्यमसँ हुनकासभक भेंट-घाँट होत रहलनि । ओ करवन प्रेममे बदलि गेल से अपनो नहि बुझि सकलखिन । क्रमश: हिनका लोकनिक प्रेम गहींर होइत गेल । एक-दोसरक बिना रहब मोसकिल लागए लागल। एहि तरहें ओ सभएक हिसाबे बेवश भए गेलथि । से सभ तँ ठीक रहैक मुदा जखन बिआह करबाक चर्च होबए लागल तखन एक-दोसरक पारिवारिक पृष्ठभूमिक जानकारीक जिज्ञासा सामने आएल । आरती ओतहि ओझरा गेलीह। सौरभ नहि सोचि सकल रहथि जे एहनो भए सकैत छैक जे ककरो ओकरा अपन परिवारोक जानकारी नहि होइक? अन्यथा भए सकैत अछि जे आरती कोनो कारणसँ एकरा नुका रहल होथि । मुदा तकर कोनो कारण हुनका नहि बुझाइनि । राजसी ठाठसँ गोवर्धन आ माधुरी हुनकर पालन करैत छलाह । परिवारमे किछु अपेक्षा भए सकैत तकर ओ सभ पूरा करैत छलाह । तें जखन एहि प्रश्नपर आरती गुम पड़ि गेलखिन तँ सौरभ बेस चिंतामे पड़ि गेलाह ।

"भए सकैत अछि जे हुनकर मोन बदलि गेन होनि । किंवा हुनकर परिवार कतहु आओर घटकैती कए रहल हो । किछु संभव भए सकैत अछि एहि कलियुगमे ।"-सौरभक मोनमे तरह-तरहक प्रश्न-प्रतिप्रश्न उठैत रहलनि । समाधानक कोनो रस्ता नहि फुराइनि। करवनो-करवनो हुनका अफसोच होनि जे ओ बेकारे एहि चक्करमे पड़लाह । जखन आरती हुनका पसिंद करैत छथि आ ओहो आरतीकेँ मानैत छथि तखन रहि की गेलैक? "-ओ मोने-मोन सोचैत

छलाह । मुदा कहबी छैक जे मुँहसँ बात आ तरकससँ तीर जँ निकलि गेल तँ वापस नहि भए सकैत अछि । जे भावी छल से भेल। आब ओहिपर सोचिए कए की होएत?

८

ओहि दिन नाटकसँ वापस भए आरती बिना खेने -पीने अपन कोठरीमे सुति रहलीह । गोवर्धन आ माधुरी बहुत रातिधरि आरतीक प्रतीक्षा करैत रहि गेलथि । हुनकासभकेँ ई नहि पता चललनि जे ओ तँ कखन ने आबि गेलीह आ बिना किछु खेने -पीने सुति रहलीह । बड़ीकालक बाद जखन आरतीक कोठरीमे इजोत भेलैक तँ ओसभ ओहि कोठरीक आगूमे आबि चुपचप ठाढ़ भए गेलाह । देखैत छथि जे आरती देबाल धेने ठाढ़ि छथि । हुनकर आँखिसँ नोर बहि रहल छनि । ओ अपनेमे ततेक बेसुध छथि जे हुनका लोकनि दिस देखितहुँ नहि छथि।
"की भेलैक एकरा? एना किएक कानि रहल अछि? किछु परेसानी भेलैक तँ हमरासभकेँ किएक नहि कहलक?"-तरह-तरहक बातसभ ओकरा हुनकासभक मोनमे आबि रहल छलनि । तथापि चुपचाप ओ सभ आरतीक बनैत-बिगरैत आकृतिकेँ देखैत रहि गेलाह ।
"ई ककर फोटो निहारि रहल अछि? कोनो युवक लागि रहल छैक? मुदा कहिओ ओकरा हमसभ देखने नहि छिऐक । लएह ,ओ तँ फोटोसँ जेना सबाल-जबाब कए रहल अछि । खने हँसैत अछि,खने कानए लगैत अछि। गजब दृश्य अछि ।"-गोवर्धन मोने-मोन सोचैत छथि ।"

“केबार खोलए किएक नहि कहैत छिऐक?"-माधुरी बजलथि ।
"ओकरा कोनो होश छैक जे किछु करत, जँ से रहितैक तँ हमरासभ दिस ओकर ध्यान नहि जइतैक? -गोवर्धन बजलाह ।

गोवर्धन आ माधुरी रातिभरि ओहिना ओसारापर ठाढ़ रहि गेलथि । आरती ओहिना अहुरिआ काटैत रहि गेलि। भोरे ओ उठि नहा-सोना कए कतहु बिदा होइत रहए। गोवर्धन ओकरा बाहर निकलैत देखि टोकलखिन-
"एतेक भोरे कतए जाइत छैं?"
"आरती किछु जबाब नहि देलक मुदा आगू नहि बढ़ि सकलि । ओतहि थमकि गेलि ।
"की बात छैक? काल्हिएसँ तूँ बहुत परेसान बुझा रहल छह? रातिओमे जगले देखलिऔक ?"
"किछु बात छैक ताहिसँ अहाँकेँ कोन मतलब?"
गोवर्धन आश्चर्यमे पड़ि गेलाह जे आखिर ई एना किएक कए रहल अछि । एना तँ कहिओ नहि करैत छलि । जरूर एकरा मोनमे कोनो बात गड़ि गेलैक अछि ।
"जँ घरक लोक नहि बुझतैक तँ समस्याक समाधान के करत? तोरा हमरा पर विश्वास करक चाही।"
"एहिमे अविश्वासक कोन बात भेलैक? हमहु मनुक्ख छी । कोनो बात हमरो नीक-बेजाए लागि सकैत अछि । ककरो मोन सदरिकाल एकहि रंग नहि रहि सकैत छैक । अहाँ से किएक नहि बुझैत छी?"
"हम सएह तँ बूझए चाहैत छी ।"
"हम कहिआसँ अपन माता-पिताक बारेमे, परिवारक बारेमे जानए चाहैत छी, मुदा अहाँ सभ टरका दैत छी ।"

'से बात सही अछि, मुदा जानिए कए की करबैं? दुखे हेतौक । फेर की हमसभ अहाँक परिवार नहि छी? की हमरा सभक लालन-पालनमे कोनो त्रुटि रहि गेल अछि?"

"अहाँ फेर बातकें गोल-मोल घुमा रहल छी । सभक अपन महत्व छैक । हम आब कोनो इसकूलिआ नेना नहि छी जे सही बात नहि जानि सकैत छी ।"

"ठीक छैक । तूँ कनी काल सुस्ता लएह, तकर बाद तोरासभ बात कहबह ।"

आरतीक मोन कने हल्लुक लगलैक ।

“जखन एतेक दिन तँ किछु काल आओर सही ।”

९

गोवर्धन आ माधुरी पटनाक चर्चित व्यक्ति छलाह । एहन बहुत कम होइत छैक जे सरस्वती आ लक्ष्मी एकहिठाम रमल होथि आ तखनहु ओतए सदबुद्धि आ संयमक प्रभाव बनल रहए । तेहने एकटा उदाहरण छल गोवर्धनक परिवार । पटनामे कतेको तरहक सामाजिक काजसभसँ ओ जुड़ल छलाह ।

गोवर्धन देखबामे हृष्ट-पुष्ट,गोर-नार,बेस रमनगर लोक छलाह । हुनका देखू तँ लागत जेना कोनो राजकुमार सामनेमे ठाढ़ अछि आ मधुरीक तँ गप्पे नहि होअए । उम्रक जेना हुनकापर असरे नहि अछि । जेहने देखबामे सुन्दर तेहने सरल,भावुक स्वभाव। जे केओ एकबेर हुनकासँ गप्प कए लैत से फेर कहिओ बिसरि नहि सकैत। केओ हुनकर दरबाजापरसँ भुखल वापस नहि होइत ।

नित्य तीन-चारिटा भीखमंगा हुनका ओहिठाम भोजन करबे करए। जन-बनिहारसभकेँ करवनो नहि लगैत जे कतहु आनठाम काज कए रहल अछि । ततेक आत्मीय भाव हुनकर रहैत छलनि । भगवान सभमानेमे हुनकर दहिन छलखिन । हृदयक उदार छलाहे।
ताहि बातकेँ सफल करैत छल हुनकर नित्य प्रतिक व्यवहार । गोवर्धन एहिमे कतहुसँ पाछा नहि छलाह।

भगवान ककरो पूर्ण नहि होअए दैत छथि । किछु-ने-किछु कमी राखिए दैत छथि । सएह एतहु छल । एकटा संतानक अभावमे दुनू व्यक्ति दिन-राति दुखी रहैत छलाह। ताहि बातसँ माधुरीक मोन कचोटैत रहल छल । कतेको तरहक कबुला-पाती करथि मुदा सुनबाइ नहि भेल । गोवर्धन कैक बेर माधुरीकेँ उदास देखि बुझेबाक प्रयास करथि। मुदा कहबी छैक जे गुंड़क मारि धोकरे जनैत अछि । जे स्त्री कोनो कारणसँ मातृत्वक सुखसँ वंचित रहि जाइत छथि हुनकर कष्टक अनुभव आओर के कए सकैत अछि?

गोवर्धन माधुरीक संगे कैक बेर बाबाधाम गेलाह । कामरि लए वसंतपंचमीक दिन सुल्तानपुरमे गंगाजल लए बाबाधाममे महादेवपर जल ढ़ारलाह । तथापि किछु नहि भेल । एहि दुखसँ माधुरीकेँ तरह-तरहक मानसिक आ शारीरिक परेसानी होबए लागल । हुनका हिस्टिरिआ जकाँ भए गेलनि । रहि-रहि कए अर्र-बर्र बाजए लागथि । लोकसभ कहैक जे भूत लगैत छनि । ओझा गुनी बजाओल गेलाह , झाड़-फूक भेल । मुदा किछु फाएदा नहि भेलनि । अपितु हालत खरापे होइत गेलनि । डाक्टर,बैदसभ थाकि गेलाह परंतु माधुरीक स्वास्थ्यमे सुधार नहि भेल । गोवर्धनकेँ कम कष्ट नहि रहनि । मोने-मोन ओहो परेसान रहैत छलाह,मुदा साहस

बनओने रहथि । लोककेँ अपन दुख कहनहि की होइतनि ? फेर ओ बाहर काजमे जाइत -अबैत रहैत छलाह जाहिसँ मोन बदलि जाइत छलनि।

माधुरीक स्वास्थ्यमे भए रहल निरंतर ह्लाससँ गोवर्धन बहुत चिंतित रहथि । कारण तँ ओ जनैत छलाह मुदा तकर समाधान हुनका वशमे नहि छल । एकबेर एहिना वसंतपंचमीमे जल ढारए बाबाधाम गेल रहथि । लौटतीमे दुनूगोटे पटना अएबाक बदला अपन पैतृक गाम दिस बिदा भए गेलाह ।

"पटनामे रहैत-रहैत मोन उबिआ गेल अछि । हमरा लोकनि थोड़ेदिन अपन गामे चली तँ की हर्जा?"-गोवर्धन पुछलखिन ।

"कोनो हर्जा नहि । ओ तँ अपनसभक पैतृक स्थान अछि, ओतए जेबेक चाही ।"

गाम जाइत काल कपिलेश्वरसँ कनीके फटकी कारक टाएर फाटि गेल । आब की होएत?-गोवर्धन बजालह । लगीचेमे एकटा टएर पंचर ठीक करबाक दोकान रहैक । ओ सभ कारकेँ ठेलिकए ओहिठाम अनलाह । मुदा मिस्त्री नहि आएल छल । ओहिठाम बैसल-बैसल ओ अगुता गेलाह। वाहनचालककेँ ओतहि छोड़ि दुनूगोटे लग-पास टहलए लगलाह । टहलैत-टहलैत कनीके आगा बढ़लाह बढ़ल हेताह कि एकटा सूचनापट्टपर देखेलनि। ओहिपर लिखल छल- भावनगर । ओहिठामसँ दस हाथ उत्तर दिस एकटा जनमौटी नेना कानि रहल छल । लग-पासमे केओ नहि छल ।

"किछु सुनि रहल छिऐक?"-गोवर्धन बजलाह ।

"ई तँ कोनो जनमौटी बच्चाक आबाज लागि रहल अछि ।-माधुरी कहलखिन ।

दुनूगोटे आगू बढ़ैत छथि । खेतक आरिपर एकटा जनमौटी बच्चा टुह-टुह लाल कपड़ामे राखल छल । ओ टांग-हाथ छिड़िआ-छिड़िआ कए कानि रहल छल ।
"लगैत अछि महादेव हमरा लोकनिक आराधना सुनि लेलथि ।"-गोवर्धन बजैत छथि ।
"सही कहलहुँ ।"-आनंदसँ माधुरीक आबाज नहि निकलि रहल छलनि । ओ यत्नपूर्वक ओहि बच्चाकेँ उठाबैत छथि । ओकर देह-हाथपर खसल खढ़सभकेँ झाड़ैत छथि । तकरबाद दुनूगोटे गाड़ीमे बैसि कपिलेश्वर महादेवक मंदिर पहुँचि जाइत छथि । ओहि समयमे महादेवक आरती भए रहल छलनि । तेँ ओहि नेनाक नाम आरती राखि देलनि । मंदिरमे महादेव लग भावविभोर भए माधुरी कहैत छथि-
"धन्य छी महादेव! अहाँ हमर दुख बुझलहुँ । अहाँक कृपासँ हमर जीवन आइ धन्य भए गेल ।" दुनूगोटे भरिमोन महादेवक पूजा केलनि । पंडासभकेँ यथेष्ट दान देलखिन ।
" नेना लए कए एमहर-ओमहर गेनाइ ठीक नहि होएत । आब एखन गाम जेबाक कार्यक्रमकेँ स्थगित कए देबाक चाही"-आरती बजलीह ।
"सही कहैत छी । अनेरे नेनाकेँ लोकसभक नजरि लागि सकैत अछि । गाममे तरह-तरहक बातसभ होइत रहैत अछि ।"
अस्तु,दुनूगोटे ओहि जनमौटी नेनासंगे पटना बिदा भए गेलाह ।

१०

ओएह बच्चा बढ़ि कए भेलैक आरती । गोवर्धन आ माधुरी संपूर्ण शक्तिसँ आरतीक पालन-पोषण केलथि। ओकरा नीक सँ नीक इसकूलमे नाम लिखओलनि । पढ़बा-लिखबाक अतिरिक्त ओकरा नाटकमे बहुत अभिरूचि छलैक ,ताहिमे ओ सभ पूर्ण सहयोग करैत रहलाह । एहि तरहें स्वछंद एवम् सुविधा संपन्न वातावरणमे आरतीक विकास भेलनि । सएह आरती आब पैघ भए गेल छथि ।

क्रमशः आरती आब कालेजक विद्यार्थी भए गेल छथि । कालेजेमे सौरभ सँ परिचय होइत छनि । सौरभ संग घनिष्टता दिन-प्रतिदिन बढ़िते जाइत छनि ,एहि हद धरि बढ़ि जाइत छनि जे आपसमे बिआह करबाक गप्प सेहो होबए लगैत छनि । स्वभाविक छैक जे अपन मित्र सौरभक प्रश्नक उत्तर देबाक हेतु ओ उत्सुक होइतथि। मुदा ओ प्रश्न एहन छल जकर उत्तर हुनका लग नहि छलनि ।

आरतीक पालन-पोषणमे गोवर्धन आ माधुरी कोनो कमी नहि रखलथि । तथापि हुनकर मोनमे एकटा शुन्यता छल जे गाहे-बगाहे हुनकर समस्त कृया-कलापकेँ प्रभावित केने रहैत छल। कहिओ तामसमे गोवर्धन किछु एहन बात बाजि देलखिन जे आरतीक मोनमे सभदिनक हेतु गड़ल रहि गेलनि । तहिएसँ ई प्रश्न हुनका मोनमे बेरि-बेरि उठि रहल छल-"जँ ईसभ हमर असली माता-पिता नहि छथि तँ छथि के?" असलमे गोवर्धन अपन जीवनक सत्य माधुरीकेँ सेहो नहि कहने रहथि,ने माधुरीकेँ कहिओ

कोनो शंका भेलनि ।आरती बेरि-बेरि सोचथि- हुनकर जन्मदाता हुनका किएक छोड़ि देने छथिन? ओ जीवितो छथि कि नहि ? "

ओहि राति आरतीक दुर्दशा देखि गोवर्धन आ माधुरी आपसमे निर्णय केलीह जे आरतीकेँ सभ बात कहि देथिन। जे हेतैक,से हेतैक ।मुदा तखनहु जँ हुनका शङ्का बनले रहि गेल तखन की होएत? से ओ सभ सभटा अवधारि लेलथि ।

प्रात भेने तीनूगोटे कारसँ बिदा भेलाह ।

" हमसभ तोहर जन्मस्थान चलि रहल छी ।"-गोवर्धनक मुँहे ई बात सुनि आरती बहुत प्रसन्न भेलीह ।

गोवर्धन,आ माधुरी आरतीक संगे कारसँ बिदा भेलाह । कार पारिवारिक वाहन चालक रमुआ चला रहल छल। कहक लेल रमुआ वाहन चालक छल मुदा ओ गोवर्धनक सचिव,सलाहकार आ पारिवारिक मित्रसँ कम नहि छल ।रमुआ देखबामे बेस गोर-नार छल ।ओ सदिखन सजल-धजल रहैत छल ।लगबे नहि करितए जे ओ कोनो गरीब परिवारक अछि ।फटकीसँ ओ अनमन गोवर्धन जकाँ लगैत छल ।कैक बेर जखन गोवर्धन परेसान भए जाइत छलाह तखन रमुआकेँ इसारा करितथिन आ रमुआ बुझि जाइत जे ओ की चाहैत छथि ।सामान्यतः एहन परिस्थितिमे ओ एकटा गुप्त स्थानमे चलि जाइत छलाह जकरा बारेमे ककरो किछु नहि बूझल रहैक,माधुरीकेँ सेहो नहि ।कमाल बात छैक ।एकरा एतेक गोपनीय किएक बनओने छथि से तँ गोबर्धने जानथि।मुदा वाहन चालककेँ एतबा बूझल रहैक जे आगू एकटा विशेष स्थान छैक,बस एतबे ।आगा ने ओ कहिओ पुछलकनि ,ने गोवर्धन कहिओ तकर चर्चा करब मुनासिब बुझलाह। रमुआक इएह विशेषता छलैक जे गोवर्धन ओकरापर एतेक विश्वास करैत छलाह।

कारपर बैसि गेलाक बाद गोवर्धन किछु बजलाह नहि । वाहन चालक प्रतीक्षामे रहए जे आब बजताह,ताब बजताह । लएह औ बाबू! ओ तँ से गुमकी धेलथि जे धेनहि रहि गेलाह । हुनकर मनःस्थिति माधुरी बुझैत रहथिन । ओएह कहलखिन-
"कपिलेश्वर स्थान चलह । रस्ता भरि आरती तरह-तरहसँ अपना मोनकेँ बुझबैत रहलीह ।
“पता नहि हुनकर माता-पिता केहन हेताह? जँ नीक लोक छथि तँ हमरा किएक छोड़ि देलथि ।”

कार दरभंगासँ आगू बढ़ल । ताबत गोवर्धन सेहो सामान्य भए गेल रहथि । हुनकर मोन खनहन देखि माधुरी पुछलखिन-
"हमसभ केमहर जेबैक?"
"जेमहर भगवान लए जेताह ।"
हुनकर एहि रहस्यात्मक उत्तरकेँ माधुरी नहि थाहि सकलीह ।
"जाबे वाहन चालककेँ किछु निजगुत कहबैक नहि ताबे ओ केना गाड़ी चलओताह?”
"हमसभ ठीके चलि रहल छी ।"

कार बेलामोरसँ आगा बढ़ल छल । किछुकाल ओहिना सरपट चलैत रहल । वाहन चालक इतमिनानसँ कार चला रहल छल । ओकरा गोवर्धनक स्वभाव नीकसँ बुझल रहैक । ओ जनैत छल जे जखन आवश्यक होएत गोवर्धन स्वतः इसारा करताह । भेवो कएल सएह । गोवर्धन एकाएक खखसि देलथि । रमुआ बुझि गेल जे गंतव्य आबि गेल । कार ठाढ़ भए गेल ।

“एहन चओरमे आबि कए किएक ठाढ़ भए गेलह?"- माधुरी पुछैत छथि ।

"उतरु ने । सभटा बात अहीं बुझि जेबेक तँ हमसभ की करबैक?"

ताहि बातपर सभ ठहाका पाड़लक । कनीकाल हेतु माहौल हल्लुक भए गेल। सभगोटे कारसँ बाहर निकललाह। वाहन चालक कारेपर रहि गेल । माधुरी आ आरती आश्चर्यमे छलीह जे आखिर ई भए की रहल अछि? गोवर्धन आगा बढ़लाह । ताबे ओ दुनूगोटे ठामहि रहथि । कहि नहि ओ की केलथि की नहि? धराक दए एकटा गेट खुजि गेल ।

माधुरी गेटक अंदर देखैत छथि ।

"ई तँ अद्भुत जगह अछि ।"

" जलदीसँ सभगोटे पैसि जाउ । थोड़बे कालमे ई स्वतः बंद भए जाएत ।"

हुनकर बात सुनि तीनूगोटे धराधर भावनगरमे पैसि जाइत छथि । तकर बाद ओ गेट बंद भए गेल ।

"देखलिऐक । जँ कनीको देरी होइत तँ देखिते रहि जैतहुँ।"-गोवर्धन बजलाह ।

११

मोन तँ भगवान सभकेँ देने छथिन । राजा,रंक,फकीरसभ मोने-मोन किछु सोचि सकैत छथि ,किछु भोगि सकैत छथि । जरूरी नहि थिक जे ओ बस्तु हुनका भेटिए जानि मुदा तेँ की ? सोचबोसँ गेलाह?कैक बेर अतृप्त इच्छा,आकंक्षा मोनमे गड़ल रहि जाइत छैक । कतेको प्रकारक इच्छा,आकांक्षा अवचेतन मोनमे

सैतल धएल रहैत छैक आ मौका पबितहि ओकरापर हाबी भए जाइत अछि । कहबी छैक जे नहि किछु तँ सोचबोसँ गेलहुँ? तेँ ने कैक बेर आन्हरक नाम नयनसुख आ नितांत मूर्खक नाम सरस्वती नंदन राखि देल जाइत छनि । आखिर हुनका लोकनिक माता-पिताक इच्छा-आकांक्षाक अभिव्यक्ति होएत कोना? कारण सभ माए-बाप अपन संतानक हेतु नीकसँ नीक मनोरथ राखैत अछि ।

मोनक संसार अद्भुत होइत छैक । एकहि क्षणमे ओ कतबो फटकी लोक लग पहुँचि सकैत अछि । जे से सोचि सकैत अछि , जाहि बस्तुकेँ लोक कहिओ नहि पाबि सकैत अछि,नहि पहुँचि सकैत अछि ,ओतए मोन पहुँचि जाइत अछि । जकरा बारेमे सोचू ओतहि पहुँचि जाइत अछि। एकहि रत्तीमे कलकत्ता,मुम्बइ,दिल्ली चलि जाइत अछि । कोनो टमटम,फटफटिआ ,रेल वा हवाइ जहाजक काज नहि । हम जएह सोचैत छी,सएह मोन हाजिर कए दैत अछि। एक हिसाबे मोन कामधेनु अछि जकरा लेल सभकिछु सुलभ अछि।

मनुक्खक जिनगीक सभटा ओज्झरक जड़ि लोकक मोनेमे रहैत अछि । ई बात सभ बुझैत अछि। कहब जे तखन लोक एहिसँ बँचि किएक नहि पबैत अछि?इएह छैक माया । मायाक शक्ति अपार होइत छैक। एक सँ एक ज्ञानी, पंडित एकर चपेटमे पड़ि जाइत छथि आ जिनगी भरि बकरी जकाँ मेमिआइत रहि जाइत छथि । मुदा मोनक एहि अनंत संसारक किछु विशेषतो अछि। लोक समस्त अलभ्य बस्तुकेँ मोनक आश्रय लए सामिप्यक सुखद अनुभूति कए सकैत अछि । मुदा एहि तरहे प्राप्त सुख क्षणिक होइत अछि । अंततोगत्वा, लोक अतृप्त रहि जाइत अछि। भावनगरक दुनिआ तेहने छल ।

ई बात कम आश्चर्यक नहि रहैक जे कपिलेश्वरसँ एतेक लगीच रहितहुँ भावनगरक जानकारी बहुत कम लोककेँ रहैक । असलमे बाहरसँ किछु देखेबो नहि करैक । मुदा भावनगरक आंतरिक रचना गजब छल । ओहिठामक लग-पासक गाममे चर्चा छल जे एकर निर्माण महादेव स्वयं करओने रहथि। कहि नहि एहिमे हुनकर उद्देश्य की रहनि? केओ-केओ इहो बजै छल जे शिवरातिक मेलामे भक्त लोकनिक निरंतर चलैत जलढ़रीसँ तंगभए महादेव लगीचेमे कतहु घसकि जाइत छलाह । सएह स्थान भावनगर भए गेल । ईहो लोककेँ नहि बूझल रहैक जे आखिर एतेक सुंदर स्थानक निर्माण कहिआ भेल? मुदा छलैक ओ चमत्कारिक स्थान । ओहिठाम जाइते लोक भावनाक दुनिआमे ओझरा जाइत छल । लोकसभ सभकिछु बिसरि अपना-आपमे रमि जाइत छल। जएह सोचू,सएह करू । कोनो रोक-टोक नहि । केओ मालिक नहि । जहिना महादेवक त्रिशूलपर हेबाक कारण काशी मुक्तिदायक कहल जाइत अछि तहिना छल भावनगर,जतए पहुँचतहि लोक सभ मानसिक स्वतंत्रताक कारण एकटा अपूर्व तृप्तिबोध होइत छल ।

भावनगर रहस्यसँ भरल छलैक । चारूकात दिनराति पहरा रहैत छलैक । भावनगरमे प्रवेशक हेतु गुप्त द्वार छलैक जकर कुंजी ककरा लग छल से केओ नहि जानैत छल । गेट खुजलाक किछुकालक बाद स्वयं बंद भए जाइत छल । भावनगरक निर्माण करओलाक बाद कहाँदनि महादेव ओकर गेट खुजबाक मंत्र भावनगरक शिवमंदिरक पुजारीकेँ देलखिन । हुनकापर केना-ने-केना कामदेव सबार भए गेलखिन । भावावेसमे ओ कामदेवकेँ ओ मंत्र बता देलखिन । कामदेवक तँ रागिनी बहुत पहिनहिसँ मित्र

छलखिन । कामदेव हुनका ई मंत्र बता देलखिन जाहिसँ हुनकर संपर्क अवाध रूपसँ रागिनीसँ बनल रहि जाए ।

१२

रागिनी चंद्रलोकक प्रसिद्ध राजनर्तकी छलीह । हुनकर सौंदर्य देखैत बनैत छल । ओ नृत्यकलामे माहिर छलीह । के-के ने हुनकर कार्यक्रममे अबैत छल । अबिते नहि छल ,एलाक बाद तेना सुधि-बुधि बिसरि जाइत छल जे घंटो ओतहि पड़ल रहि जाइत छल।

एकदिन एहिना नचैत-नचैत रागिनीक संतुलन गड़बड़ा गेलनि। ओ पृथ्वीलोकमे कपिलेश्वर स्थान लग भावनगरमे पिछड़ि कए खसलीह। ओतए अचानक जोरसँ धमाका भेल आ रागिनी भावनगरमे पहुँचि गेलीह । तहिआसँ रागिनी ओतहि रमल छथि। चंद्रलोकमे लोक बहुत दिन धरि परेसान रहल । रागिनीकेँ तकैत रहल । हुनका लोकनिकेँ नहि बुझाइन जे आखिर भेलैक की? रागिनी कतए चलि गेलीह?चंद्रलोकसँ माधुरीक पछोड़ करैत बहुत रास हुनकर प्रशंसकसभ भावनगर धरि अएबो केलाह मुदा ताबे भावनगरक फाटक बंद भए गेल छल । ओ सभ बाहरे रहि गेलाह।

रागिनीकेँ भावनगरमे अएलाक बाद हुनकर सुरक्षा एकटा जबरदस्त समस्या भए गेल । असलमे ओ तँ सभदिन स्वछंद रहए बाली लोक छलीह । चंद्रलोकमे जोर-जबरदस्तीक कोनो समस्या नहि रहैक । मुदा एहठामक तँ हाले-बेहाल छल । अस्तु,भावनगरक प्रभारी लोकनि निर्णय केलनि जे ओहिठामक

सुरक्षा व्यवस्थाकेँ चाक-चौबंद कएल जाए । ताहि हेतु लग-पासक गामसभसँ पहलमानसभकेँ रखबारमे राखल गेल। रखबारसभक काज देखबाक हेतु एकटा पर्यवेक्षक सेहो चाहबे करी। ताहि हेतु कएल गेल प्रयास जलदी सफल भेल । कपिलेश्वरमे शिवरातिक मेला लागल रहैक । उत्तरबारी कात परती खेतमे कुस्ती भए रहल छल। ओही समयमे ढोलिआ डिगडिगिआ पिटि घोषणा केकक -

"सुनू!सुनू! सुनू! गामक लगेमे नौकरीक सुंदर अवसर अछि। जिनका सुरक्षा व्यवस्थाक जानकारी हो से तुरंत भावनगरमे संपर्क करथि । लग-पासक बहुत रास पहलमान,पढ़ल-लिखल लोकसभ ओहिठाम कुश्ती देखि रहल छलाह । कैगोटे ढोलिआसँ सभबातक हुलिआ लए भावनगरक गेट धरि पहुँचि गेलाह । नौकरीक साक्षात्कारक हेतु गेटक बाहरे सामिआना लागल रहैक । चयन समितिक सामने कतेको युवकसभ साक्षात्कार देलनि । ओहिमे सभसँ उपयुक्त चंद्रकान्त पाओल गेलाह । सूचनापट्टपर चयनित उम्मीदवारमे अपन नाम देखि चंद्रकान्तक प्रसन्नताक अंत नहि छल । एतेक आसानीसँ गामक लगेमे नौकरी भेटि जेतनि से ओ सोचनहुँ नहि छलाह । मुदा सएह भेल रहैक । प्रातेभेने चंद्रकान्त ओहिठामक सुरक्षा पर्यवेक्षकक काज शुरु कए देलनि।

१३

गोवर्धन महादेव भक्त छलाह । सभ सोमदिन कए ओ अन्हरोखे कपिलेश्वर महादेवकेँ जलढरी हेतु जाइत छलाह। संयोग रहैक जे एकदिन कपिलेश्वरसँ किछु पहिने किछु चहल-पहल

देखलथि । ओ चुपचाप आगा बढ़ैत गेलाह। ओहिठामसँकनीके फटकी एकटा शिलापट्टपर लिखल छल-“भावनगर" । देखैत छथि जे किछुगोटे जमीनक भीतर जा रहल छथि। ओ ओकरसभक पाछा-पाछा चलए लगलाह । भावनगरमे ओ पहुँचि तँ गेलाह मुदा आगा किछु अकबक नहि फुराइत छलनि । हुनका भीतर गेलाक बाद भावनगरक मुख्यद्वार बंद भए गेल । “केमहर जाउ,ककरा पुछिऐक?" - से सोचि-सोचि ओ परेसान भए गेलाह । मोनमे डर होबए लगलनि जे कहीं केओ आबि कए जाने ने लए लिअए। मुदा जखन भीतर चलिए गेल रहथि तँ सोचलथि जे साहससँ काज ली। जे हेबाक हेतैक से हेतैक । मोने-मोन महादेवक ध्यान केलथि आ आगा बढ़बाक निश्चय केलनि । कनीके फटकी गेलापर हुनका गीत-नाद सुना रहल छलनि ।

"एतेक सुंदर स्वर ककर भए सकैत अछि? -ओ सोचथि। जिज्ञासावश ओ आगा बढ़लाह ।

"ई महासुंदरी के छथि? संभवतः कनीके काल पहिने इएह गबैत छलीह । जेहने देखबामे सुंदर तेहने सुंदर स्वर छनि हुनकर।”

तखन जे देखलाह से देखिते रहि गेलाह । गोवर्धन गाछक औढ़सँ एकटक हुनका देखैत रहि गेलाह। सौंसे देहमे करेंट जकाँ झटका देलकनि । कनी कालमे गीत-नाद समाप्त भेल । दर्शक लोकनि अपन-अपन घर चलि गेलाह । मुदा रागिनी ओतहि रहि गेलीह । हुनका लए जेबाक हेतु केओ आबि रहल छल । ताबते हुनकर ध्यान भावविह्वल गोवर्धनपर पड़ि गेलनि। गोवर्धन कोनो मामुली आदमी नहि छलाह । देखबा-सुनबामे कोनो राजकुमारसँ कम नहि रहथि । पहिले दृष्टिमे रागिनीकेँ हुनका प्रतिए जे आकर्षण भेलनि से भेले रहि गेलनि ।

रागिनी के छलीह आ ओहिठाम कोना पहुँचि गेलीह ? ई बात गोवर्धनकेँ बहुत दिन धरि परेसान केने रहलनि । कोनो समाधान नहि भए सकलनि तखन ओ एकरा महादेवक इच्छा बूझि लेलाह ।

"सभ किछु जानक कोनो जरूरी अछि? ई संसार तँ रहस्यसँ भरल अछि ? ककर-ककर व्याख्या करैत फिरब ? ई शृष्टिक रचना कोना भेल? तमाम नक्षत्र,ग्रह कतएसँ अएलाह? पृथ्वी किएक दिन-राति सूर्यक चक्कर लगबैत रहैत छथि? हम आ अहाँ कोना पृथ्वीपर जनमि गेलहुँ । की आओर कोनो ग्रह-नक्षत्र एहन अछि जतए पृथ्वी जकाँ जीव-जन्तु होइक? वैज्ञानिकसभ कहिआसँ एहि प्रश्नक समाधान हेतु अन्वेषणमे लागल छथि । लागल रहथु मुदा ताहि हेतु ई दुनिआ ठहरि नहि जाएत। तात्पर्य जे एहि संसारक रहस्य हम बूझी नहि बूझी, सभकिछु एहिना चलिते रहत।"- सएहसभ सोचि गोवर्धन शांत रहैत छलाह ।

१४

गोवर्धन आ रागिनीक प्रेमप्रसंग समुद्रक लहरि जेना रहि-रहि कए हिलकोर मारि रहल छल । कखनो एहिपार,कखनो ओहिपार। एकदिन दुनूगोटे चंपाक गाछतर प्रेमालाप करैत छलाह आ फूलो बिछैत छलाह ।

" भगवान करथि हमरा लोकनिक प्रेम एहि चंपाक फूल जकाँ गमकैत रहए ।"-गोवर्धन बजलाह ।

रागिनी चुप भए गेलीह । रागिनीकेँ बड़ीकाल धरि चुप देखि गोवर्धन पुछैत छथि-

"अहाँ चुप किएक भए गेलहुँ? ।"

"भविष्यक चिंता भए रहल अछि ।"

"से किएक?"

“बाते तेहने छैक?”

“से की?”

"हम तँ ताबते अहाँ संगे छी जाबे हमर अहाँक बीचक संबंध भावना धरि सीमित अछि ।जखने अहाँ एहि सीमानकेँ टपब तखने हम अहाँ हेतु दुर्लभ भए जाएब ।"

रागिनीक मुँहे ई बात सुनि गोवर्धन दुखी भए गेलाह ।

"तकर माने जे हमरा लोकनिक प्रसंग कपोल कल्पने रहि जाएत ।"-गोवर्धन मोने-मोन सोचैत छथि ।

“रागिनी जे होथि मुदा हम तँ मनुक्ख छी । मोनमे गड़ल कल्पनाकेँ साकार करब हमर अभिष्ट अछि।" -ओ आगा सोचैत छथि ।

"अहाँ तँ सोच-विचारमे पड़ि गेलहुं । हम अहाँक दुविधा बुझैत छी । अहाँ बहुत दुखमे नहि पड़ि जाइ तेँ हम अहाँकेँ अपन कर्तव्य बुझि पहिने चेता देलहुँ। आगू जे भावी ।"

ओहि दिन तँ गोवर्धन जेना-तेना आबि गेल रहथि मुदा ई तरीका बेर-बेर तँ नहि चलि सकैत अछि । ताहि बातक चिंता गोवर्धनसँ बेसी रागिनीकेँ रहनि । हुनका तँ आब बस गोवर्धन,गोवर्धनक रट लागल रहल छलनि । तेँ ओ चुपचाप गोवर्धनकेँ भावनगरक गेटक खुजबाक रहस्य कहि देलखिन ।बस तकरबाद तँ हुनका लोकनिक भेंट-घाँटक सिलसिला शुरु भेल ,से

चलिते रहल । रागिनी सेहो किछु अवरोध-प्रतिरोध नहि कए सकलीह । अनका की मतलब रहैक जे के केमहर जा रहल अछि? गोवर्धन आ रागिनीक अंतरंग संबंध बनल रहल । हुनका लोकनिक भेंट-घांट निर्वाध रूपसँ चलैत रहल । सभ अपन दुनिआमे मस्त छल । ककरो दोसरक मामलामे टांग अड़ेबाक ने इच्छा रहैक ने समय। भवानगरक ई विशेषता छल ।

एकदिन बहुत जोरकेँ बरखा भए रहल छल । भावनगरमे मालश्रीक गाछपर चढ़ल रागिनी गोवर्धन संगे प्रेमालापमे लीन छलीह । एकाएक चारूकात मेघ पसरि गेल, अन्हार-गुज्ज भए गेल। कतहु किछु नहि देखा रहल छल । माहौलक प्रभाव हुनका लोकनिक मोनपर ततेक जबरदस्त भेल जे ओ सभ सभ सीमानकेँ टपि गेलाह । नूतन सृजनक आहट बुझि रागिनीक सौंसे देह सिहरि गेलनि। होश होइतहि पूर्व निर्णयक अनुसार ओ गोवर्धनकेँ अपन प्रस्थानक बात कहलखिन ।

सोचल जा सकैत अछि जे तकर बाद गोवर्धनक की हाल भेल हेतनि? रागिनी चलि गेलीह आ ओ निःसहाय सभकिछु देखैत रहलाह,सहैत रहि गेलाह । एहि घटनाक बाद हुनकर मोन टुटि गेलनि । ओहिठाम आब एकहु क्षण रहब मोसकिल लागि रहल छलनि । दुख ओ विस्मृतिक ओहि माहौलमे गोवर्धन भकुआएल भावनगरसँ बाहर निकलि गेलथि। ओहिठामसँ जेना-तेना पटना वापस आबि गेलाह। भावनगरमे बिताओल क्षण जेना सपना बुझाइनि । किछु मोन पड़नि,किछु बिसरा गेलनि ।

रागिनी कोनो सामान्य मनुक्ख नहि छलीह। हुनकर सोच-विचारमे मातृत्वक अवधारणाक समावेश नहि छल । ओ एहिसभसँ मुक्त रहबाक अभ्यस्त छलीह। मुदा आब तँ ओ

स्वनिर्मित सीमानकेँ स्वयं टपि गेल रहथि । आब की करथि? दिन राति एही चिंतामे समय बतैत छलनि ।

ई संसार बड़ विचित्र अछि । लोक सोचैत अछि किछु आ होइत अछि किछु । विवशताक पराकाष्ठाक नाम जीवन थिक। से जँ नहि रहैत तँ सदरिकाल उनमुक्त जीबाक अभ्यस्त रागिनी गोवर्धनक प्रेममे किएक रमि जइतथि?मुदा भावी प्रवल होइत छैक। एहन बात नहि छैक जे रागिनीकेँ नीक लागि रहल छलनि । एमहर गोवर्धन बेचैन छलाह तँ ओमहर रागिनी सेहो कम परेसान नहि रहथि । मुदा नियतिकेँ तँ अपन रस्ता चलबाक रहैक।

गोवर्धनकेँ चलि गेलाक बाद रागिनी मौलश्री गाछ तर एसगर उदास बैसलि रहथि। मोन असोथकित लगैत छलनि । देहमे कतहु जेबाक हुबा नहि रहि गेल छलनि । ओतए बैसले-बैसल ओ करवन बेहोश भए गेलीह से नहि बुझि सकलीह । रखबारसभ फटकिएसँ हुनका एहि हालमे देखि हाक पाड़लक ।

“दौड़ति जाउ! दौड़ति जाउ !”

"ई तँ टससँ मस नहि भए रहल छैक "-एकटा रखबार बाजल ।

"जीबितो छैक कि नहि? कनी हिला-डोलाक देखहक ने।”-दोसर रखबार बाजल ।

"साँस तँ चलि रहल छैक । छाती ऊपर-नीचा भए रहल छैक से नहि देखि रहल छहक ।"-तेसर रखबार बाजल ।

"ई तँ रागिनी लगैत छथि।"-ओहीमे सँ केओ बाजल ।

चारिम दौड़ल गेल ,कतहुसँ ठंढा पानि अनलक,बिअनि अनलक । रखबारसभ ओकरा बिअनिसँ हवा करए लागल । थोड़बे कालमे ओ आँखि खोललथि ।

"पानि, पानि "-एतबे बाजि कए फेर आँखि मुनि देलखिन। रखबारसभ हुनका कहुना कए पानि पिऔलक । पानि पिबतहि ओ उठि कए बैसि गेलीह ।

फेर ओएह रखबारसभ बेरा-बेरी रखबारी करबाक बहन्ने हुनका दिक्क करए लागल । करवनो किछु तँ करवनो किछु । ओना ओ सभ रागिनीकेँ देखबाक हेतु,ओकरा लगीच जेबाक हेतु कोनो आइसँ धपाएल नहि छल । मौका नहि भेटैत छलैक,से आइ लागि गेलैक । ओ सभ बिढ़नी जकाँ मरड़ाए लागल । रागिनीकेँ सक भेलनि जे कहीं ओ सभ किछु अनट ने करए । एहि चिंतासँ ओ जोरसँ चिकरलीह-"केओ छी? केओ छी?"

“ई आबाज तँ रागिनीक बुझा रहल छनि । आबाजमे बहुत उद्विग्नता बुझा रहल अछि ।"-रखबारसभक पर्यवेक्षक चंद्रकान्त मोने-मोन सोचैत छथि । ओहि समय ओ अपने कार्यालयमे हाकिमसभसँ गप्प-सप्प कए रहल छलाह । रागिनीक व्यग्र आबाज सुनि ओ बाहर भेलाह । ओ रखबारसभक बदमासी अपने आँखिए देखैत छथि । तामससँ मुँह लाल भए गेलनि । ताबे कार्यालयसँ उच्च अधिकारी लोकनि सेहो आबि गेल रहथि । चंद्रकान्त हुनकासभकेँ रागिनी दिस इसारा केलखिन । अधिकारी लोकनिक सह पाबि चंद्रकान्त चिकरलाह-

"खबरदार! जौँ केओ एको डेग बढ़बह तँ ठामहि गोली लगतह ।"-से कहि ओ अपन बंदूक रखबारसभपर तानि देलाह । रखबारसभक सीटी-पीटी गुम्म छल । अधिकारी लोकनि चंद्रकान्तक संगे रागिनी लग पहुँचलाह । रागिनी हुनका सभटा बात कहलखिन । रागिनीकेँ आश्वस्त करैत चंद्रकान्त बाजल-

"अहाँ कोनो बातक चिंता नहि करू । जतेक दिन मोन होअए अहाँ अधिकारी निवासमे रहू । हमसभ सभटा इंतजाम करब ।"

रागिनीकेँ एहि तरहेँ बेसुधि होएब आ चंद्रकान्त द्वारा हुनकर जान बचेबाक घटना चर्चाक विषय भए गेलैक । ओहिसभसँ कहुना बचैत रागिनी चंद्रकान्तकसंगे अधिकारी निवासपर चलि गेलाह । रागिनी नौ मास धरि ओतहि रहलीह ।

समय सरकैत गेल। देखिते-देखिते दसम मास चढ़ि गेल । आब रागिनी बहुत परेसान रहए लागल रहथि। मुदा प्रकृति सभ समाधान अपने करैत अछि , सएह भेल । बिना कोनो परेसानीकेँ एकटा विलक्षण कन्याक जन्म भेल । संतानक जन्मक बाद रागिनी मोहमे पड़ि गेलथि । एकबेर ओहि दुधमुहाँ नेनाकेँ देखथि आ एकबेर शून्य आकास दिस । ओकर भविष्यक चिंतासँ मोनमे बहुत चिंता रहनि ।

"हमरा गोवर्धनकेँ छोड़बाक नहि चाहैत छल । आइ जौँ ओ रहितथि तँ संतानक जन्मक समाचारसँ कतेक प्रसन्न होइतथि । कहि नहि,की-की करितथि । मुदा एहि परिस्थितिक निर्माण तँ हम स्वयं केलहुँ । परिणाम सामने अछि । जे भेल,से भेल मुदा जखन ई संतान पृथ्वीपर आबि गेल अछि तँ एकर रक्षा तँ करैक अछि आ ताहि हेतु गोवर्धनसँ बढ़िआँ केओ आओर नहि भए सकैत अछि । हुनका कोनो संतान छनिहो नहि । जँ ई समाचार कहुना हुनका भेटि जानि तँ ओ बिना विलंबकेँ दौड़ि जेताह आ अपन संतानक मुँह देखि कहि नहि कतेक प्रसन्न हेताह ?"-रागिनिक मोनमे तरह-तरहक बातसभ आबि रहल छलनि । रागिनीक लग-पासमे मात्र चंद्रकान्त रहथि । घोर संकटक समयमे ओएह हुनकर अपन भए

ठाढ़ भेल रहथि । रागिनीक चिंताकेँ चंद्रकान्त नीकसँ बुझि रहल छलाह । कहबो केलखिन-

"कथीक चिंतामे पड़ल छी । जे भगवान जन्म देलखिन अछि से पालनोक व्यवस्था करथिन । हमरा लोकनिकेँ एहि बातपर विश्वास करक चाही ।"

मुदा रागिनी किछु जबाब नहि करथि । एकटक ओ नेनाकेँ देखैत रहथि । करवनो कए चंद्रकान्तकेँ होनि जे ओ अनेरे झंझटिमे पड़ल छथि । "एहि दुनिआमे किछु-ने-किछु होइते रहैत अछि । ओ ककर-ककर समाधान करताह?" मुदा फेर मोनमे होनि-"सभ जँ एहिना सोचैत रहि जेतैक तँ ई दुनिआ चलतैक कोना? ककरो तँ आगा आबहि पड़तैक ।"

इएहसभ सोचि-विचारि ओ रागिनीकेँ कहलखिन-

"अहाँ एकर चिंता नहि करू । हम समयपर एकरा गोवर्धन लग पहुँचेबाक व्यवस्था कए देबैक ।"

"मुदा ओ कोना बुझताह जे ई संतान हुनके छनि?"-रागिनी बजलीह ।

"अहीं कहू जे तकर की समाधान कएल जा सकैत अछि ?"

रागिनी एकटा लिफाफा हुनकर हाथमे दए कहैत छथि-

" उचित समयपर अहाँ ई लिफाफा गोवर्धनकेँ दए देबनि ।"

"ठीक छैक ।"-चंद्रकान्त बजलाह ।

तकरबाद जनमौटी नेनाकेँ चंद्रकान्तकेँ सुनझा रागिनी अद्दष्य भए गेलीह ।

१५

एहन बात नहि रहैक जे गोवर्धन भावनगरमे पहिल बेर आएल छलाह । ओ एहिठाम अबिते रहैत छलाह ,मुदा ककरो एहि बातक जानकारी नहि रहैक । भावनगरमे गोवर्धनक एकटा अलग दुनिआ छलनि । कोना-ने-कोना रागिनीसँ हुनका एतहि भेंट भेलनि । ओ भेंट हिनकर जीवनक दशा आ दिसा बदलि देलक । एतहि भेल रागिनीक संग प्रेमक परिणति छलीह -आरती । कैक बेर जखन ओ कतेको दिन घर वापस नहि आबथि तँ माधुरीकेँ चिंता जोर पकड़नि। मुदा गोवर्धन थाह नहि लागए देथि । थोड़बे कालमे बात ठंढा जाइत छलैक ।

एमहर बहुत दिनसँ गोवर्धनक भावनगरसँ संपर्क छुटिए जकाँ गेल रहनि । भावनगर मोन पड़िते ओ कष्टमे पड़ि जाइत छलाह । मुदा आरतीक जिद्दक आगू ओ हारि गेलाह । जखन आरती बड़ जोर देलखिन जे ओ अपन पारिवारिक पृष्ठभूमिकेँ जनबे करतीह तँ हारि कए गोवर्धन हुनका एहिठाम लए अनलखिन । आओर कोनो उपाय नहि रहैक । ओतए लए तँ अनलखिन मुदा भावनगर अबिते हुनकर मोन भसिआ गेलनि। मोनमे गड़ल पुरना बातसभ मोन पड़ए लगलनि। भावनगरमे पैसिते गोवर्धन,माधुरी आ आरतीसभक हुलिए बदलि गेल। सभ अपना आपमे मस्त भए गेलाह। ककरो कोनो बातक परबाह नहि,संकोच नहि । गोवर्धन जाहि काजे आएल रहथि तकर किछु सुधि नहि रहलनि ।

भावनगरक शुरुएमे महादेवक विशालकाय मंदिर छल । माधुरी मंदिरमे जाइते शिवलिंगकेँ पकड़ि आराधनामे लीन भए

गेलीह । ओ घंटो ओहिना रहि गेलीह । लग-पासमे केओ रहबो नहि करए जे हुनका उठाबति । मंदिरमे चारूकातसँ 'ॐ नमःशिवाय'क सस्वर जाप निरंतर होइत रहैत छल । मंदिरक चारूकात नाना प्रकारक फूलक गाछसभ लागल छल । रहि-रहि कए मंदिरक पूब-उत्तर कोनसँ भूत-प्रेतसभ नृत्य करैत शिवलिंग दिस बढ़ि रहल छलाह । सामान्यतः लोक भूतसभक ई दृश्य देखि होशमे नहि रहैत । मुदा जे पहिनेसँ बेहोश अछि तकरा की फर्क पड़ितैक । तँ माधुरी शिवलिंगकेँ बकोटने रहि गेलीह । भूथ-प्रेतसभक पूजा करबाक समय लगीच छल । मंदिरक परंपराक अनुसार ओहि समयमे केओ ओतए नहि जाइत छल । कहाँदनि एकाधबेर केओ गलतीसँ रहि गेल तँ ओ घर वापस नहि जा सकल।

भूत मंडली नचैत-गबैत शिवमंदिरमे प्रवेश केलक तँ ओकरासभकेँ विचित्र गंध लगलैक ।

"ई तँ मनुक्खक गंध बुझा रहल अछि ।"-एकटा भूत बाजल ।

"ई तँ कोनो स्त्री बुझा रहल अछि ।"

"ई एहिठाम धरि पहुँचलि कोना?"-तेसर बाजल ।

भूतसभ ओहि मंदिरमे माधुरीक उपस्थितिसँ परेसान भए गेल छल । माधुरीकेँ एहि बातसभक कोनो अता-पता नहि चललैक। चलबो कोना करितैक ? भूतसभ जखन सभप्रकारसँ थाकि गेल आ माधुरी टस सँ मस नहि भेलीह तँ एकटा भूत आगा बढ़ल आ माधुरीक दहिना हाथ पकड़ि कए अपना दिस घिंचबाक प्रयास केलक । एतबेमे शिवलिंगसँ आबाज आएल –"खबरदार! जँ एकरा किछु केलह तँ गेल घर छह । "

शिवलिंगसँ निकलि रहल आबाज बेस कड़क छल । भूतसभकेँ तँ घी-घी लागि गेलैक । ओ सभ यत्र-तत्र भागल । माधुरी ओहिना शिवलिंग धेने-धेने कतहु बिला गेलीह । आब ने शिवलिंग देखाइत छल ने माधुरीक कोनो अता-पता छल ।

१६

भावनगरमे माधुरी आ गोवर्धन अपन-अपन दुनिआमे रमि गेलाह । आरतीकेँ मौका भेटलैक । ओ फराके आगू बढ़ि गेलि। आगा जाइत-जाइत एकटा घनघोर जंगल आबि गेल । सामने एकटा विशालकाय ताल छल । तालक मध्यमे एकटा अद्भुत रंगमहल आ तकर चारूकात तरह-तरहक सुख-सुविधाक व्यवस्था छल । ओहिठाम कलाकारसभक जुटान होइत छल । विशिष्ट अवसरपर एहिठाम भावनगरक कलाकारसभ नाट्यमंचन करैत छलाह । दियाबातीमे तँ कैक दिनधरि सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छल । ओहुना किछु-ने-किछु ओतए होइते रहैत छल। नहि किछु तँ साँझमे विद्यापतिक गीतक गायन तँ होइते छल। कहक माने जे रंगमहल भावनगरक एकटा सांस्कृतिक केन्द्रविन्दु बनि गेल छल ।

थोड़ेकालक बाद आरती ताल लग पहुँचि गेलीह । एकाएक जोरसँ आबाज होइत अछि-

"अहाँ के छी आ एहिठाम असगर किएक घुमि रहल छी?”

“से की?"

“एहिठाम ओएह रहि सकैत अछि जे एहिठामक नियम पालन करए ।"- रखबार बाजल ।

"हमरा से सभ नहि बूझल अछि । पहिने नियम बुझा देब तखन ने?'-आरती बजलीह ।

" ई कोनो इसकूल नहि छैक । तथापि अहाँक आग्रहपर विचार कएल जाएत । ताबे अहाँ ठामहि रूकि जाउ ।”

रखबार सभ बात सौरभसँ कहलकनि। आरतीक छविक बारेमे सेहो विस्तारसँ वर्णन केलक।

"हुनका सोझे अंदरे किएक नहि लेने अएलह ।"- सौरभ बजलाह। हुनका आब एको सेकेंड प्रतीक्षा करबाक धैर्य नहि रहि गेल रहनि। ओ स्वयं धरफराएल बाहर आबि गेलाह । पाछा-पाछा रखबार सेहो पहुँचल ।

"रे! कहाँ किछु देखा रहल अछि ।"- सौरभ बजलाह ।

"सरकार! एखने तँ एतहि छलीह । भए सकैत अछि लग-पास कतहु ठाढ़ि हेतीह ।"

"तकहुन । तोरा हुनका रोकबेक नहि चाहैत छलह । "

सौरभकेँ तमसाइत देखि रखबारक तँ हाल बेहाल छल । चारूकात ताकए लागल । आरती कतहु नहि देखा रहल छलीह ।

"आब की होएत? हमर प्राण तँ अड़रीक खेतमे गेल लगैत अछि ।”- रखबार सोचि रहल छल । ओकरा देरी देखि सौरभ स्वयं बाहर होइत छथि । ताबतेमे देखैत छथि जे एकटा महासुंदरि लगीचेमे लतामक डारिपर सँ नीचा कुदि गेलथि । सौरभ किछु बजितथि ताहिसँ पूर्वे आरती दौरि कए हुनका लग पहुँचि जाइत छथि ।

"सौरभ! अहाँ एतेक दिन कतए छलहुँ? हम तँ अहाँकेँ तकैत-तकैत बताह होबए पर छी ।"

सौरभ आगू बढ़ि आरतीकेँ अपना दिस झीकैत छथि । रखबार ई मनोरम दृश्य लताम गाछक औढ़सँ देखि रहल छल ।

सौरभक संग आरतीक सिनहे देखि रखबारकेँ नहि रहल गेलैक । इर्ष्यासँ ओकर छाती फाटि रहल छलैक । ओकरा बुझेबे नहि करैक जे ओ एकटा अपरिचित कन्यासँ कोना अंतरंग भेल छथि? तामस तँ एहूबातसँ होइक जे ओ कन्या ओकरासँ नुका कए लताम गाछपर चढ़ि गेलि। अपसोचो होइक जे ओ बेकारे ओकरा टोका-टोकी केलक । ओकरा कतहु जेबाक कोन काज रहैक? ओकरा अपने गप्प करबाक चाहैक छलैक।"- तरह-तरहक प्रश्नसभ ओकर मोनकेँ गछारि लेने छलैक। ओकर मानसिक तनाव बढ़िते गेलैक,माथा चकरी जकाँ घुमए लगलैक,ठाढ़ रहब आब संभव नहि रहि गेलैक । ओ ठामहि बैसि गेल ।

रखबारपर निषेधात्मकता हावी भए गेल रहैक । ओ ग्लानि आ दुखसँ छटपटा रहल छल । ओहि सुंदरि सँ बदला लेबाक भावनासँ ओ किछु करबाक हेतु तैयार छल । कहबी छैक जे तामसमे लोक आन्हर भए जाइत अछि । काम वासनाक बेगमे मनुक्ख जानवरोसँ बेसी घातक भए सकैत अछि । मुदा ओकर प्रतिद्वंदी बहुत प्रवल छलैक । तँ ओकर सीटीपीटी गुम्म रहैक । लतामक गाछतर ओकरा एना छटपटाइत देखि आओर रखबारसभ जमा भए गेल ।

"भाइ! की भेल? एना किएक परेसान छी ?"-एकटा रखबार बाजल ।

"हिनका किछु भितरिआ परेसानी बुझा रहल अछि ।-दोसर रखबार बाजल ।

"तूँसभ एहिना चिरौरी करैत रहबह की हिनकर रक्षाक कोनो प्रयासो करैत जेबहुन । एहन ने होअए जे हमसभ गप्पे करैत रहि जाइ आ हिनकर प्राण चलि जानि ।"-तेसर रखबार बाजल । रखबारसभकेँ अपन-अपन काजक स्थानसँ हटि कए एना लतामक गाछ तर जमा देखि ओकरसभक पर्यवेक्षक फटकिएसँ हाक देलक-

"तोरासभकेँ गिरगिटिआ नाचि रहल छह । काज छोड़ि कए तूँ सभ गप्प-सड़ाकामे लागल छह । सभगोटेक नौकरी जाएत। हम कतेक काल तोहर रक्षा करैत रहबह। हम बुझैत रही जे तूँसभ जाही थारीमे खाइत छह ओहीमे भूर करबह । गलती हमरेसँ भेल। हम अनेरे तोरासभकेँ काज दिएलहुँ । आब लगैत अछि तोरेसभक कारण हमरो नौकरी जाएत । हमर बाल-बच्चा बिलटत तँ के काज आओत? "

चंद्रकान्तकेँ एना तमसाइत देखि रखबारसभ इएह-ले ओएह-ले भागल ।

चंद्रकान्तकेँ जखन सभ बात पता लगलैक तँ ओ जानए चाहलक जे आखिर ओ सुंदरि के छथि? कनीके आगा बढ़िकए ओ कोनटा लगसँ साफे देखलक जे सौरभ ओहि सुंदरिक संगे टहलि रहल छथि । सौरभ सेहो चंद्रकान्तकेँ देखलथि आ देखिते चिन्हि गेलाह । ओकरा देखिते सौरभ चिचिआ उठलाह-

" चंद्रकान्त! तूँ एमहर कोना ?"

चंद्रकान्त एतेक दिनसँ सौरभक लग-पासमे छलाह मुदा भेंट नहि भेल रहैक ।

"हमसभ एकहि ठामक छी । तेँ कोनो संकोचक बात नहि । जे कोनो बात होइक से फरिछा कए कहह ।"-सौरभ बजलाह ।

"सएह कहू । अहाँकेँ नहि कहबैक तँ ककरा कहबैक? अहाँ अपन लोक थिकहुँ । हमसभ एकहि गामक छी ,मुदा आश्चर्यक बात जे ई बात एतेक दिनक बाद भेंट भए रहल अछि ?"--चंद्रकान्त बजलाहभेंट भए।

चंद्रकान्तकेँ ई नहि बूझल छलनि जे सौरभ एहिठाम कहिआ आ कोना अएलाह? बादमे स्थानीय कलाकारसभसँ हुनका एहिबारेमे जानकारी भेटलनि ।

शिवरातिक समय रहैक । सौरभ अपन नाटक मंडलीक संगे कपिलेश्वर नाटक खेलेबाक हेतु गेल रहथि। संयोग एहन भेलैक जे सौरभक नाटकक प्रशंसा सुनि भावनगरसँ किछुगोटे नाटक देखबाक हेतु कपिलेश्वर गेल रहथि। सौरभक नाटक देखि दर्शकसभ मुग्ध रहथि । जकरे देखू सएह सौरभक गुनगान करैत भेटैत । नाटक समाप्त होइतहि दर्शकसभ उत्सुकतावश हुनका चारूकातसँ घेरि लेलक । सभ चाहए जे हुनकासँ किछु गप्प करी। ताबतेमे भावनगरक कैकगोटे ओतए अचानक अएलाह आ सौरभकेँ आग्रह कए अपनासंगे लेने चलि गेलाह ।

सौरभ भावनगरमे अएलाक बाद कैकटा नाटकमे भाग लेलथि । हुनकरसभटा नाटक बहुत पसिंद कएल गेल । एकटा नाटकमे हुनकर राजकुमारक अभिनय ततेक पसिंद कएल गेल जे तकरबाद भावनगरक लोकसभ हुनकर नामे राजकुमार धए देलक। भावनगरमे हुनकर बहुत मान-दान भेल । केओ हुनका लगसँ हटबे नहि करए । सौरभक समय राजसी ठाठमे बिति रहल छल । ओ कतबो कहथि हुनका केओ भावनगरसँ बाहर नहि जाए दिअए । मुदा ओ ओहिठाम कतेक दिन रहितथि? बहुत मोसकिलसँ सौरभ

हुनकासभकेँ मनओलथि । जाइत-जाइत आश्वासन देलथि जे ओ भावनगर अबैत रहताह ।

१७

आरती, गोवर्धन आ माधुरीक संगे भावनगरसँ गेलीह से गेले रहि गेलीह । कैक दिन धरि वाहन चालक रमुआ हुनकासभकेँ बाट तकलक । कहुना कए कपिलेश्वरक लग-पासक छोट-मोट दोकानसभमे जलखै,भोजन कए जान बचओलक । मुदा एना कतेक दिन चलि सकैत छलैक? संगमे जे थोड़ बहुत टाका छलैक से सभ खर्च भए गेलैक। कारमे बहुत सीमित पेट्रोल रहि गेल रहैक। ओ कारकेँ कहुना कए कपिलेश्वरक पंडाक ओहिठाम पार्क कए देलक आ बस पकड़ि कए पटना वापस चलि आएल । पटना पहुँचलाक बादो ओ कतेको दिन धरि हुनका लोकनिक प्रतीक्षा करैत रहल ।

भावनगरमे रहैत गोवर्धनकेँ बहुत दिन भए गेल छल । एकदिन भोरे कहि नहि हुनका जेना भक टुटलनि। ओ माधुरी आ आरतीकेँ ताकए लगलाह । लगैत छल जेना ओ भाङक नशासँ कहुना कए बहराएल होथि । मुदा ने हुनका माधुरी देखाइन ने आरतीक कोनो अता-पता लागि रहल छल । आब ओ करथि तँ की करथि? ककरासँ पुछथिन,के कहतनि? “हे भगवान! ई की भेल? आएल रही किछु समस्याक समाधान करए आ नव-नव समस्यासभ ठाढ़ भए गेल । एकरे कहैत छैक भावी ।” - ओ मोने-मोन सोचथि ।

जे हेबाक छल से भेल मुदा आब की कएल जाए ? "- गोवर्धन इएह सोचैत-सोचैत महादेवक मंदिर लग पहुँचि गेलाह । महादेवक तरह-तरहसँ आराधना करए लगलाह । मुदा किछु फाएदा नहि बुझा रहल छलनि । जिनगी जेना अन्हार गुप्प रस्तासँ गुजरि रहल छलनि । एमहर गोवर्धन महादेवक आराधनामे लीन छलाह आ ओमहर माधुरी शिवलिंगकेँ गछारने बैसलि रहथि। आँखि खोलितहि गोबर्धब ई दृश्य देखि दंग रहि गेलाह। मोने-मोन महादेवकेँ गोहरबैत छथि-ःधन्य छी हे त्रिपुरारी! अहाँक कृपासँ हमर आधा समस्याक समाधान तँ भए गेल । मुदा आरती कतए अछि? ओकरा बिना तँ हमर मोन बहुत व्याकुल लागि रहल अछि ।

"अहीं किछु करिऔक हे महादेव!" -गोवर्धन महादेवकेँ बेरि-बेरि गोहराबए लगलाह ।

कहबी छैक जे शुद्ध मोनसँ कएल गेल प्रार्थना बाम नहि जाइत अछि । से सएह भेल । जखन गोवर्धन माधुरीक हाल-चाल पुछैत रहथि ताबते आरती सौरभ संगे मंदिर परिसरमे हाजिर भए गेलीह। जखन आरती आ सौरभ मंदिर परिसरमे गोवर्धनक सामनेसँ गुजरि रहल छलीह आ तखनो हुनकासभकेँ नहि टोकलीह तँ गोवर्धनकेँ नहि रहल गेलनि । ओ चिकरि उठलाह-

"आरती! आरती! हमसभ कहिआसँ अहाँक बाट ताकि रहल छी ।"

"व्यर्थ प्रयासमे लागल छी । हमसभ अपन बाट ताकि चुकल छी । आब अहाँ निचैन रहू ।"

"हमसभ एतेक दिनसँ अहाँक प्रतीक्षामे छी । मुदा अहाँ आइ एतेक दिन बाद भेटबो केलहुँ तँ की सुना रहल छी ? "

"हम तँ एकदम वाजिब बात कहि रहल छी । अहाँ अपन छातीपर हाथ किएक नहि दए रहल छी जे हमरा पाछा पड़ल छी?"

"ई अहाँ की बाजि रहल छी? हमरासंगे एना बजबामे अहाँकेँ संकोचो नहि भए रहल अछि ।"

"कथीक संकोच होअए? "

आरतीक एहन पकठोस जबाब सुनि गोवर्धन आ माधुरी गुम्म पड़ि गेलाह । आगू किछु बजबाक साहस नहि भेलनि ।

आखिर गोवर्धन,माधुरीक संगे पटना वापस आबि गेलाह। ओ सभ जेना-तेना बस स्टैंड पहुँचलाह । साल भरिक बाद हुनका लोकनिकेँ पटना बस स्टैंडपर देखि रमुआकेँ बहुत आश्चर्य भेलैक । ओ हुनकासभकेँ कारसँ अपन घर लए गेल । मोनमे होइ जे हिनकासभकेँ पुछिअनि जे एतेक दिन कतए रहि गेलाह । मुदा हुनकर हाल देखि चुप्पे रहि गेल ।

१८

आरती आ सौरभ एकदिन भावनगरमे टहलैत-टहलैत एकटा पाथरसँ टकरा गेलाह । सौरभ तमसा कए ओहि पाथरमे जोरसँ आघात केलाह । पाथर ओहिठामसँ हटि गेल । ओकरा नीचासँ एकटा पेटीक ऊपरी भाग देखाइत छल । सौरभ जेना-तेना ओहि पेटीकेँ बाहर करैत छथि । आरती सेहो छगुन्तामे रहथि जे

आखिर ओ पेटी आएल कतएसँ । ओ सभ ओहि पेटीकेँ खोलैत छथि । पेटीमेसँ एकटा लिफाफा भेटैत छनि । असलमे रागिनी भावनगरसँ जाइतकाल ओहि पेटीकेँ ओतए गारि देने रहथिन ।

कनीके आगू बढ़ि पोखरिक भीरपर दुनूगोटे चुक्कीमाली बैसि कए चंद्रकान्तक देल चिठ्ठी पढ़ए लगलाह-

"संसारमे अपन संतान सँ प्रिय आओर किछु नहि होइत अछि । लोक कोनो उपायसँ संतानक मुँह देखए चाहैत अछि । ओकर कल्याण हेतु जे किछु संभव होइत छैक से करैत अछि । मुदा हम एहन अभागलि छी जे अपन नवजात शिशुकेँ अनाथ छोड़ि देबाक हेतु विवश छी । अहाँ पूछि सकैत छी जे एहन कोन विवशता भए सकैत अछि? ताहि बारेमे हम अहाँकेँ की कहू ? जे किछु जखन भेलैक से स्वतः होइत गेल । तकरे नियति कहि सकैत छी । हम सोचनहुँ नहि रही जे चंद्रलोक छोड़ि एना हमरा भावनगरमे रहए पड़त । हे चलू जँ से भेवे कएल तँ कोनो बात नहि, मुदा ओतहु हम निचैन कहाँ रहि सकलहुँ । ओकर मोनमे गड़ल राग-द्वेष हावी भए गेल । मोन दिन-राति उद्विग्न रहए लागल। जेहो नहि सोचबाक चाही से सभ सोचाइत छल । जकर कहिओ कल्पनो नहि केने होएब,से सभ भए रहल छल । एहने मानसिकतामे भेटलाह अहाँक पिता। कहि नहि ओ केना ओहि भावनगरमे पहुँचि गेल रहथि? हुनकासँ भेंट होइते जेना हमरा बहुत उसास भेटल । मोन हल्लुक होबए लागल । नित्यप्रतिक दुख-सुख बँटबाक हेतु एकटा अवसर भेटल । बात बढ़िते गेल । हम अपन सीमानसँ पूर्ण अवगत छलहुँ । हुनको से चेता देने रहिअनि । मुदा कहनहुँ ने जे भावी प्रवल होइत छैक । व्यक्तिगत दुर्वलताक ओहि क्षणक परिणाम अहाँक जन्म भेल । तकर संभावना होइतहि हम हुनकासँ

फराक भए गेलहुँ । तकर बाद कहि नहि गोवर्धन कतए चलि गेलाह? । हमरा अहाँक जन्म देबाक छल । तेँ जेना-तेना ओहीठाम रहबाक छल ।

एहि असमंजसमे काज अएलाह चंद्रकान्त । जँ नियति हुनका नहि पठओने रहैत तँ साइत अहाँक जान नहि बचैत । हम आब आश्वस्त छी जे आइ ने काल्हि ई पत्र अहाँकेँ भेटत जाहिसँ अहाँ बूझि सकब जे अहाँ वस्तुतः के छी ।

एकटा जरुरी बात तँ कहनाइ छुटले जाइत छल । हमर रही ने रही मुदा अहाँकेँ सदति अपन पिताक अवलंब रहबे करत । ओ बहुत महान छथि । हुनकर हृदयमे अहाँक प्रतिए अथाह सिनेह भरल रहतनि ,से हमरा पूर्ण विश्वास अछि । अहाँ हुनकर संरक्षणमे बढ़ब,फलब-फूलब से हमरा भरोसा अछि । अहाँ एहि चिट्ठी भेटलाक बाद कनिको शङ्कामे नहि पड़ब जे ई सच अछि कि नहि। एहिमे लिखलसभ बात सही अछि से कहबाक प्रयोजन नहि अछि। फेर अहाँ कहब जे एतेक दिनक बाद एहि चिठ्ठीक मर्म बुझिए कए की होएत? से बात नहि छैक । सभ बातक अपन समय होइत अछि। हमरा लगैत अछि जे ई चिठ्ठी सही समयपर अहाँक हाथमे आओत।

एतेक बात तँ हम बाजि गेलहुँ मुदा असली बात तँ कहबे नहि केलहुँ , से कहिए दैत छी । अहाँक पिताक नाम छनि गोवर्धन। अहाँकेँ हुनका बारेमे सभबात अपने पता लागि जाएत ।

हम मानैत छी जे अहाँक हेतु हमरा क्षमा करब आसान नहि होएत । मुदा हम बेकसूर छी । हम कइए की सकैत छलहुँ ? हम आशा करैत छी कहिओ ने कहिओ अहाँ हमरा बुझि सकब । कहि

नहि हम फेर कहिओ अहाँकेँ देखि सकब कि नहि, मुदा हमर आशीर्वाद सदति अहाँक संगे अछि आ रहत ।

अहाँक अभागलि,

माए

चिठ्ठी पढ़ि कए आरती भोकासी पारि कए कानए लगलीह। कनैत-कनैत हुनकर गला बाझि गेलनि , आँखि लाल भए गेलनि । सौरभ हुनकर मानसिक परिस्थितिकेँ नीकसँ बुझि रहल छलाह । कैक बेर अपसोच होनि जे ओ किएक एहन प्रश्न उठओलाह जकर उत्तर तकबामे आरतीक ई हाल भए गेलनि ? मुदा ओ सोचिओ नहि सकैत छलाह जे सर्वसुलभ जानकारी आरतीक लेल एतेक दुर्लभ हेतनि आ जकर जिज्ञासामे ओ एहि हालमे पहुँचि जेतीह । एहिसभ घटनाक बाद सौरभकेँ ई बात बुझबामे भाङट नहि रहलनि जे आरती कोनो सामान्य व्यक्ति नहि छथि । ने हुनकर जन्मसँ जुड़ल समस्या सामान्य अछि । सौरभकेँ आरतीक परिचय तँ भेटि गेलनि मुदा तकरा लए कए ओ करताह की? ओ आरतीसँ फटकी जा नहि सकैत छलाह । तखन तँ हुनका एहिसभ पचरामे पड़ैक नहि छल । "-सौरभ मोने-मोन सोचथि ।

ओहिदिन बहुत मोसकिलसँ आरतीकेँ सम्हारल गेल । सौरभ हुनका कहुना पुचकारि कए अपन बासा धरि अनबामे सफल भेलाह, ओहो एही शर्तपर जे काल्हि अन्हरोखे ओ सभ भावनगरसँ छोड़ि देताह ।

दोसर दिन अहल भोरे दुनूगोटे भावनगरसँ निकलि गेलाह। आरती ओहि चिठ्ठी पढ़लाक बादेसँ गुम्म रहथि । बहुत काल धरि जखन ओ किछु नहि बजलीह तँ सौरभ हुनका टोकलथि-

"अहाँ एना परेसान किएक छी?"-सौरभ बजैत छथि । आरती ओहिनाक -ओहिना मुरुत बनल रहलीह। कनी काल लेल तँ सौरभ सेहो सकदम पड़ि गेलाह । फेर मोने-मोन महादेवकेँ गोहरेलथि । ताबतेमे चमत्कार भेल । जेना महादेव साक्षात हुनकर प्रार्थना सुनि लेलखिन । कतहुँ सँ घुमैत फिड़ैत गोवर्धनक वाहन चालक रमुआ कार लेने सामनेसँ जा रहल छल । ओ आरतीकेँ ओतए देखि कार रोकि देलक ।

"आरती! आरती! "-ओ चिचिआइत अछि । कथी लेल आरती किछु कहथिन । रमुआ कारकेँ कात कए रोकि देलक आ पैरे सहटल-सहटल ओहिठाम आबि गेल । सौरभकेँ जान मे जान अएलनि ।

"हिनकर मोन किछु खराप छनि ।"-से सुनि रमुआ हुनका सभकेँ आग्रह पूर्वक कारमे बैसओलक । लगीचेमे चाह-पानक दोकान रहैक । तीन कप चाह आ किछु सिंघारा अनलक । दुनूगोटे बहुत भुखल रहथि । जलखै आ चाहक बाद मोन हल्लुक भेलनि । रमुआ कार चलओलक आ सभगोटे गप्प-सप्प करैत आगा बढ़ि गेलाह।

१९

पटना पहुँचलाक बाद हनुमान मंदिर लग कारसँ उतरि भविष्यक योजनाक बारेमे दुनूगोटे चर्चा करए लगलाह । रमुआक इच्छा रहैक जे ओ सभ गोवर्धनक ओहिठाम छलथि । मुदा आरती अड़ि गेलीह। हम आब हनुमानजीक शरणमे जाइत छी । ओएह पार लगओताह । "-आरती बजलीह ।

"मुदा ओ तँ अहाँक पिता छथि आ अहाँकेँ मानितो छथि। तखन हुनका लग जेबामे कोनो हर्जा नहि बुझाइत अछि ।"-सौरभ बजलाह ।

"अहाँ की जाने गेलिऐक जे हम अखन कोन मनःस्थितिसँ गुजरि रहल छी । हम हुनका निर्दोष कोना बुझी । जँ ओ सही आदमी रहितथि तँ हमर माएकेँ संगे रखितथि, ओकरा छोड़ि कए पटनामे फेरसँ बिआह कए एना मौज-मस्ती नहि करितथि । हम नहि सोचि पाबि रहल छी जे हमर माए अखन कतए आ कोन स्थितिमे हेतीह? हुनका के दखैत होएत । अछैते संतानकेँ ओ अनाथ भेल छथि । हम तँ अपराधबोधसँ मरल जा रहल छी। "

" माएक प्रति अहाँक सिनेह प्रशंसनीय जरूर थिक मुदा तकर माने तँ ई नहि भेल जे शेष कर्तव्यकेँ अहाँ तिलांजलि दए दी। ओ अहाँक प्रतिए अपनसभटा कर्तव्यक निष्पादन करैत रहलाह अछि आ अखनो तैयार छथि । ओ तँ कखनो अहाँक उपेक्षा नहि केलथि । करबो किएक करताह? हुनकर अहीं एकमात्र संतान छिअनि । ताहि हालतमे अहाँकेँ बहुत सोचबाक जरूरी अछि। भावावेशमे तेहन काज नहि कए जाउ जे सभदिन हेतु पश्चातापक कारण बनि जाए।"

" तँ अहाँ की चाहैत छी जे हम अपन माएकेँ विसरि जाउ। आ जँ नहि बिसरि जाउ तँ हमरा लग आओर की विकल्प अछि?"

"अहाँक सभबात सही अछि मुदा एतेक हड़बड़ेबाक नहि चाही । ई जीवन छैक, एहिठाम उठापटक होइत रहैत छैक । उत्थान-पतन जीवनक नियम छैक । तेँ हमर कहब जे सभ बातकेँ विचार करैत कोनो संतुलित निर्णय करू जाहिसँ 'साँपो मरि जाए आ लाठिओ नहि टुटए' ।"

"अहाँ हमर बात बुझि नहि रहल छी वा बुझिओक अंठा रहल छी । आब जखन हम नीकसँ बुझि गेल छी जे हमर माए केओ आओर छथि तँ एतेक तँ हमर कर्तव्य बनैत अछि जे हम ओकर पता लगाबी आ ओकर सुख-सुविधाक उचित व्यवस्था करी जाहिसँ ओ शाँतिसँ अपन बचल जीवन जीबि सकथि आ हमहु चैन होइ । तकर बिना तँ हमरा एको सेकेंडक हेतु शांति नहि भए सकैत अछि । हम जँ पटना डेरापर चलिओ जाएब तँ रहि नहि सकब । भए सकैत अछि जे माएक बिछोहमे हम बताह भए जाइ किंबा किछु अनट कए ली ।"

तखन अहीं कहू जे हमसभ की करी?"

"हमसभ फराक डेरा ली । हम अहाँक संगे छी आ रहब । जखन हमर अहाँक मोन एक अछि तँ फेर चिंता कथीक? हम अहींसंगे रहब । हुनका ओहिठाम जेबाक हेतु हमर मोन नहि मानि रहल अछि ।"

"ठीक छैक । जे अहाँ कहबै सएह हेतैक ।"-से कहि सौरभ रमुआकेँ दिस देखि बजैत छथि-

"तूँ अखन जाह । सभ बात बुझिए गेलह अछि । गोवर्धनकेँ कहि दिअहुन जे हमसभ ठीक छी । व्यर्थ चिंता नहि करथि ।"

रमुआ कार चलओलक आ गोवर्धनक घर दिस बिदा भए गेल ।

आरती आ सौरभ प्रसाद लए हनुमान मंदिरमे प्रवेश करैत छथि । मंदिर परिसरमे जोर-सोरसँ हनुमान चालीसाक प्रसारण भए रहल छल । भक्तगण हनुमान चालीसाक सस्वर पाठ कए रहल छलाह । मंदिरमे पैसिते हुनका लोकनिकेँ मोन हल्लुक लागए

लगलनि । आरती एकटा हनुमान चालीसाक किताब लए पाठ करए लगलीह । सौरभ सेहो संचमंच भए ओतहि हुनकर बगलमे बैसि गेलाह । हनुमान चालीसा पढ़ैत-पढ़ैत आरतीकेँ औंघी लागए लगलनि। ओ ओतहि खाम्ह धेने आँखि मुनि लेलीह । सौरभकेँ होनि जे ओ हनुमानजीकेँ ध्यान कए रहल छथि मुदा बात से नहि रहैक । हनुमान चालीसा पढ़िते-पढ़िते ओ सुति रहल रहथि । सुतलेमे ओ सपनाइतो छलीह आ किछु नहु-नह बड़बड़ेबो करथि। सपनेमे आरती एकटा खूब सुंदरि स्त्रीकेँ देखलथि । ओकर हाथमे एकटा फोटो छलैक । ध्यानसँ देखलापर हुनका लगलनि जेना ओ फोटो हुनके अछि ।

"आश्चर्यक बात अछि । आखिर एकर हाथमे हमर फोटो कतएसँ अएलैक? ई के छी? कहीं कोनो जादू-टोना तँ नहि करैत अछि?" -एहि तरहक बातसभ आरति सपनामे देखि-सोचि परेसान छलीह । ओ महिला बड़ीकाल धरि आरतीक फोटो लेने ठाढ़ि छलि। टस सँ मस नहि होथि । आखिर आरति चिकरल-

"अहाँ के छी आ एना हमर पछोर किएक कए रहल छी?"

आरतीकेँ एना चिकरैत सुनि सौरभ दौरलाह । ताबे तँ आरतीक निन्न टुटि गेल रहए ।

"किछु नहि सपनाइत छलहुँ ।'-आरती बजैत छथि ।

२०

रमुआ गोवर्धनकेँ देखितहि हुनका सभटा बात कहि देलकनि । ओकर बात सुनि गोवर्धन बहुत दुखी भए जाइत छथि।

"सएह कहू केहन समय भए गेलैक । जकरा हम पाललहुँ-पोषलहुँ सएह एहन कठोर भए गेल जे एहनो हालतमे हालो-चाल नहि पुछए आएलि?"-ओ मोने-मोन सोचथि । असलमे गोवर्धनकेँ कैक दिनसँ बोखार लागि रहल छलनि । कैककटा डाक्टर देखलक मुदा बिमारीक किछु पता नहि चललैक । माधुरी दिन-राति हुनक सेवामे लागल रहथि । मुदा गोवर्धन हालत खरापे होइत गेलनि । आखिर हुनका अस्पतालमे भर्ती करेबाक बिचार डाक्टर देलकनि। तकरे तैयारीमे छलाह कि रमुआ आबि गेल । ओ अबितहि सभटा बात हुनका कहि देलकनि। आरतीक समाचार सुनि गोवर्धन बहुत चिंतामे पड़ि गेलाह । हुनका चिंतित देखि माधुरी पुछैत छथि-

"की भेल? बहुत परेसान देखि रहल छी ?"

"अखने रमुआ कार लए वापस आएल अछि । ओकरा आरती भेटल छलैक मुदा ओ एतए नहि आएलि।"

"पहिने अपन जानक चिंता करू । आब ओ नेना नहि अछि । जँ ओकरा एहिठाम नीक नहि लगैत छैक तँ अहाँ की कए सकैत छी? पहिने अस्पताल चलू । आगाक बात बादमे सोचल जेतैक ।"-माधुरी बजलीह।

माधुरी गोवर्धनकेँ अस्पताल लए बिदा भए गेलीह । रमुआ कार चला रहल छल । रस्तामे हनुमान मंदिर अएलैक। ओ चारूकात तकलक मुदा आरती कतहु नहि देखेलैक। कार आगू बढ़ि गेल ।

गोवर्धन पछिला सीटपर पड़ल रहथि आ माधुरी हुनके लगमे हुनका धेने बैसलि रहथि । रमुआ कार तेजीसँ चला रहल छल जाहिसँ जलदी सँ जलदी अस्पताल पहुँचल जा सकए । ताबतेमे पाछूसँ एकटा बस तेजीसँ आगू बढ़ल आ कारमे टक्कर

मारलक । ततेक जबर्दस्त टक्कर भेल जे कार तँ लोथरा भए गेल । चारूकात लोकक करमान लागि गेल । रमुआ कारसँ बहुत दूर फेका गेल छल । ओकर देह खूनमे सनल छल । दर्दसँ ओ कराहि रहल छल । गोवर्धन आ माधुरी कारेमे छलाह । कारक चारूकात लोकक करमान लागल छल मुदा केओ मदति करए आगा नहि आबि रहल छल । थोड़े कालक बाद पुलिस पहुँचल । बहुत मोसकिलसँ हुनका लोकनिकेँ कारसँ बाहर निकालल गेल । दुनूगोटे खूनसँ लथपथ छलाह । पुलिस हुनकासभकेँ जेने-तेना सरकारी अस्पताल पहुँचेलक । ओहिठाम डाक्टर माधुरीकेँ मृत घोषित कए देलक । गोवर्धनक हालत सेहो बहुत गंभीर छलनि । बँचताह कि नहि से किछु नहि कहल जा सकैत छल । डाक्टरसभ अपनाभरि प्रयास कए रहल छल । मुदा ओकरसभक कहब जे हुनकर शरीरसँ अत्यधिक खून निकलि गेल छनि । संगहि माथामे गंभीर चोट छनि। अस्तु,किछु नहि कहल जा सकैत अछि जे की होएत? रमुआकेँ सेहो भर्ती कराओल गेल । मुदा ओकर हालत बढ़िआँ छलैक । उमीद रहैक जे साँझधरि ओकरा अस्पतालसँ छुट्टी भए जेतैक ।

एहि दुर्घटनाक समाचार रेडिओ, टेलीवीजनक माध्यमसँ सौंसे पसरि गेल । अस्पताल परिसरमे बहुत रास लोकसभ जिज्ञासामे पहुँचि गेलाह । मुदा अस्पताल प्रशासन चुप छल । गोवर्धनक हालतक बारेमे किछु स्पष्ट बात नहि बुझा रहल छल । पता नहि बँचबो करताह कि नहि?"-सभक मोनमे इएह चिंता छल।

आरती आ सौरभ डेरा तकबाक क्रममे कोनो चाहक दोकानपर बैसि सुस्ताइत रहथि । भुख से लागि गेल रहनि । दोकानबला गरम-गरम सिंघारा छानि रहल छल । दोसर चुल्हापर

जिलेबी बनि रहल छल । सौरभकेँ नहि रहि भेलनि । जेबीमे हाथ देलाह , किछु टाका भेटलनि । ओ चारिटा सिंघारा आ पावभरि गरम जिलेबी कीनलाह । दुनूगोटे एक-दू कौर खेने हेताह कि आरतीक ध्यान दोकानमे राखल टेलीवीजनमे आबि रहल समाचार पर पड़लनि -"पटनामे रेलवे पूलक लगीचमे भीषण दुर्घटना । महिलाक ठामहि मृत्यु आ बुजुर्ग गंभीर रूपसँ घायल अस्पतालमे भर्ती ।" संगहि घायलसभक फोटो सेहो देखा रहल छलैक । दुर्घटना स्थलक दृश्य सेहो देखा रहल छलैक । कार तँ जेना परखच्चा उड़ि गेल छल।

आरतीक ध्यान टेलीवीजनमे प्रसारित होइत समाचार दिस गेलनि । फोटोसँ तँ किछु नहि चिन्हा रहल छलैक । मुदा नीचा फूटेजमे मृत/घायल लोकसभक नाम देखि ओ चौंकि गेलीह । हाथक कौर हाथेमे रहि गेलनि । फूटेजमे बेरि-बेरि लिखल आबि रहल छल-"दुर्घटनामे मृत माधुरी(बएस-पैंतालीस रंग गेहुआ),घायल गोवर्धन(बएस पचास),रमुआ वाहन चालक -(बएस चालीस)। समाचार देखितहि आरतीक होश उड़ि गेलनि । ओ इसारासँ सौरभकेँ किछु कहए चाहलीह मुदा बाजल नहि होनि। सौरभ बुझबे नहि करथि जे एतेक जलदीमे की भए गेलैक?लग-पासक लोकसभ सेहो अकचका गेल । ओहीमेसँ केओ टेलीवीजनक समाचार देखैत छल । ओ कहैत अछि-

" ई टेलीवीजनक समाचार देखि कए परेसान भए गेलीह। भए सकैत अछि जे हिनकर केओ परिचित व्यक्ति एहिमे होथि ।" सौरभ बात बुझलखिन। समाचार देखि ओहो हतप्रभ रहि गेलाह । बहुत मोसकिलसँ आरतीकेँ बुझा-सुझा कए अस्पताल बिदा भेलाह।

सरकारी अस्पताल छलैक । केओ किछु कहबाक लेल तैयार नहि । सभ एक-दोसरपर फेका-फेकी कए रहल छल । घंटाभरि प्रयासक बादो ओसभ सही जानकारी नहि प्राप्त कए सकलाह । ताबे माधुरीक शव शवगृहमे राखि देल गेल छल । गोवर्धनक इलाज आइसीयूमे चलि रहल छल । आरती आ सौरभ थाकि कए चिकित्सा अधीक्षकक कार्यालय लग बैसि गेलाह । संयोग एहन भेलैक जे डाक्टर धीरज चिकित्सा अधीक्षककेँ एही घटनाक बारेमे जानकारी दए बाहर होइत काल हिनकासभकेँ देखलखिन ।

"एहिठाम किएक बैसल छी?"

"टेलीवीजनमे समाचार देखलिऐक जे कार दुर्घटना भए गेलैक अछि । ओहिमे गोवर्धन आ आरती घायल भए गेल छथि। हुनकेसभकेँ देखबाक हेतु हमसभ आएल छी । मुदा केओ किछु कहिए नहि रहल अछि ।"

" ओ! हमही गोवर्धनक शल्य चिकित्सा केलिअनि अछि। हुनकर हालत ठीक नहि छनि । जँ चौबीस घंटा ससरि गेलाह तँ बुझू बाँचि जेताह ।"

"आ हिनकर माए?"

"ओ तँ अस्पताल अएबासँ पहिने गुजरि गेल रहथि । हुनकर लास शवगृहमे राखल अछि । केओ संबंधी अएताह तँ लास देल जा सकैत अछि ।"

"संबंधी तँ आएले छथिन मुदा केओ किछु कहिए नहि रहल छनि ।"

"अच्छा ठहरु । हम प्रयास करैत छी । " -से कहि डाक्टर धीरज वापस चिकित्सा अधीक्षकक कोठरीमे गेलाह आ हुनका सभ

बात कहलखिन । ओ तुरंत आरती आ सौरभकेँ शवगृह लए जेबाक हेतु कहलखिन ।धीरज सौरभ आ आरतीक संगे शवगृह लग गेलाह। ओहिठाम पहुँचलाक बाद चौकीदारकेँ शवगृह खोलबाक हेतु कहलखिन । शवगृह खुजल मुदा ओहिठाम माधुरीक शव नहि छल । एकटा अनकर लास जरूर ओतए छलैक मुदा ओहिठामक खातामे तँ मात्र माधुरीएक लास ओतए हेबाक छल ।

" ई की भेल? माधुरीक शव कहाँ चलि गेल?"-डाक्टर धीरज चौकीदारसँ पुछैत छथि ।

"की जाने गेलिऐक सरकार? हम तँ रातिभरि एतहि पहरा दैत छलहुँ । ने ताला खुजल ने केओ आएल तखन शव गेल कतए?"-चौकीदार बाजल ।

"हम से सभ नहि जानी । जरूर तुहीं किछु गड़बड़ केलहक नहि तँ मुर्दा कतए जेतैक? ओ अपने तँ नहि चलि-फिरि सकैत अछि।" -डाक्टर बजलाह ।

आब एकटा नव समस्या ठाढ़ भए गेल । आरती तँ परेसान छलीहे । माधुरीक लासकेँ एहि तरहें गायब भए गेलासँ बाँकी रहल-सहल कसरि पूरा भए गेल । डाक्टर हुनकासभक संगे चिकित्सा अधीक्षकक कोठरीमे पहुँचलाह ।

अस्पताल प्रशासन माधुरीक लासकेँ तकबाक बहुत प्रयास केलक मुदा किछु हाथ नहि अएलैक । एहिबातसँ आरतीकेँ बहुत कचोट भेलैक । एक तँ माधुरीक मृत्यु भए गेल ,ऊपरसँ हुनकर लास सेहो बिला गेल छल । एहि झंझटिमे भोरसँ साँझ भए गेल मुदा किछु समाधान नहि भेल । सभ थाकि चकना-चूर भए गेल ।

सरकारी अस्पतालक तँ बाते गजब छलैक । सभ चीजकेँ चोरी होइत सुनने होएब, टाका-पैसा हराइत देखने होएब मुदा

शवगृहसँ लास लुप्त भए जाए से नहि सुनने होएब । मुदा एहिठाम सएह भेल रहैक । चारूकात लोक प्रयास केलक मुदा माधुरीक लासक कोनो अता-पता नहि भेटलैक। तखन डाक्टर धीरज अपने लगलाह। शवगृहक सभटा खाता उनटा गेलाह । एकठाम आबि कए हुनकर माथा ठनकल । जखन माधुरीक लास शवगृहमे राखल गेल छल ओही लग-पासमे एकटा आओर महिलाक मृत्यु भए गेल रहैक । ओकरो मृत्यु दुर्घटनेमे भेल रहैक । दुनू लास सटले शवगृहमे राखल छलैक । भोरे दोसर महिलाक संबंधीसभ आबि कए लास लए गेलैक । दोसर लास माधुरीक हेबाक चाही । मुदा छलैक ओ ओहि महिलाक लास । माने स्पष्ट अछि जे लासक अदला-बदली भए गेल रहैक ।

चिकित्सा अधिक्षककेँ सभ बातक जानकारी देल गेलनि। ओ पुलिस संगे किछु कर्मचारीकेँ रबाना केलाह । ओ सभ गोटे ओहि महिलाक गाम पहुँचलाह तँ पता लगलनि जे मुर्दाकेँ जरेबाक हेतु श्मशानघाट लए गेलैक । से सुनि कए सभक मोन छोट भए गेलैक । आरती आ सौरभक हालत बहुत खराप भए गेल छल । आरती बफारि तोड़ि रहल छलीह । सभगोटे चोट्टे श्मशान पहुँचलाह । संयोग रहैक जे मुर्दाकेँ स्नान कए नववस्त्र पहराओल जा रहल छलैक । ताबते पुलिस आ आओर लोकसभ ओतए पहुँचलाह । ओ सभ सभ बात गामक मुखिआकेँ कहलखिन । मुदा ओ तँ हिनके सभपर चिकरए लागल । ई बात सौंसे पसरि गेल । जे-से अस्पतालक कर्मचारीसभकेँ गरिआबए लागल । हालत बेकाबू होइत देखि मुखिआजी कहुना कए सभकेँ बुझेलखिन । मुर्दाकेँ ठठरीपरसँ उतारि पुलिसकेँ देल गेल । फेर ओ सभ अस्पताल बिदा भेल जाहिसँ असली लास आनि सकए । जे भेल,से भेल मुदा

माधुरीक लास भेटि गेलैक । एहिबातसँ आरतीकेँ बहुत संतोख भेलनि। आरो लोकसभ संतुष्ट रहथि जे चलू माधुरीक लास भेटि गेलनि ।

ओमहर गोवर्धनक हालतमे कोनो खास सुधार नहि भए रहल छलनि । हुनका आओर तँ जे भेल से भेल,माथमे बहुत चोट लगबाक कारण स्मृतिलोप भए गेल छलनि । अस्तु, कैक दिनक बाद जखन हुनका आइसीयूसँ बाहर निकालि वार्डमे राखल गेल तँ ओ ककरो चिन्हि नहि सकलाह ,किछु बाजि नहि सकलाह । लगैक जेना एकटा लोथरा खाटपर राखल अछि । हुनकर हालत देखि आरती बहुत दुखी रहथि । ककरो किछु फुरेबेक नहि करैक । डाक्टर कहलखिन जे हिनकर हालत सुधरबो करतनि कि नहि तकर कोनो ठेकान नहि कारण दुर्घटनामे माथाक भीतरी भाग क्षतिग्रस्त भए गेल छल ।

२१

माधुरीक लास तकबाक फिराकमे सभक ध्यान गोवर्धन दिससँ हटि गेल रहैक । तथापि डाक्टरसभसँ जे बनैत छल से प्रयास कए रहल छलाह । सभसँ गड़बड़ी ई भेल जे अस्पतालमे जाँचक हेतु देल गेल खून कोनो आन मरीजक खूनसँ अदला-बदली भए गेलैक । परिणाम ई भेल जे सभटा परिणाम उल्टा-पुल्टा भए गेल। जेहो बिमारी गोवर्धन केँ नहि छलनि सेहोसभ रिपोर्टमे देखा रहल छल । डाक्टरसभ परेसान छलाह । रच्छ कही जे डाक्टर धीरज समय रहिते गड़बड़ीकेँ पकड़ि लेलाह । ओ हुनकर पुरनका रिपोर्टसभ देखलखिन । ओहिमे मोटा-मोटीसभ ठीक-ठाक

छलैक। तखन एहन किएक भेल? ओ जाँचसभ दोबारा करओलथि। एहिबेरक रिपोर्टसभ एकदम अलग छल । ई तँ रच्छ भेल जे समयपर डाक्टर आबि गेलाह नहि तँ गोवर्धन गेल घर छलाह । ओनाहू हुनकर हालत खरापे चलि रहल छलनि । दुर्घटनासँ पहिनहु बिमारे छलाह । दोसर दिन भोरे कैकटा डाक्टरसभ हुनकर जाँच केलक । रातिमे अचानक हुनका फालिस मारि देलकनि । बामा कात एकदम सुन्न पड़ि गेल रहनि ।

अस्पताल प्रशासन एहि घटनासभसँ बहुत चिंतित छल । शवगृहमे राखल लासक अदला-बदली भए जाइ,प्रयोगशालामे लोकक खूनक सेम्पल बदलि जाइ ,एहिसँ बेसी जुलुम की भए सकैत छल? ककरो कोनो परवाहे नहि रहैक । जँ केओ किछु सुधार करबाक प्रयास करथि तँ कर्मचारी युनियन ओकर जिंदाबाद-मुर्दाबाद करए लगैक , ततेक ने हंगामा करैत जे लोककेँ अफसोच होबए लगितैक जे एहिमे किएक पड़लहुँ । जे होइत छैक से होइत रहौक । हमरा की? मुदा एहि बेर चिकित्सा अधीक्षक बहुत तामसमे रहथि । ओ पक्का निर्णय केलथि जे दोषी व्यक्तिकेँ दंड देबे करताह चाहे जे होइ । डाक्टर धीरजकेँ जाँच करबाक भार देल गेलनि । ओ दिन-राति एक कए दोषी व्यक्तिक पता लगओलनि । चारूकात ई बात पसरि गेल । लगैत छल जे दोषी व्यक्तिकेँ एहि बेर केओ नहि बचा सकत,दंड हेबे करतैक । मुदा आखिर युनियनबला सभक सेहो प्रतिष्ठा दावपर छलैक। अस्पतालमे हड़ताल भए गेल । देखिते-देखिते अस्पतालक वार्डसभ नर्क बनि गेल । कि ककरा सम्हारत? चारूकात चिकित्सा अधीक्षकक खिलाफ नारेबाजी होबए लागल । अस्पतालक किछु वरिष्ठ डाक्टरसभ सेहो युनियनकेँ हवा देबए लगलाह । असलमे ओहोसभ मौकाक ताकमे रहथि

जाहिसँ चिकित्सा अधीक्षकक बदली भए जाए । सरकारकेँ ई कहबाक मौका भेटैक जे हुनकासँ अस्पतालक संचालन ठीकसँ नहि भए रहलअछि । अस्तु,ओहोसभ गाहे-बगाहे युनियनबलाकेँ चुपचाप मदति करैत छलाह ।

ओना चिकित्सा अधीक्षक अपना भरि युनियनबलासभकेँ बहुत खातिर करैत छलाह । कर्मचारिसभक हितमे जँ कोनो बात कहल जाइक तँ तुरंत ओकरा मानि लितथि । एहिसभसँ हुनका मोनमे होनि जे ओ अस्पतालमे बहुत लोकप्रिय छथि । मुदा हड़तालक समयमे जखन ओ अस्पताल परिसरमे घुमैत रहथि तँ किछु युनियनक समर्थकसभ हुनका घेरि लेलक आ बिखिन-बिखिन गारिसभ पढ़ए लागल । ततबे नहि,केओ हुनका सौंसे माथमे कूड़ा लेपि देलक । हुनकर तामसक तँ अंते नहि छल । ओ डाक्टर धीरजकेँ बजा तुरंत मोकदमा करबाक आदेश देलखिन । डाक्टर धीरज लाख बुझेबाक चेष्टा केलथि मुदा ओ अड़ि गेलाह । हारि कए डाक्टर धीरज ओकिल साहेबक ओहिठाम पहुँचलाह । हुनका सभटा बात कहलखिन । दोसर दिन हड़ताली कर्मचारी आ नेतासभक खिलाफमे मोकदमा कएल गेल । मुदा तकर परिणाम बहुत भयावह भेल। हालत सुधरबाक स्थानपर बिगड़िते गेल । सभसँ मोसकिल तँ मनोरोगी विभागमे भेलैक । बहुत रास मनोरोगीसभ अस्पतालक अव्यवस्थाक फएदा उठबैत अस्पतालसँ भागि गेल । आब की होएत? के ककरा ताकत ? सरकार लग सभ बातक जानकारी गेलैक । कहबी छैक जे असगर बृहस्पतिओ झूठ । चारूकात हुनकर खिलाफ तेहन माहौल बनाओल गेल जे चिकित्सा अधीक्षकक बदली कए देल गेल । तकरबाद हड़ताल खतम भेल।

युनियन नेतासभ विजय जुलुस निकालैत गेल । लगैत जेना ओकरासभकेँ राज भेटि गेल होइ ।

मुदा हालत ततेक खराप भए गेल छल जे सामान्य स्थिति बहाल करबामे महिनो लागि गेल । एहि बीचमे कतेको मरीजसभक जान चलि गेल । जे समझदार छलाह से सभ तँ अपन आदमीकेँ अस्पतालसँ निकालि कोनो आन अस्पतालक रस्ता पकड़लाह मुदा गोवर्धनकेँ के कतए लए जाइत? हुनकर हालत ओहुना बहुत खराप छल । अस्पतालमे हड़ताल भए गेलाक बाद डाक्टर धीरज ओहीसभमे व्यस्त भए गेलाह । कहक माने जे गोवर्धन अनाथ भेल ओहि अस्पतालमे पड़ल रहथि । हुनकर हालत दिन-प्रतिदिन खरापे होइत गेल ।

२२

कहबी छैक जे विपत्ति करवनो असगर नहि अबैत छैक । सएह हाल आरतीक भए गेल रहैक । भावनगरसँ निकललाक बादो ओ बेर-बेर माएक देल चिठ्ठी पढ़ैत रहलीह । हुनकर माए सभदिनक हेतु कतहु लुप्त भए गेल छथिन से सूचना ओहि चिठ्ठीक माध्यमसँ भेटलनि । भने हुनका ओ बातसभ नहि बुझल छलनि । कम सँ कम उमीद तँ छलनि जे कहिओ ने कहिओ हुनका अपन जन्मदाता भेटथिन मुदा भेल उल्टे । तेँ कहल जाइत अछि जे अज्ञातकेँ फिराकमे नहि परक चाही । नियति किछु सोचिए कए एहन केने रहैत अछि । मुदा समस्या तखन होइत अछि जखन घमंडमे हम

नियतिक व्यवस्थाकेँ चुनौती देबए चलैत छी । बस ओएह कैक बेर जीवनमे विपत्तिक आमंत्रण दैत अछि । मुदा भावी प्रवल होइत अछि । जे हेबाक छैक से हेबे करतैक । से जँ नहि होइतैक तँ दुनिआ आइ किछु आओर रहैत ।

भावनगरसँ बाहर अबिते ओ गोवर्धनसँ भेंट करए नहि गेलि। मोनमे तामस रहबे करनि । सोचलथि जे सौरभक संगे फराके रहब । ताहि दिस प्रयास शुरुए केने छलि की ई दुर्घटनासभ भए गेल आ आब तकर अंते नहि बुझा रहल अछि । माधुरी मरि गेलखिन आ गोवर्धन मृतमान अस्पतालमे पड़ल छथि । करवन छथि करवन नहि तकर कोनो ठेकान नहि ।

ओहिदिन कैक दिनपर आरती सौरभसंगे अस्पतालसँ बाहर भेल रहथि । भेलनि जे हनुमान मंदिर जा कए हुनका प्रार्थना कएल जाए जाहिसँ किछु शांति भेटए ,आगूक रस्ता प्रशस्त होबए। हनुमान मंदिर पहुँचि दुनूगोटे हनुमानजीकेँ भरि मोन आराधना केलनि , हनुमान चालीसा पढ़लनि । तकरबाद प्रसाद लए वापस अस्पताल आबि गेलीह । अस्पतालक गेटेपर डाक्टर धीरज भेटलखिन । ओ कनी हरबराएल लगैत छलाह । हिनकासभकेँ देखिते कहैत छथि-

"हम तँ अहींसभकेँ ताकि रहल छलहुँ?"

"की बात?"-आरती पुछलखिन ।

"गोवर्धनकेँ एकाएक बहुत जोर हृदयाघात भेलनि । जाबे हमसभ पहुँची-पहुँची ताबे सभ खतम छल ।"

ई समाचार सुनिते आरती ठामहि खसलीह । सौरभ सेहो कानए लगलाह । डाक्टर धीरज बहुत मोसकिलमे पड़ि गेलाह । कहुनका कए हुनकासभकेँ अस्पतालमे गोवर्धनक शायिका धरि

लए गेलाह जतए हुनकर मृत शरीर उजरका ओढ़नासँ झाँपल राखल छल ।

२३

समय बहुत बलवान होइत अछि । समयक मारिसँ केओ आइ धरि नहि बाँचल । जे आइ उत्कर्षपर छथि कहि नहि कालि भेने कतए रहथि । अस्पतालमे इलाज करबए गेलाह गोवर्धन आ माधुरी तँ हुनका मदतिमे बिदा भेल रहथि । भेल उल्टा । माधुरी पहिने एहि दुनिआसँ बिदा भए गेलीह । गोवर्धन सेहो कोनो पाछा नहि रहलाह । हुनकर मोन तँ पहिनेसँ खराप रहबे करनि । बीचमे दुर्घटना सेहो भए गेल । बाँचल कसरि जे छल से अस्पतालक कर्मचारीक लापरवाहीसँ पूरा भए गेल । समयपर सही इलाज नहि हेबाक कारणे ओहो जलदीए एहि असार संसारकेँ छोड़ि गेलाह । आब रहि के गेलाह? शोक संतप्त आरती आ हुनकर भावी जीवन संगी सौरभ । बात ततबे रहैत तँ किछु समाधान होइत । किछु दिनमे समय फेर पटरीपर गुड़कए लागैत। मुदा से भेलैक नहि । एक-पर-एक दुर्घटना आरतीक मोनकेँ भीतरसँ हिला कए राखि देलकनि । ओ बेसीकाल गुमसुम रहए लगलीह आ जखन कखनो जँ कनिको काल लेल सुता जान्हि तँ स्वप्नलोकमे पहुँचि जाइत छलीह जतए तरह-तरहक नीक,बेजाए घटना-दुर्घटनासभ स्वतः घटित होइत रहैत छल ।

माधुरी आ तकर थोड़बे दिनक बाद गोवर्धनक मृत्युक घटनासँ आरती अवसादग्रस्त भए गेल छलीह । ऊपरसँ रागिनीक

पत्र पढ़ि हुनका मोनमे उठा-पठक रहबे करनि । मुदा करथि की ? ककरा ई बातसभ कहितथि आ कहिए कए की होबए बला छल , से चुप्पे रहि गेलथि । मुदा ओ गुम्मी बहुत घातक सिद्ध भेल । आरती बेसी काल आँखि मुनने रहैत छलीह । ककरा एतेक मतलब रहैक जे हुनकर अंतरमनमे पैसि देखैत जे बात की छैक? रहल सौरभक गप्प । ओ तँ अपना भरि लागले रहैत छलाह । तरह-तरहसँ आरतीकेँ बुझाबथि,उत्साहित करथि। मुदा आरतीक माथामे किछु जेबे नहि करनि । ताहि बातसँ सौरभ सेहो निराशामे समय बिता रहल छलाह।

गोवर्धन मृत्युसँ पहिने अपन संपत्तिक इच्छापत्र नहि बनओने रहथि । साइत सोचनो नहि हेताह जे एतेक जलदी हुनकर देहावसान भए जाएत । कोनो दस्ताबेजमे आरती हुनकर बारिस घोषित नहि कएल गेल रहथि,ने कतहु एहि बातक प्रमाण छल जे आरती हुनकर संतान छथि। परिणाम भेल जे गोवर्धनक संपत्ति कानूनी बिबादमे पड़ि गेल आ आरती ओकर किछु उपयोग नहि कए सकलीह ।

उत्थान-पतन सभक जीवनमे लागले रहैत अछि । मुदा जेहन हालमे आरती पहुँचि गेल रहथि से कमे लोककेँ होइत हेतैक। मुदा कहबी छैक जे अन्हेर गायक राम रखबार । सएह किछु भेलैक। अस्पतालमे हिनका लोकनिकेँ डाक्टर धीरजसँ भेंट भेलनि। आन केओ रहैत तँ बात बिसरि गेल रहैत । मुदा डाक्टर धीरज अलग धातुक बनल छलाह । कैक पुस्त पहिने हुनकर पुर्वज अपन पैतृक गामकेँ छोड़ि जीविका हेतु बाहर भेल रहथि । घुमैत-फिरैत ओ सभ दिल्लीमे व्यापार करए लगलाह। गाम-घरक चीज वस्तुकेँ दिल्ली आनि कए बेचथि । एहिमे बहुत फएदा होबए

लागल। कालक्रमे बहुत रास प्रवासीसभ आबि कए दिल्लीमे बसि गेलाह । मुदा हुनकासभक प्राण सदरिकाल अपन जन्मभूमिसँ जुड़ल रहल। आओर किछु नहि तँ तीलक अँचार,कुम्हरौरी,तिलबा,अमोट कीनि-कीनि अपन माटि-पानिसँ जुड़बाक प्रयास करैत छलाह । डाक्टर धीरजक पिता एहिसभ बस्तुकेँ अपन दोकानपर कतए-कतएसँ ताकि कए रखैत छलाह जाहिसँ केओ ग्राहक वापस नहि जाए । हुनकर एहि प्रयाससँ लोकसभ बहुत अनुग्रहित रहए । हुनकर यश चारूकात पसरि गेल।

एकदिन एहिना दिल्लीक प्रतिष्ठित मेडिकल कालेजक प्राचार्य दनौरी,तेलौरी कीनबाक हेतु आएल रहथि। ओहि समयमे धीरज दोकानेपर छलाह । दोकानक काजक संगे पढ़ितो छलाह । प्राचार्यजी पुछलखिन-

"की पढ़ि रहल छी?"

"मेडिकल प्रतियोगिताक तैयारी कए रहल छी?"

"बारहमामे कतेक नंबर छल ।"

“सतासी प्रतिशत ।"

"ओ! तखन अहाँ निश्चिंत रहू । हम अपना कालेजमे अहाँक नामांकन करबा देब । "

ई सभ गप्प चलिए रहल छल कि धीरजक बाबूजी ओतए पहुँचि गेलाह । ओ प्राचार्यजीकेँ पहिनेसँ जनैत छलखिन ।

"अहाँ हिनका काल्हि कालेज लेने अबिअनु । हिनकर नामांकन एमबीबीएसमे हम करबा देबनि ।"

धीरज आ हुनकर पिताक खुशीक अंत नहि छल । ओ सोचनो नहि छलाह जे एतेक आसानीसँ एहन कठिन काज भए जाएत । मुदा से भेल । एकरे कहैत छैक भावी ।

कालक्रमे धीरज डाक्टर भेलाह ,आ से नीक डाक्टरमे हुनकर मान्यता रहनि । जाहि तरहें भगवान स्वयं ठाढ़ भए हुनका मदति केलखिन आ अपन डाक्टरीक शिक्षा पूरा कए सकलाह से हुनकर मोनमे गड़ि गेलनि । ओ चाहथि जे किछु एहन करैत रही जाहिसँ समाजक हुनकर ऊपर एहि ऋणसँ मुक्ति भए सकनि । ओ स्वभावसँ उपकारी रहबे करथि । तेँ अस्पतालमे जे केओ परेसानीमे पड़ए ओकरा लोक हिनका लग पठा दैत छलनि । सभ एतबे कहैत -

"डाक्टर धीरज लग चल जाउ, सभ परेसानी दूर भए जाएत।"

आरतीकेँ सेहो एहने हालत छलनि । अस्पतालमे तँ डाक्टर धीरज मदति केबे केलखिन,तकरबादो ओ संपूर्ण शक्तिसँ हुनका लेल ठाढ़ भए गेलाह ।

एकदिन साँझमे ओ हनुमान मंदिर गेल रहथि । ओतहि आरती भेटि गेलखिन । सौरभ ताबे नीचा गेल रहथि ।

"केना छी?"-धीरज पछलखिन ।

"ठीक नहि छी।"

"से किएक?"

"जहिआसँ ओ सभ गेलाह राति-राति भरि निन्न नहि होइत अछि । टकटकी लागल रहैत अछि ।

जौँ करवनो आँखि लागिओ गेल तँ कहि ने की-की सपनाइत रहैत छी ।"

"इहो एक प्रकारक बिमारी थिक । अहाँकेँ मनोचिकित्सकसँ देखेबाक चाही ।"

"कथी-कथी करैत रहब । कतेको लोक कतेक रस्ता सभ बतबैत रहलाह । मुदा किछु फएदा नहि भेल ।"

२४

"आब तँ जे हेबाक छलैक से भए गेलैक । दुखक तँ बात भेवे केलैक मुदा दिन-राति सएह सोचैत रहलाह सँ किछु होअए बला नहि अछि । हमर बात मानू । दिल्ली चलैत छी । स्थान परिवर्तन भेलासँ मोनो बदलैत अछि ।"-सौरभ आरतीकेँ कहलखिन ।

"हमरा तँ किछु नीक नहि लागि रहल अछि । जहाँ आँखि मुनैत छी की बितलाहा बातसभ एक-एक कए आँखिक सामनेमे नाचए लगैत अछि ।"

"जे बात बीति गेलैक तकरा बारेमे कतबो सचबैक किछु होबए बला नहि अछि । समाधान तँ प्रयासे केलासँ होएत । मानलहुँ जे अहाँकेँ कैकटा आघात लागल मुदा तकर की उपाय अछि? बिधाताक डाङ बुझि सहि जेबाक अतिरिक्त आओर कोनो रस्ता नहि अछि । जा धरि पटनामे रहब ,एहिना होइत रहत । एहि सहरकेँ तिलांजलि दी आ आगू बढ़ि चली । दुनिआ बड़ीटा अछि । जाबे आगू नहि बढ़लहुँ ताबते परेसानी अछि ।”

" जे अहाँक विचार ।"

"हम टिकटक जोगार करए टीसन जाइत छी ।"-से कहि सौरभ टीसन दिस बिदा भए गेलाह । आरती अपन कोठलीमे चलि गेलीह । ओहि मकानक देबालसभ हुनका कटैत छलनि । लगैत

जेना चारूकातसँ बरछी भोकि रहल अछि ।जेना केओ कहि रहल हो-"तूँ नीक नहि केलह आरती । तोरा हुनका लोकनिक संग नहि छोड़बाक चाहैत छलह ।

आरती सोफापर बैसल रहथि कि घंटी बाजल । ओ खिड़कीसँ हुलकैत छथि ।

"ई तँ डाक्टर धीरज लागि रहल छथि । ई किएक आएल छथि?"-आरती इएहसभ सोचैत रहि गेलीह। केबार नहि खोलि सकलीह । धीरजकेँ चिंता भेलनि । ओ जोरसँ केबार ढकढका देलथि । केबारपर जिञ्जिर नीकसँ नहि लागल छल । छिटकनी नीचा सड़कल ।आ केबार खुजि गेल ।

एमहर धीरज घरमे पैसले छलाह की पाछुए लागल सौरभ टिकट लेने आबि गेलाह । हुनकर ध्यान धीरजपर पड़ैत छनि । धीरज सेहो हुनका देखैत छथि । किछुकाल हेतु जेना ओहिठाम मौन पसरि गेल । ओहि मौनकेँ बाधित करैत आरती बजैत छथि-

"भेटि गेल टिकट की?"

"बहुत मोसकिलसँ भेटल । टिकट खिड़कीपर तँ भयानक भीड़ छलैक ।"

"फेर केना भेटल?"

"एकटा परिचित भेटि गेलाह । ओएह मदति कए देलनि ।"

"कहिआक टिकट अछि?"

"परसू भोरेक ट्रेन छैक ।"

“ठीक छैक ।"

आरती आ सौरभकेँ एहि तरहेँ गप्प करैत सुनि डाक्टर धीरजकेँ उत्सुकता भेलनि-

"कतए जा रहल छी?"

"दिल्ली जेबाक सोचि रहल छी ।"

"मुदा एहिठामक घरक की हेतैक?"

"पहिने जान बाँचत तँ आओर चीज-वस्तु देखल जेतैक ।- सौरभ बजलाह ।

"से की?"

"देखैत नहि छी जे हिनकर की हाल छनि?"

सभ बात बुझितो जेना धीरज अनजान बनल रहथि । फेर कहलखिन-

“दिल्ली जा कए अपन पता पठा देब तँ ओहिठाम भेंट-घाँट होइत रहत ।"-सौरभ कहैत छथि ।

“से कोना?”

"हमरो दिल्ली बदली भए गेल अछि । भए सकैत अछि जे किछु दिनक बाद हमहु ओतए आबि जाइ।"-डाक्टर धीरज बजलाह ।

"ई तँ बहुत बढ़िआ होएत ।”

२५

मनुक्खक बहुत रास इच्छा-आकांक्षा मोने दबल रह जाइत छैक । आर्थिक,सामाजिक विवशता ओकर मनोरथकेँ साकार होबएसँ रोकि दैत छैक । भावना आ महत्वाकांक्षा ककरामे नहि होइत छैक? गरीब सँ गरीब अपन संतानमे ओ सभ देखए चाहैत अछि जे ओ स्वयं नहि प्राप्त कए सकल । तेँ ने ओ अपन

संतानसभक नाम लक्ष्मी,कुबेर रखैत अछि । ओ तँ ओकर मोनमे सुसुप्त महत्वाकांक्षाक प्रतिविम्व मात्र होइत अछि । मुदा परिस्थितिसँ मजबूर केओ अपन खिज्जा संतानकेँ चरबाही करबए लगैत अछि । केओ दिल्ली-पटना पठा दैत अछि जतए ओ पैघ लोकक नेरकम करैत रहैत अछि ।

अभाव आ संघर्षसँ भरल एहि दुनिआमे सौरभक हालत सेहो कमोवेश ओहिना भए गेल रहनि । सदरिकाल अपन आस्तित्वक रक्षार्थ प्रयत्नशील रहलाह । जे संभव प्रयास भए सकैत छलैक से करैत रहलाह । मुदा परिणाम की भेल ? ओ तँ एहिना असंतुष्ट,अभावग्रस्त,घुमि रहल छथि । आरतीक तँ कथे कोन ? गोवर्धन आ माधुरी हुनकर माता-पिताक रूपमे तँ रहबे करथिन । प्राणप्रनसँ हुनक पालन-पोषण ओ सभ करैत गेलाह । मुदा आरती नियतिवश रने-बने बौआइत रहि गेलीह । बात एतबेपर नहि रूकल । रागिनीक अता-पता तँ नहिए छलनि । हालत तेहन भेल जे आइ ने गोवर्धन छथि ने माधुरी ।

आरती सौरभसंगे दिल्ली आबि तँ गेलीह मुदा भूतकालमे घटित घटनासभ हुनकर जान नहि छोड़लकनि। कैक बेर ओ पश्चाताप,ग्लानिसँ भरल प्रायश्चित करबाक सोचथि तँ कैक बेर घोर निराशामे अवसादग्रस्त भए जाथि । हुनकर एहि मनोदशाकेँ डाक्टर धीरज बुझैत छलखिन । मुदा मोनक समस्याक इलाज भौतिक धरातलपर एतेक आसान नहि अछि । चाहिओ कए बहुत किछु नहि कए पाबि रहल छलाह धीरज । उलटे हुनकर बेर-बेर आरतीक डेरापर आएब सौरभक मोनमे सक उतपन्न कए देलक ।

'"बात की छैक? कहीं इहो आरतीक चक्करमे तँ नहि पड़ि गेलाह?"-सौरभ मोने-मोन सोचथि ।

दिल्ली आबि कए सौरभ काजमे लागि गेलाह । आरती सेहो किछु-किछु करए लगलीह । मुदा हुनकर मोन स्थिर हेबे नहि करनि । किछु करए लगितथि मोन वापस भूतकालमे पहुँचि जाइत छलनि । एहनमे कोनो काज केना होइत? से ओ असफल होइत गेलीह । हुनकर अवसाद बढ़िते गेलनि । एकदिन जखन सौरभ काजपर गेल रहथि तँ डाक्टर धीरज आरतीक हाल-चाल लेबए अएलाह । आरतीकेँ देखि डाक्टर धीरज गुम पड़ि गेलाह ।

"हिनकर हालत तँ बहुत तेजीसँ खराप भेल जा रहल छनि । पुछबो केलखिन जे एना किएक भेल छथि? मुदा आरती किछु नहि बाजथि । बाजिए की सकैत छलीह? डाक्टर हुनका अस्पताल चलबाक आग्रह केलखिन । आरति ना-नुकुर करैत रहलथि । मुदा डाक्टर नहि मानलखिन ।

"एना तँ अहाँ एकदिन चुपचाप चलि जाइत रहब आ ककरो पतो नहि चलत ।"

"तँ की हेतैक? हम जीबिओ कए कोन पहाड़ तोड़ि रहल छी ?"

"एना नहि सोचबाक चाही ।"-से कहि जेना-तेना आरतीकेँ ओ अस्पताल आनि मनोरोगी विभागक डाक्टर ओहिठाम लए गेलाह । मनोचिकित्सक ओहिठाम आरती तेहन संच-मंच रहथि जे डाक्टर केँ किछु नहि बुझाइक जे हिनका एहिठाम किएक आनल गेलनि । ओ पुछबो केलखिन-

"ई तँ एकदम ठीक छथि तखन हिनका एहिठाम किएक आनल गेलनि?"

"ठीक नहि छथि । ई अखन भगल केने छथि ।" -से सुनितहि आरती कानए लगलीह । मनोचिकित्सक बहुत ध्यान दए

आरतीक समस्याक बारेमे हुनकासँ चर्चा केलथि । हुनका आब अंदाज लगलनि जे किछु गड़बड़ तँ छैक ।

"हिनकर इलाज लंबा चलत । सुधार हेतु जरूरी अछि जे हिनकर ध्यान माए रागिनीसँ हटनि । हिनका मोनमे ओ धसल छथिन । आओर-आओर घटनासभ हिनकर मोनकेँ गछाड़ि लेने छनि । तकरा हेतु परिस्थिति अनुकूल होएब बहुत जरूरी अछि । ताहि हेतु परिवार आ इष्ट-मित्रक पूर्ण सहयोग जरूरी थिक।"

मनोचिकित्सकक परामर्श सुनि धीरज चिंतित भए गेलथि।

२६

सामान्यतः मनोरोगीकेँ ई बात नहि बुझाइत छैक जे ओकरा बुते किछु असामान्य कएल जा रहल अछि। से जँ होइतैक तँ ओ मनोरोगी होइते नहि । ई बात तँ केओ तेसरे आदमी बुझि सकैत अछि । मुदा एतेक समय ककरा रहैक जे आरतीक हाल-चाल लैत रहैत । संयोग भेलैक जे डाक्टर धीरजकेँ एकर एहसास भेलनि मुदा ओहो कतेक की कए सकताह? सौरभ नौकरीमे लागि गेल रहथि । नहि नौकरी करताह तँ दिल्ली सन महानगरमे कथी पर ठाढ़ रहताह । आरतीकेँ सेहो हुनके बले काज चलैक । आरती आ सौरभ दिल्लीमे अगल-बगल कोठरी किरायापर लेने छलाह, मुदा नामेक लेल ।

डाक्टर धीरजकेँ नहि बूझएमे अएलनि जे हुनका करवन माधुरीसँ एतेक लगाव भए गेलनि जे डेरा पर होथि की अस्पतालमे

ओ माधुरीक चिंतासँ परेसान भए जाइत छलाह । ओ भोरे ठोकले माधुरीक डेरापर पहुँचि जाइत छलाह आ ओकरा लए कए अस्पताल मनोरोग विभाग आनैत छलाह । फेर वापस ओकरा डेरा पहुँचबैत छलाह । डाक्टरक पुर्ची लए दबाइ कीनैत छलाह । आब समस्या छलैक जे दबाइ ओ खेतीह कि फेकि देथिन। एकर की उपाय छलैक? सौरभकेँ कहब जरूरी छलनि,से यथासंभव बुझेलखिन ।

मुदा ओहि दिन जखन सौरभ नौकरीपरसँ वापस अएलाह आ डाक्टर धीरजकेँ आरती संगे हँसी-ठठ्ठा करैत देखलखिन तँ सौंसे देहमे आगि लागि गेलनि । हुनका पहिनेसँ कनी-मनी सक रहबे करनि । धीरज सोचने रहथि किछु आ भेल किछु आओर । सौरभ घरमे पैसते धीरजपर तमसा गेलथि ,तरह-तरहक आरोप लगाबए लगलाह । चिकरा-भोकरीमे आरतीक मोनमे की भेलनि की नहि ,ओ बिना ककरो किछु कहने डेरासँ निकलि गेलीह । जाबे एहि दुनूगोटेकेँ से बुझेलनि ताबे तँ ओ बहुत दूर जा चुकल रहथि । ओहिठामसँ आरती भागलि तँ मुदा जेतीह कतए? सड़कक काते-काते चलैत-चलैत कोमहर बिला गेलीह से नहि कहि ।

आब की होएत? सौरभ आ धीरज एक-दोसर पर आरोप-प्रत्यारोप लगबैत रहलाह । गलती जकर रहल हो मुदा परिणाम तँ इएह भेल जे आरती आओर परेसानीमे पड़ि गेलि आ ठेकाना छोड़ि अज्ञात रस्ता पर चलि पड़लि।

सौरभ आ धीरज दुनूगोटे जेमहर-तेमहर आरतीकेँ ताकए लगलथि । मुदा किछु फएदा नहि भेलनि । आरती झटकारि कए पाछूबला सड़कपर आबि गेलीह । संयोगसँ हुनकर इलाज कए

रहल मनोचिकित्सक डाक्टर घोषाल ओहि ठाम रिक्सासँ जाइत आरतीकेँ देखलखिन । ओ तँ मनोचिकित्सक छलाह। तुरंत बुझि गेलखिन जे मामला गड़बड़ अछि । ओ रिक्सासँ ठामहि उतरि गेलाह ।

"आरती! आरती! -आबाज देलखिन । हुनकर आबाज सुनि आरती ठमकि गेलि ।

"की बात? एना किएक अपसिआँत छी ?"

"आरतीसभटा बात बकि देलनि । डाक्टर घोषाल आश्चर्यमे पड़ि गेलाह जे ओ केना एतेक स्पष्टतासँ सभबात बाजि रहल छथि । हुनका पूर्ण विश्वास भए गेलनि जे आरती मनोरोगी नहि छथि अपितु ओ कोनो बातसँ बहुत परेसान छथि । ओ आरतीकेँ अपना संगे चलबाक आग्रह केलथि । आरती से तुरंते मानि गेलि ।

डाक्टर घोषाल कोलकाताक रहनिहार छलाह । हुनकर पिता दिल्ली सचिवालयमे नौकरी करैत छलखिन। सेवानिवृत्तिक बाद ओ कोलकाता वापस चलि गेलाह आ थोड़बे दिनक बाद ओतहि हुनकर मृत्यु भए गेलनि । हुनकर पिता नौकरीक समयमे दिल्लीमे घर बनओने रहथि । डाक्टर घोषाल असगर रहथि ,ने भाए ने बहिन । दिल्लीमे डाक्टरी पढ़ि ओतहि नौकरी करए लगलाह । संगहि पैतृक संपत्तिक देखरेख सेहो करथि । हुनकर वयोवृद्ध माता संगे रहथिन । डाक्टर घोषाल छत्तीस सालक भए गेल रहथि मुदा रहथि कुमारे । माए बहुत कहथिन जे आब बिआहमे देरी नहि हेबाक चाही मुदा कहि नहि हुनकर मोनमे की रहनि? ओ किछु-किछु कहि बातकेँ टरका दैत छलाह ।

ओहि साँझ जखन घोषाल आरतीक संगे घर अएलाह तँ हुनकर माएक प्रसन्नताक अंत नहि छल । हुनका भेलनि जे आखिर घोषाल हुनकर बात मानि लेलाह । आरतीकेँ बहुत सिनेहसँ लगमे बैसेलथि । चाह-पान,जलखैक ओरिआन केलनि । घोषालकेँ बुझेबे नहि करनि जे ओ एतेक प्रसन्न किएक छथि ? हुनकर माए पुछलखिन-

"ई कनिआ बहुत नीक बुझाइत छथि । पंडितजीकेँ बजा कए बिआहक दिन ठीक कए लएह ।"

"ऐँ! की कहि रहल छी? ई हमर कनिआ नहि छथि।"

"तँ के छथि? एना रातुक पहर किएक लेने आएल छिअनि?"

"ई बहुत परेसान छथि । तेँ बेसी सबाल-जबाब नहि करू। बादमे सभटा बात बुझा देब ।"

कनीक आश्वस्त भेलाक बाद घोषाल धीरजकेँ फोन केलखिन ।

"आरती हमरा ओहिठाम छथि?"

"हमसभ तँ हुनका ताकि-ताकि कए परेसान भेल छी ।"

"चलू भेटि गेलीह नहि तँ पता नहि कतए चलि जइतथि?"

"अखन ओ केना छथि?"

" पूर्ण ठीक छथि । हम कहलिअनि जे जँ कही तँ अहाँकेँ अपन डेरा पहुँचा दी। मुदा ओ ओहिठाम वापस जेबाक हेतु तैयार नहि छथि ।"

"कोनो बात नहि । कम सँ कम भेटि तँ गेलीह आ ठीको छथि, तखन कोनो चिंताक बात नहि । "

"ठीक नहि, एकदम ठीक छथि । हुनका कोनो मनोरोग नहि छनि । बस ओ मानसिक तनावमे रहैत-रहैत एहन भए गेलीह ।

हुनका दुनूमे गप्प भइए रहल छल कि फोन सौरभ पकड़ि लेलथि ।

"हम सौरभ बजैत छी । आरतीक हाल कहू ।"

"ओ अहाँसभसँ बहुत तमसाएल छथि । हम बहुत प्रयास केलहुँ जे हुनका अपन डेरा पहुँचा दिअनि मुदा ओ हरगिज तैयार नहि भेलीह । एहिठाम अबितहि हुनकर मोन ठीक लागि रहल छनि। तेँ हमहु बहुत जोर नहि देलिअनि ।"

"ठीके केलहुँ । ओ कतहु रहथु, सुखी रहथु ।"-से कहैत-कहैत सौरभक आँखि नोरसँ भरि गेलनि । आबाज भारी भए गेलैक। लगलैक जेना गला बाझि गेल छैक ।

"की भेल?"-घोषाल पुछैत छथि ।

"किछु नहि।"-से कहि सौरभ फोन काटि देलथि ।

नीक भेलैक,बेजाए भेलैक मुदा आरती ओहि राति घोषालक ओहिठाम रहि गेलीह । राति भरि घोषालक माए हुनका संगे तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत रहलीह । जखन भोरुकबा उगि गेलैक तँ घोषालक निन्न टुटलनि । तखनहु दुनूगोटेकेँ फुसुर-फुसुर करैत देखि घोषालकेँ नहि रहल गेलनि । ओ केबारक औढ़मे ठाढ़ भए गेलाह । दुनूगोटेमे जबर्दस्त गप्प-सड़ाका चलि रहल छल। लगबे नहि करैक जे ओ ओएह आरती छथि । घोषाल चुप-चाप सभ सुनैत रहलाह,देखैत रहलाह, मोने-मोन सोचैत रहलाह-

"गजब सुंदरि छथि ई । लगैत अछि जेना सौंदर्यक बरखा भए रहल अछि ।"

कनीके कालमे ओहि कोठरीमे खटपट भेलैक। घोषाल इएह-ले, ओएह-ले ओहिठामसँ घसकि गेलाह ।

राति बहुत भए गेल रहैक । बाहर मौसम बहुत खराप भए गेल रहैक । बरखा जोर धेलक से रुकबाक नामे नहि लैत छल । तथापि घोषालसँ आरतीक समाचार सुनलाक बाद धीरज अपन घर वापस चलि गेलाह । मुदा सौरभ बहुत परेसान रहथि । हुनका किछु खेबाक इच्छा नहि भेलनि । एक गिलास पानि पीबि ओछाओनपर चलि गेलाह। मुदा कतबो व्योंत करथि मोन आरतीपरसँ हटबे नहि करनि । "कहि नहि घोषाल केहन आदमी छथि? कहि ने रातिभरि आरती कोना रहतीह ? तरह-तरहक बातसभ सौरभक मोनमे घुमि रहल छल ।" ओ करोट बदलैत रहि गेलाह । एकहु क्षण निन्न नहि भेलनि ।

२७

“धीरज तँ पहिनेसँ आरतीक फिराकमे छलाहे । घोषाल कतएसँ आबि गेलाह? -ई सभ सोचि-सोचि सौरभ घोर निराशामे पड़ि जाइत छलाह । कहबी छैक जे हाथक कौर मुँहमे पहुँचि जाए तखन ने? सौरभकेँ सएह हाल भेल रहनि । सभक मोन सभ रंग रहैक मुदा आरतीकेँ दुनिआ फराके रहैक । ओ एहन दुनिआ छल जाहिमे ओकर जन्मदाता ,रागिनी,हरा गेल रहैक । जतए ओकर पालन केनिहार आ जिनका ओ सभदिन माता-पिता मानैत रहलीह,से ओकरा छोड़ि एहि संसारकेँ छोड़ि चलि गेलाह । आब

जे सभ बाँचल छथि,आ जे आरतीक फिराकमे छथि तिनकर कोन ठेकान ? कहि नहि कहिआ ओ सभ अपन रस्ता बदलि लेताह?

आरती आँखि मुनैत छलीह आ स्वप्नलोकमे पहुँचि जाइत छलीह जतए हुनकर भेंट रागिनीसँ होइत छलनि,जतए गोवर्धन आ माधुरी अखनहु आरतीक हेतु हाकरोस करैत रहैत छलाह । ओहि स्वप्नलोकक कोनो कोनटापर एकटा युवक सेहो कखनो कए ठाढ़ देखाइत छलनि मुदा आरती हुनका नीकसँ चिन्हि नहि पाबि रहल छलखिन। थोड़बे कालमे बहुत जोरकेँ अन्हर उठैत अछि । घटाटोप मेघ संपूर्ण आकासकेँ आच्छादित कए लैत अछि । एकहु डेग रस्ता नहि सुझैत अछि । कनीके कालमे बहुत जोर बरखा शुरु होइत अछि । ओहि युवकक आकृति अदृश्य भए जाइत अछि ।

एहिना बेर-बेर होइत अछि । डाक्टर घोषालकेँ आरतीक एहि मनोदशाक अनुमान तखन भेल रहैक जखन हुनका अपना ओहिठाम लए गेल रहथि । ओ नीकसँ बुझि गेलाह जे आरतीकेँ दैबक डाङ पड़ल छैक जे केओ बुझि नहि पाबि रहल अछि,जकर कोनो इलाज ककरो लग नहि छैक । लोकसभ किछु-किछु अनुमानक आधारपर समाधानक निश्फल प्रयास करैत अछि आ अंततोगत्वा आरतीकेँ मनोरोगी घोषित कए देल जाइत अछि । मुदा आखिरमे घोषालेक अकिल काज केलक आ ओ असलिअत बूझि सकलथि ।

२८

घोषाल अपन हाल तेहन बना लेलेथि जे कोनो मनोरोगी हुनकासँ पाछा रहि जाएत । अस्पताल जाथि जरूर मुदा रोगीकेँ देखबाक बदलामे दिन-राति आरतीक बारेमे सोचैत रहैत छलाह। ओमहर धीरज तँ अपसिआँत रहबे करथि । ओ सभ तरह-तरहसँ आरतीकेँ फुसलेबाक प्रयास करैत रहलाह । अपना मोनमे कैक बेर भ्रम सेहो होनि जे आब आम पाकहिबला अछि । एहने समयमे सरकारी काजक संदर्भमे घोषाल आ धीरज कोलकाता जाए पड़लनि । ओ सभ गेल तँ छलाह तीन दिनक हेतु मुदा रहि गेलाह दस दिन धरि । दुनूगोटे सरकारी अतिथिगृहमे रहथि । सरकारी काज समाप्त भए गेलाक बादो ओ सभ ओतहि अटकल रहथि । तकर प्रमुख कारण रहैक जे हुनकासभकेँ बहुत दिनक बाद नव वातावरण भेटलनि जाहिसँ मोनमे उसास बुझाइनि। दिनभरि ओ सभ यत्र-तत्र भ्रमण करथि,पार्कसभमे घुमल करथि । एहिसभसँ हुनकरसभक मोन हल्लुक भेलनि ।

ओहीक्रममे एकदिन ओ सभ कोलकाताक प्रसिद्ध बोटानिकल गार्डेन गेलाह । ओहिठामक विशाल बरगदक गाछ देखलथि । यद्यपि ओहिगाछक जड़ि कटि गेल छैक तथापि स्वभाववश ओ चारूकात लतरले जा रहल छल । इएह हाल लोकक मोनक अछि । ओ संसारमे मोहवश पसरैत जाइत अछि मुदा जड़िसँ कटल । ओहिठामसँ ओ सभ नाओसँ हुगली नदी पार करबाक योजना बनओलथि । संयोगसँ एकटा नाविक नाओ लेने

ओहिठाम भेटिओ गेलनि । हुनकासभकेँ लेने नाओ हुगली नदीमे आगा बढ़ल । चारूकातक मनोरम दृष्य देखि ओ सभ दंग रहथि । किछुकालमे नाओ बीच धारमे पहुँचि गेल छल । पानिक बहाव बहुत तेज छल । एतबेमे ओ नाओ भयानकरूपसँ हिलए लागल । लाख प्रयासक बाबजूद नाओ स्थिर नहि भए सकल । क्रमशः ओहिमे पानि भरैत गेल । नाविक सभ प्रयास कए थाकि गेल मुदा ओ डुबए लागल से डुबिते गेल । ओ अपने नदीमे कुदि गेल आ हेलि कए अपन जान बचओलक । मुदा घोषाल आ धीरजमे सँ ककरो हेलए नहि अबैत छल । देखिते-देखिते दुनूगोटे डुबि गेलाह। नाओ डुबि जेबाक समाचार बिजलओका जकाँ चारूकात पसरि गेल । सरकारी अधिकारीसभमे हरकंप मचि गेल । गोताखोरसभ नदीमे फानि गेलाह,हुनकासभकेँ तकबाक हेतु बीचधारमे डुबकी लगबैत रहलाह । मुदा कतहु किछु नहि भेटल। दुनूगोटेक किछु पता नहि चलि सकल ।

एहि तरहें आरतीक दुनू शुभेच्छुक असामयिक अंत भए गेलनि मुदा ओ किछु नहि बूझि सकलीह । हुनकर मोनमे बहुतदिन धरि जिज्ञासा बनल रहलनि जे आखिर ओ सभ कतए चलि गेलाह? मुदा ककरासँ पुछितथि,के कहितनि? सौरभकेँ लेल धनिसन । “जतए गेलाह,जे भेलनि हमरा की ?”-ओ सोचथि । अंततोगत्वा, ई सभ हुनकर मोनमे दबले रहि गेल ।

२९

जे बिमार रहत से ने इलाज कएलापर ठीक भए जाएत? आ जे ठीके अछि तकरा इलाजक की असर हेतैक ? भए सकैत अछि दबाइक उल्टे प्रभाव भए जाइ । विलंबेसँ सही मुदा आब ई अविआस सौरभोकेँ भए गेल रहनि जे आरतीकेँ कोनो बिमारी नहि छनि । ओ आंतरिक रूपसँ परेसान छथि । ओ जाहि कष्टसँ गुजरि रहल छथि तकर ककरो अंदाज नहि छैक । जखन कखनो आरती खाली रहथि,एकांतमे रहथि तँ अपन मोनक बात लिखने जाथि । ककरो ओहि बातक जानकारी नहि रहनि । ओहिदिन जखन ओ भागल रहथि आ कतहु हुनकर किछु पता नहि चलैत रहए तँ सौरभ परेसान भए हुनकर कोठरीक सभकिछु उल्टा-पुल्टा कए देखने रहथि,साइत किछु अंदाज लागनि,किछु जानकारी भेटनि । ओहीक्रममे हुनका एकटा डायरी भेटलनि । ओहिमे सुंदर-सुंदर अक्षरमे आरती अपन मोनक बातसभ लिखने रहथि । सौरभ ओहि डायरीक पहिले पन्ना पढ़ैत-पढ़ैत व्याकुल भए गेलाह । हुनका अंदाज नहि रहनि जे आरती हुनकासँ एतेक प्रेम करैत छथि । ततबे नहि ओ हुनकासँ विआह कए जीवन पर्यंत संगे रहए चाहैत छथि। ताहिसँ पहिने अपन माएकेँ ताकि लेबए चाहैत छथि । मुदा हुनकर जन्मदाता,रागिनीक ठेकान के देत? कोनो जानकारी नहि छलनि । डायरीमे आगा ओ पढ़ैत छथि -

"सौरभ हमर जीवन छथि । हुनका बिना हम नहि रहि सकैत छी । कहिआसँ सोचैत छी जे हमर जन्मदाता रागिनी भेटि जइतथि तँ निश्चिंत मोनसँ सौरभक संगे बिआह कए अपन घर-

गृहस्थी चलबितहुँ । मुदा से होएत कहिआ? कतेक समय निकलि गेल?

सौरभकेँ डायरीक ओ पन्ना पढ़ैत-पढ़ैत निन्न लागि गेलनि। थोड़बे कालमे ओ सपना रहल छलाह-

"आरती आबि गेलीह, आरती आबि गेलीह ।'

समयक प्रभावसँ केहनो घाव भरि जाइत छैक । केहनो अन्हरिआ राति होइ,भोर हेबे करैत छैक । सुखाएल डारिमे नवपल्लव लागि जाइत छैक । मज्जरसँ भरल गाछ देखि केओ नहि कहि सकैत अछि जे ई ओएह गाछ अछि जे किछु दिन पहिने धरि पत्रहीन छल । आइ ओएह गाछ संपन्न अछि । हरिअर कंचन ओकर नव पल्लवसभ मह-मह कए रहल अछि । इएह जीजिविषा मनुक्खकेँ एहि पृथ्वीपर लाखों बरखसँ बचओने आबि रहल छैक ।

समयक संगे आरतीक मोन सेहो हरिआएल । हुनकामे नवजीवनक संचार भेलनि। ओ मोने-मोन निश्चय केलीह जे आब बिना विलंबकेँ सौरभ संगे बिआह कए लेतीह । आ दोसरदिन भोरे जखन सौरभ भफाइत चाह लए हुनका लग अएलाह तँ आरती कहैत छथि-

"आब हमरा लोकनि एना कतेक दिन रहब? "

" सही कहैत छी । आब विलंब उचित नहि । सभकिछु अनुकूल भए जाएत से करवनहु ककरो लेल संभव नहि होइत छैक। परिस्थितिसँ सामंजस्य बैसाएब जरूरी अछि । सही समयपर सही निर्णय जरूरी अछि अन्यथा हमसभ देखिते रहि जाएब आ समय हाथसँ निकलि जाएत ।"

"एकदम सही सोचि रहल छी । मनुक्खकेँ अपन रस्ता स्वयं बनाबक होइत छैक । जे भेलैक से भावी छलैक ,ताहिपर

हमरा लोकनिक हाथ-बाट नहि चलि सकैत छल । मुदा सएह सोचि-सोचि हमसभ बैसल रहि जाएब ताहिसँ किछु नहि प्राप्त भए सकैत अछि । चलू , हमसभ एखने मंदिर चलैत छी ।”

ओ सभ ठोकले दिल्लीक प्रसिद्ध बिरला मंदिर पहुँचलाह । मंदिरक पंडा किछु मंत्र पढ़ैत छथि । बिआहक बिधसभ संपन्न भए जाइत अछि । आरतीक माङमे सौरभक भरल सिंदूरक सौंदर्य देखैत बनैत छल ।

जीवनचक्र आगू बढ़ैत अछि । हुनकर बिआहक सालेभरिक अंदर हुनकर पत्नीकेँ संतान भेलनि।

"जँ अस्पतालक सिस्टर चिचिआइत बाहर आएलि- "अहाँकेँ बेटी भेल अछि । मधुर खुआउ ।"

"बहुत नीक समाचार ।"-से कहि सौरभ अपन जेबीमे हाथ देलनि आ जतेक टाका निकललनि सभटा ओहि सिस्टरकेँ दए देलखिन । लग-पासमे जतेक लोकसभ छल सभ ओहि नेनाकेँ देखि मंत्रमुग्ध छल । सभ एकहिटा बात बजैत छल- “अनमन भगवतीसन लगैत अछि ।”

बेटी तँ रत्ने होइत अछि ।"-सौरभ कहलखिन । तेँ ओकर नाम रत्ना राखल गेल । बच्चाक जन्मक बाद सौरभ आारतीक गृहस्थी बहुत आनंदसँ चलए लागल । बच्चाक जन्मक बात हिजरासभकेँ पता लगलैक । की कहू जे ओ सभ की हंगामा केलक। सौरभकेँ चारूकातसँ घेरि लेलक । नाना प्रकारक गीत-नादसभ करैत रहल । लग-पासक लोकसभ से जुटि गेल रहए । सौरभ जतेक टाका निकालथि तकर कैकबर ओ सभ मांगैत छल । जे होउ मुदा हुनका ई सभ बहुत सोहनगर लगैत छलनि । जैँ शुभ भेल तेँ ने ईहो सभ आएल अछि । किछु काल एहिना उठा-पटक

चलैत रहल । अंतमे जे ओ सभ मंगलकनि से सौरभ दए देलखिन। एहि तरहे मास-दूमास-तीन मास देखिते-देखिते बिति गेल ।

थोड़बे दिनक बाद हुनका सरकारीक नौकरी लागि गेल रहनि। दिल्लीक प्रतिष्ठित लोधी कालोनीमे सरकारी डेरा भेटि गेलनि । सभ कहैक –"ई नेना बहुत भाग्यवंत अछि । जनमतहि पिताकेँ सरकारी नौकरी लागि गेलैक।" सौरभक प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

मुदा सभकिछु सोचलाहा थोड़बे होइत छैक ? किछुए दिनक बाद आरतीकेँ मोन खराप रहए लगलनि। करवनो किछु,करवनो किछु सिकाइत रहिते छलनि । मुदा सुधार नहि भेलनि।

बिआहक बाद सौरभ गाम नहि गेल छलाह । मोनमे खुटका रहनि जे गोसाउनिकेँ नवकनिआकेँ गोर नहि लगओने छी। गाम-घरक लोकसभ जखन भेटितनि एहि बातपर टोकारा दैत छलनि । मोनमे होनि जे तँ आरतीक मोन बेर-बेर खराप होइत रहैत छनि । अस्तु,ओ एकदिन आरतीक संगे गाम बिदा भेलाह । गामक टुटल-फुटल घर उजरल-उपटल डीहक निसानी बाँचल छल । चारूकात दिआद-बादसभ घेरि-बेरि लेने छलखिन । लोकसभ तँ ओहिना खिधांस करैत छलनि,ककरो इच्छा थोड़े रहैक जे ओ गाम आबथि । तथापि ओ गाम पहुँचि गेल रहथि । ओहिठाम एहन हालत नहि छल जे किछुओ दिन रहि सकथि । तँ एक सप्ताहमे वापस भए जेताह,से मोनमे सोचैत छलाह ।

सौरभ सपरिवार गाम पहुँचि तँ गेलाह मुदा रहताह कतए? पुस्तैनी घर खसि पड़ल छल । बारीमे दिआदसभ तीमन-तरकारी रोपि देने छलाह । तकर लत्तीसँ सौंसे पसरि गेल छल । गोसाउनिक

घरक हुनकर पितिऔतक कब्जामे छल । ओएहसभ भगवतीकेँ धूप-आरती देखबैत छलाह । तेँ हुनकरसभक ओहि घरपर अधिकार तँ सिद्ध छल । घंटा बीतल,दू घंटा बीतल,तीन घंटा बीतल मुदा सौरभ सपरिवार ओहिना ओसारापर बैसल रहि गेलाह । ओहि आङनमे तीनटा आओर घरबासी छलाह-हुनके पितिऔत सभ । सभ एक-दोसर दिसि देखि रहल छलाह । केओ नहि कहलक जे ओसभ हुनके परिवारमे सामिल भए जाथि । आरतीक मोन घोर भए गेलनि । ओ तामसमे किछु-किछु बाजए लगलीह । हुनकर मोन तँ पहिनेसँ खराप रहैत छलनि । क्रोधक भयानक आवेगसँ लगलनि जेना मोथ फाटि जाएत । रातिभरि सभगोटे ओसारेपर रहि गेलाह ।

दोसरदिन भोरे आरतीक मोन आओर अधिक खराप भए गेलनि । छातीमे बड़ी जोरसँ दर्द होइत छलनि। सभकेँ भेलैक जे गैस चढ़ि गेल छनि । दर्द बढ़िते जा रहल छल । सौरभ हुनका तुरंत उठा-पुठाकए जेना-तेना दरभंगा लए गेलाह । मुदा ओहिठामक सरकारी अस्पताल तँ हाले-बेहाल छल । अस्पतालसँ डाक्टरसभ नदारद छल । सभ अपन-अपन घरमे निजी औषधालय खोलने छल । अस्पतालमे नाम लिखाउ आ इलाज डाक्टर साहेबक क्लीनिकमे कराउ तखन तँ किछु उमीदो कए सकैत छी मुदा जौं से नहि केलहुँ आ अस्पतालेमे पड़ले रहि गेलहुँ तँ ओहि मरीजक भगवाने मालिक। सएह हिनको संगे भेलनि । पहिलबेर सरकारी अस्पतालक फेरमे पड़ल छलाह । दलाल सभ कहनि -" हे! एहिठाम डाक्टर नहि अबैत छथि । नाम लिखा लेलहुँ से तँ नीक केलहुँ मुदा इलाज हेतु फलना डाक्टरक क्लीनीक पर चलि जाउ । कहब तँ हम ओहिठाम धरि पहुँचा देब ।” सौरभ किछु नहि बुझि सकलाह ।

होनि जे ओ सभ ठकि रहल अछि। घंटो कोनो डाक्टर नहि आएल। मरीजक हालत खरापे होइत गेल । चारि-पाँच घंटाक बाद एकटा सिस्टर अएलैक । ओ मरीजक हालत देखि बजैत अछि -

"अहाँसभ एकर जान किएक लए रहल छी? ई तँ आब-तबमे छथि ।"

"तँ की करू? कोनो डाक्टर नहि देखा रहल अछि? "

"एहिना रहि जाएब आ मरीज चलि जाइत रहत । हिनकर हालत बहुत खराप भए रहल छनि ।"

"तँ की करू?"

ओ सिस्टर हमरा हाथमे अपन परिचय पत्र देलक । ओहिमे डाक्टरक नाम,पता लिखल रहैक।

"बिना देरी केने हिनका ओतहि नेने चलि जाउ । साइत किछु इलाज भए जानि । "

सौरभ इएह-ले ओएह-ले हुनका उठा-पुठा कए डाक्टरक क्लीनीक दिस बिदा भेलाह । रस्तामे एक सँ एक डाक्टरक बड़का -बड़का मकान आ तकर आगामे मरीज सभक भीड़ देखि-देखि हुनकर मोन व्यग्र भेल जा रहल छनि । "की पता ,कहीं ओहू डाक्टरक ओहिठाम इएह हाल ने होइ ?"- ओ मोने-मोन सोचथि। जेना-तेना ओ डाक्टरक ओहिठाम पहुँचि गेलाह । पाछा- पाछा घुमैत छथि तँ ओ दलाल सेहो हिनकर पछोर केने ओतए पहुँचि गेल छल ।

डाक्टरक ओहिठाम मरीज आ ओकर लोकसभ करमान लागल छल । गेटसँ भीतर ससरबाक रस्ता नहि छल । ने डाक्टरक कोनो कर्मचारी देखाइत छल । ओएह दलाल आगू बढ़ि कए सौरभकेँ डाक्टरक कर्मचारी धरि लए गेल । हुनकासँ पाँच सए

रुपया लए पर्ची बनबा देलक आ कातमे राखल बेंचपर बैसा देलक। तखन कहैत अछि -" आब हम जेबैक कारण आनो मरीजसभकेँ सेवा करक छैक । हमर फीस दू सए दए दितिऐक।"

"अहाँक कथीक फीस होएत? अहाँ कोनो डाक्टर छी?"-सौरभ एतबे बाजल रहथि की दूटा मुस्टंड हुनकर नरेठी धेलक ।

“टाका देबहक की बाहर फेकि दिअ?" लग-पासमे ठाढ़ लोकसभ ओकरेसभक समर्थनमे बाजए लागल।

"हे! तँ टाका दैत किएक नहि छिऐक? सभक समय खराप भए रहल छैक ।" -एकटा लोक बाजल ।

"लगैत अछि पहिले बेर आबि रहल छथि।"-दोसर केओ बाजल ।

"अहाँ चलते सभक काज हरमाद भए रहल छैक । से नहि बुझा रहल अछि की?"-तेसर बाजल । एहि तरहें चारूकात लोकसभ हुनका गोलिआ लेलक । ओ तुरंत दूसए टाका जेबीसँ निकालि दलालकेँ दए देलखिन। दलाल मोछ पिजबैत बिदा भेल ।

" जखन अहाँकेँ देबेक छल तँ एतेक घमर्थन करबाक कोन काज रहैक?”-चारिम आदमी बाजल। सौरभ की बजितथि? चुप-चाप पाँतिमे लागि गेलाह । कम सँ कम पचीस आदमी हुनकासँ आगा पाँति लगओने ठाढ़ छल । ई कतबो कहथिन जे हुनकर मरीजक हालत बहुत खराप छनि मुदा केओ सुनबाइ नहि केलकनि। करीब दू घंटाक बाद हुनका बजेलकनि । ताबे तँ मरीजक हालत बहुत खराप भए गेल छल ।

हुनका देखितहि डाक्टर चिकरए लागल-

" अहाँसभ राक्षस छी । हिनकर जान बचि सकैत छलनि। मुदा ततेक देरी भैल जे.......

" से की?"-सौरभ बजलाह ।

"आब ई नहि छथि ।"-से कहि डाक्टर आगा बढ़ि गेलाह। सौरभक कोनो बातक जबाब देबए हेतु केओ ओतए नहि छल । ओ ठामहि धराम दए खसलाह । देखिते-देखिते सौरभक घर उजरि गेलनि ।

३०

आरतीक असामयिक देहावसानसँ सौरभपर विपत्तिक पहाड़ टुटि गेलनि । बहुत अफसोच होनि जे गाम किएक अएलहुँ। भने दिल्लीमे समय कटि रहल छल। जरूर ककरो नजरि लागि गेल। तरह-तरहक बातसभ मोनमे अबैत रहलनि । आब वापस दिल्ली जेताह से साहस नहि होनि आ नहि जेताह तँ गुजर कोना हेतनि । गाम कथीपर आ ककरा लग रहताह? ओमहर दिल्लीमे पाण्डेयजी आ चंद्रकान्तकेँ एहि दुर्घटनाक बारेमे किछु विलंबसँ पता चललनि । ताबे श्राद्ध संपन्न भए गेल छल । तथापि ओसभ सौरभक हाल-चाल लेबाक हेतु गाम अएलाह । हुनकासभकेँ देखितहि सौरभ कानए लगलाह । बहुत मोसकिलसँ हुनका सम्हारल गेल । जे भए गेल से बहुत जुलुम भेल मुदा आब ओकरा सोचि-सोचि किछु प्राप्त होबए बला नहि अछि। "पाण्डेयजी आ चंद्रकान्त बहुत बुझेलखिन । गौंवासभ सेहो अपना भरि साहस देलखिन । मुदा सौरभ तँ एकदम लस्त पड़ल छलाह । किछु करबाक साहसे नहि होनि । बहुत मोसकिलसँ ओ पाण्डेयजी आ चंद्रकान्तक संगे बिदा बेलाह । रत्ना सेहो संगे रहथिन । हुनकर इसकूल खुजि गेल

छलनि। रत्नाकेँ सम्हारब सेहो बहुत कठिन भए रहल छल । जेना - तेना ओ सभ दिल्ली वापस अएलाह ।

घटनाक्रमसँ सौरभ बहुत चिंतित भए गेल छलाह । मातृहीन संतानक पालन-पोषण करबाक संपूर्ण जिम्मेबारी सौरभपर आबि गेलनि । ओ रत्नाक पिताक संगहि-संग माता सेहो बनि गेल छलाह । दिनभरि नौकरी करथि आ बाँचल समयमे ओकर देखरेखमे लागल रहथि । ने नौकरी छोड़ल जा सकैत छल ने बच्चाकेँ । दुनू काज अनिवार्य छल । कतेको दिन ओ नेनाकेँ अपना संगे इसकूल लेने जाथि । जेना-तेना समय ससरि रहल छल । लोकसभ कहनि –"दोसर बिआह कए लिअ। अरवन तँ सौंसे जिनगी धएले अछि । " मुदा ओ एहि प्रश्नपर टस सँ मस नहि भेलाह। हुनकर हालतपर हुनकर चपरासी पाण्डेयजीकेँ बहुत दुख होनि । याथासाध्य ओ हुनकर मदतिओ करथि । मुदा कोनो एकदिनक बात तँ छलैक नहि? कोनो निजगुत व्यवस्था जरूरी छल।

"अहाँ एना कतेक दिन बौआइत रहब । एनामे तँ बच्चा हेहरू भए जाएत?"-पाण्डेयजी कहलखिन।

"मुदा उपाय की?"- सौरभ बजलाह ।

"उपाय कोनो भगवान तँ करथिन नहि । हमरे-अहाँकेँ प्रयत्न करबाक होएत । ताहि हेतु हमरा मोनमे एकटा विचार अछि। अहाँ कही तँ हम से बाजी ।"

"किएक नहि बाजब? हमर अहाँसन शुभचिंतक आओर अछि के?

" अहाँ कही तँ हम सपरिवार अहींक लोधी कालोनीक डेरापर चलि आबी । ऊपरमे बरसाती खालिए अछि । संगहि

नौकरबला कोठरी सेहो अछि । हमरोसभकेँ किछु उसास भए जाएत आ अहाँक नेनाक पालन-पोषण सेहो ।"

सौरभकेँ ई प्रस्ताव बहुत नीक लगलनि । ओ तुरंत अपन सहमति दैत बजलाह-

"एवमस्तु!"

"ओहीदिन साँझमे पाण्डेयजी अपन आसन-बासन सौरभक लोधी कालोनी स्थित डेराक बरसातीमे लए अनलाह ।

आरतीक आकस्मिक ,असामयिक मृत्युसँ सौरभ बहुत आहत छलाह । कैक बेर माथा बेकाबू भए जानि । नौकरी करब मोसकिल भए गेलनि । तहन तँ सरकारी विभाग छलैक । हुनका सहैत रहल जाहिसँ हुनकर जिनगी चलैत रहए । रत्ना बहुत छोट छलि । ओकर पालन-पोषण के करैत ? से सब सोचि अधिकारीगण हुनका यथासंभव मदति करैत छलनि । मुदा हिनकर अपने मोन वशमे नहि रहनि । रहि-रहि कए उद्वेग भए जानि । आरती-आरती कहि चिचिआ उठैत छलाह । कैक बेर तँ सुतलेमे उठि जाथि आ घरक दरबाजा खोलि चिठ्ठी ताकए लागथि । पाण्डेयजी पुछथिन-

"ई की कए रहल छी? एना रातिमे दरबाजा किएक खोलि रहल छी?" तखन जेना हिनका भक दए गलतीक अहसास होनि । समयक आघात-प्रतिघातसँ हुनकर मोन खंड-खंड भए गेल छल। पाण्डेयजी हुनकर हालत देखि बहुत चिंतित रहैत छलाह ।

एकदिन एहिना भोरहरबामे ओ घरक ताला खोलि जोरबाग मेट्रो टीसनलग पहुँच गेलाह । संयोगसँ हुनकर ग्रामीण चंद्रकान्त ओहीबाटे जाइत रहथि । ओ तुरंत हुनका चीन्हि गेलखिन। गौंवे छलखिन ,तँ स्वाभाविक रुपसँ ओ स्कूटर परसँ उतरि हाल-चाल पुछए लगलखिन –

"गोर लगैत छी ।"
"ओ चंद्रकान्त! भने भेटि गेलह । हमरा तँ एहिठामक किछु ताल-पातरे नहि बुझा रहल अछि । कतेक कालसँ घुरिआ रहल छी । मुदा कोमहर जाइ किछु फुराइते नहि अछि । मेट्रो टीसनसँ सटले हमर घर अछि। मुदा एहिठाम तँ केओ देखा नहि रहल अछि । तोरा देखलिअह तँ जान-मे-जान आएल ।"
"कतए जेबाक अछि?"
सौरभ एकटा पुर्जी निकालि कए दैत छथिन । ओहिमे लिखल पताकेँ चन्द्रकान्त पढ़ैत छथि ।
" ई तँ लगीचे मे अछि ।"
"हमर सरकारी डेरा ओतहि अछि । हमर बेटी रत्ना असगर होएत । तेँ बहुत चिंतामे पड़ि गेल छी ।"
"ओ! चलू हम अहाँकेँ पहुँचा दैत छी ।"

ओहि दिन साँझमे सौरभकेँ उघारे देहे देखि कए लोकसब छगुन्तामे रहए । बातो तेहने छलैक । दिल्लीक संभ्रान्त मोहल्ला जोरबाग लगक गप्प छैक । ओ अपन बामा हाथ आकाश दिस केने रहथि । दुनूगोटे जोरबाग मेट्रो टीसनसँ बढ़ैत कनीकाल मंदिरलग ठाढ़ भेलाह । ऊपर चढ़ि कए भगवानक दर्शन केलाह आ फेरसँ स्कूटरपर चढ़ि कए लोदी कालोनी दिस बढ़ि गेलाह।

दुनूगोटे बिदा भेलाह मुदा लोधी कालोनीमे बौआए लगलाह । मकान भेटबे नहि करनि । ओही पुर्जीमे मोबाइल नंबर सेहो लिखल रहैक । ओहि मोबाइल नंबरपर चंद्रकान्त फोन करैत छथिः
" हम चंद्रकान्त बाजि रहल छी । हमरा संगे सौरभ छथि । संयोगसँ हमरासँ जोरबाग टीसनलग भेंटि गेलथि । ओ अपन डेरा बिसरि

गेल छथि । हुनकर देल पतापर पहुँचबाक प्रयासमे हमसभ बड़ीकालसँ लोदी कालोनीमे बौआ रहल छी मुदा डेरा नहि भेटि रहल अछि ।"

"अखन छी कतए?"

"मदर डेएरी लग ।"

“अहाँ ओतहि ठाढ़ रहू । हम आबि रहल छी । "

थोड़बे कालमे पाण्डेयजी ओतए अबैत छथि । ओ सौरभ लग पहुँचतहि हुनका प्रणाम करैत छथि आ अपनासंगे हुनका लेने बिदा होइत छथि। चंद्रकान्तकेँ संगे चलाबक आग्रह सेहो करैत छथि ।

“हमरा तँ अखन काजपर जेबाक अछि । आब तँ डेराक पता बुझिए गेलिऐक अछि । छुट्टी दिन चैनसँ आएब।"

"अवश्य आएब ।”

चंद्रकान्त सौरभकेँ प्रणाम कए स्कूटरसँ आगा बढ़ि जाइत छथि।

यद्यपि सौरभ चंद्रकान्तक गौंवे छलाह मुदा हुनका बारेमे ओ पाण्डेयजीक संग पहिने कहिओ चर्च नहि केने रहथि। कोनो एहन अवसर नहि आएल रहैक । असलमे चंद्रकान्तक गोर-नार सुगठित देह,सरल विनम्र आ स्पष्टबादी व्यवहार ककरो आकर्षित कए लैत छल । पाण्डेयजीक चंद्रकान्तक बारेमे जानबाक स्वभाविक जिज्ञासा भेलनि । ओ सौरभसँ पुछिए लेलखिन-

" ई के छथि?"

" चंद्रकान्त हमर ग्रामीण छथि । चंद्रकान्तक पिता धनीक लोक छलाह । मुदा अपन पिताक श्राद्धमे जबार केलाह आ तकरबाद कर्जामे तेहनने दबि गेलाह जे उठि नहि सकलाह । चंद्रकान्तक पिता आ हमर पिता बहुत घनिष्ट दोस्त छलाह । हुनका लोकनिक

दोस्तीक ई आलम छल जे जँ गामक चौबटिआपर दुनूगोटे भेटि गेलाह तँ हुनका लोकनिकेँ भोर-साँझ सभ बिसरा जाइत छल । लोक अबैत,लोक जाइत मुदा ओ दुनूगोटे जस- के -तस गप्पमे भिरल रहितथि । अंतरंग मित्रताक ओ सभ उदाहरण छलाह ।

चंद्रकान्त मधुबनी इसकूलधरि हमर सहपाठी रहथि । तकरबाद हम पटना चलि अएलहुँ आ ओ गामे-घरमे रहि गेलाह । थोड़ेदिनक बाद नौकरी करए हेतु गाम छोड़ि प्रयागराज पहुँचि गेलाह । मुदा ओतहु बेसीदिन नहि रहि सकलाह । नीक काजक जोगारमे ओहिठामसँ दिल्ली आबि गेलाह। संयोगसँ एहिठाम हिनकर गोटी बैसि गेल। आब तँ बेस सुखी ,संपन्न भए गेल छथि । अपन कारखाना छनि,.कैकटा नौकर-चाकर हिनका अधीनमे काज करैत अछि । एतेक बढ़ि गेलाक बादो हिनकामे नम्रता बनल अछि। हमरा प्रतिए सिनेह ओहिना छनि जेना कि इसकूलक समयमे छलनि । चंद्रकान्त बहुत भावुक लोग छथि । ओ भावनगरमे किछुदिन ओहिठामक भावनाप्रधान परिवेशमे काजो केने रहथि ।

सौरभ अपन लोदी कालोनी स्थित घर पहुँचलाह । हुनकर स्वागत हेतु बेटी 'रत्ना' गेटसँ बाहरे ठाढ़ छलि। सौरभक बगए देखि रत्ना अकचका गेलीह ।

"एना किएक केने छी बाबू?"- सौरभ किछु नहि बाजि सकलाह । आँखिसँ नोर झहर-झहर खसि रहल छलनि । गला बाझि गेल रहनि। की बाजथु? किछु फुरा नहि रहल छनि। जलदी सँ हुनका लेने ओ अपन फ्लैटक अंदर चलि जाइत छथि । मोने-मोने लाज होइत छनि जे कहीं लग-पासक लोकसभ ने एहन बगएमे देखि लेनि। रत्ना छगुन्तामे छथि । “एना किएक?एना किएक?” इएह

प्रश्नसभक मोनमे घुरमि रहल छल । मुदा सौरभ गुम छलाह। बहुत मोसकिलसँ रत्ना अपना-आपकेँ सम्हारि सकलीह । पिताक ई हाल किएक भेलनि? ई बात मोनमे बेर-बेर अबैत छलनि ।
पाण्डेयजी झट दए भनसाघरमे गेलीह । चाह आ किछु जलखै सौरभक आगूमे राखि कए अपन आलमीरासँ खूब सुन्दर एकटा कुरता निकाललाह।
"एकरा पहिरि लिअ ।"- पाण्डेयजी आग्रह केलखिन । मुदा सौरभकेँ तँ जेना बकोर धेने रहनि । कुरता धएले रहि गेल । जलखै ओहिना धाएल, चाह सेराइत रहल। ने ओ किछु खाथि ने किछु बाजथि । गुमसुम सोफापर बैसल रहथि ।

पाण्डेयजीकेँ बुझेबे नहि करनि जे ओ आब की करथि जाहिसँ सौरभ शांत होथि ।" हिनकर भितरिआ कष्ट कमे नहि भए रहल छनि । आरतीक मृत्युसँ ई ततेक आहत छथि जे रहि-रहि कए हिनकर मोन उद्विग्न भए जाइत छनि । "- पाण्डेयजी मोने-मोन सोचथि ।

आरतीक मृत्यसँ आहत सौरभ अपन बामा हाथ निरंतर आकाश दिस उठओने रहैत छलाह । संभवतः नियंताकेँ किछु उपराग दए रहल छलाह जे एहन अन्याय ओ किएक केलनि । हुनकर जीवनक सभसँ मूल्यवान उपलब्धि छलीह आरती , से असमयमे चलि गेलखिन । दुख आ कष्टसँ ओ विक्षिप्त भए गेल छलाह। होनि जे देह-हाथ नोचि ली । भावावेशमे अपन कुरता सेहो फारि कए फेकि देलनि । मुदा ताहिसभसँ की होबएबला छल? प्रकृति अपन क्रूड़ संकल्प पूर्ण कए चुकल छल ।

"हाय हो रामा! ई की भए गेल हमर पिताकेँ ?"- से कहि कहि रत्ना कानए लगलीह । पाण्डेयजी लाख बुझेबाक प्रयास

केलथि मुदा रत्नाक मोन वशमे रहनि तखन ने? ओ तँ भावनाक अन्हरमे उधिआ रहल छलीह ।
"हिनका अखन किछु नहि कहिअनु । किछु काल ओहिना छोड़ि दिअनु । क्रमश: मोन शांत हेतनि तँ अपने सभटा बात कहताह । कहि नहि हिनका संगे विधाता एहन अन्याय किएक केलनि?" पाण्डेयजीक बात मानि कए रत्ना ओहिठामसँ सहटि कए दोसर कोठरीमे चलि गेलीह । एकान्त पाबि कए सौरभकेँ जेना उसास भेटलनि। बैसले-बैसल हुनकर आँखि लागि गेलनि ।

बेसक सौरभ थाकल रहथि तथापि हुनका एकहु क्षण लेल निन्न नहि होनि । एहन मोनमे निन्न भइओ कोना सकैत छलनि? आँखि मुनने सोफापर बैसल ओ सोच-विचारमे पड़ल छलाह । ओमहर रत्नासभकेँ भेलनि जे चलू भने आँखि लागि गेलनि । मोन हल्लुक हेतनि तँ आगा गप्प-सप्प कएल जेतैक ।

३१

ई संसार एकटा सपना मात्र अछि । कहि ने कखन के अछि,कखन नहि अछि । कोन बस्तु कखन अलभ्य भए जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । ई जनितो जे एहिठाम सभकिछु क्षणभंगुर थिक,सभ केओ यथासंभव जीवनपर्यंत एहि मृगतृष्णामे ओझराएल रहि जाइत छथि जे हुनकर मनोकामनाक पूर्त्ति हेतनि । मुदा एकटा -दूटा कामना रहए तखन ने? ई तँ बटबृक्ष जकाँ लतरैत रहैत अछि। आइ ई चाही तँ काल्हि किछु आओर। एहि तरहें मनुक्ख अपने बनाओल जालमे फँसैत चलि जाइत छथि । जाबे हुनकर भक टुटैत

छनि, दुनिआक बस्तु-जातक क्षणभंगुरताक अहसास होइत छनि,ताबे बहुत देरी भए गेल रहैत अछि । जीवनदीप मिझाइत रहैत अछि । कहबी छैक जे दीप मिझाइत काल बहुत जोरसँ भुकभुकाइत अछि आ तकरबाद सबदिनक हेतु लुप्त भए जाइत अछि । मुदा की करबैक ? जीवन इएह थिक । जँ लोक एतहि तृप्त भए जाइत तँ फेर स्वर्गलोकक कल्पना हमरा लोकनिक पुरखा किएक करितथि?

जीवनमे सभकेँ सभकिछु नहि प्राप्त भए सकैत अछि । जरवन अभिलाषा अपूर्ण रहि जाइत अछि तँ लोक परेसान भए जाइत छथि । परेसान ओहो रहैत छथि जिनका मनोवांछित फल भेटि जाइत छनि। से जाबे नहि भेटल रहैत छनि ताबे तकर जिज्ञासा,संघर्ष रहैत छनि। मुदा जरूरी नहि अछि जे जिनका प्राप्त भए गेलनि से ताहिसँ संतुष्ट भए जाथि । दुनिआमे कोनो वस्तुक अंत नहि छैक । विद्या,धन वा आओर आन तरहक उपलब्धि अपना संगहि कतेको प्रकारक संघर्ष नेने अबैत अछि । वरिष्ठताक अहंकार, प्रतिष्ठाक भूख मनुक्ख मात्रक जीवन पर्यंत पछोर केने रहैत अछि । ओहीसँ आपसी इर्ष्या,द्वेषक जन्म होत अछि ।

भगवानसभकेँ मोनमे कल्पनाक अनंत शक्ति देने छथि । जे चाही से सोचि लिअ । जतए चाही ,ओतए पहुँचि जाउ । कल्पनाक एहि दुनिआमे जेना चाही तेना रहि सकैत छी । मुदा करवनो ने करवनो भ्रम तँ टुटैक रहैत छैक । सौरभोक संग सएह भेलनि।

सौरभ ओहिदिन थाकल-हारल सोफापर पड़ि गेलाह । आँखि लगितहि सपनामे पुरना द्दष्य सीनेमाक रील जकाँ अबैत गेल। आरतीक संग हुनकर बिआहो भेल,हुनका संतानो

भेलनि,परिवारक रच्छा हेतु नौकरी सेहो पकड़लाह । तथापि कालक क्रूर हाथसँ ओ अपन पत्नीकेँ नहि बँचा सकलाह आ असमयमे डाक्टरक सामनेमे आरतीक मृत्यु भए गेलनि । सोचल जा सकैत अछि जे सौरभ कतेक दुखी भेल हेताह । तथापि संतानक पालन-पोषण ओ नहि करताह तँ के करत? तेँ नौकरी करैत रहलाह। पाण्डेयजीक केँ अपना ओहिठाम राखि अपन संतानक रच्छाक अंतिम क्षण धरि प्रयास करैत रहलाह ।

मोन दुख आ चिंतासँ भरि गेलनि । ओ छट-पट कए रहल छलाह । हाथ-पैर फेकि रहल छलाह जेना ककरो भगा रहल होथि। कनीकाल तँ तेना घिघिआ उठलाह जे लागल जेना केओ हुनकर नरेठी दबा रहल अछि । एहि उठा-पटकमे हुनकर निन्न टुटि गेलनि।

सोफापर बैसल आँखि मुनने सौरभ बड़बड़ा रहल छलाह -"आरती! आरती!"

हुनका एना बड़बड़ाइत सुनि कए पाण्डेयजी टोकलखिन-

"की भेल?"

सौरभक निन्न टुटि गेलनि ।

“भेल जेना आरती बजा रहल छथि ।"-से कहि सौरभ ठामहि टगि गेलाह ।

सपना टुटतहि सौरभक मोन हल्लुक भए गेलनि । हुनका आब बुझेलनि जे सभटा बृथा छल , मात्र मोनक भ्रम छल। निन्न टुटतहि सभकिछु नदारद छल । क्षणभरिमे ओ समस्त दुख,पीड़ासँ मुक्त भए गेलथि ।

सौरभ नीकसँ बुझि गेल रहथि जे सभकिछु मात्र हुनकर मोनक लौल छल। ओ स्वप्नलोकमे बौआइति रहलाह। मुदा

वास्तविकताक धरातलपर ओकरसभक कतहु कोनो आस्तित्व नहि छल ।

३२

आरतीक देहावसानसँ सौरभक मोन उदास भए गेलनि। सौंसे जिनगी संघर्षे करैत चल गेलनि आ जखन कनीक स्थिरतका संभावना बनि रहल छल तखन हुनकर जीवनमे तेहन ने भूकंप भेल जे सभकिछु हिला कए राखि देलक। ओ दिन-राति अपसोच करैत रहैत छलाह –“ने हम आरतीक पृष्ठभूमि जानबाक चक्करमे पड़ितहुँ ने आरतीक ई गति होइतनि । ओ असमयमे हमरा सापित, अशांत आ दुखी छोड़ि सदा-सर्वदाक हेतु प्रस्थान कए गेलीह । बाह रे हम! जे भेटि रहल छल,जे लगीच धरि आबि गेल छल तकरा अपने करनीसँ कतेक दुर्लभ कए लेलहुँ। आओर आब ओ दुर्लभे नहि,पंचतत्वमे विलीन भए गेलि । मुदा भावी प्रवल । बिधि वाम की करनी कठिन जहि सिअहि किन्हि बाबरो । विधाताकेँ इएह मंजूर छलनि ।”

सौरभकेँ मोन पड़ि रहल छलनि जे कोना ओ आ आरती जखन नाटकक मंचपर संगे पहुँचैत छलाह कि चारूकात लोक खुसीसँ नाचए लागैत छल । केना ओ एकदिन एहिना मचपर सुरमे सुर मिला कए गाबैत काल किछु आगा बढ़ि गेल रहथि । नाटकक निदेशक एकरा तुरंत बुझि गेल रहथि आ ओ पटाक्षेप करा देने रहथि। मुदा दर्शक आतुर भए गेल रहथि । हालात बेकाबू होइत देखि ओ नेपथ्यसँ हमरा लोकनिकेँ ओही गीतकेँ आगा गेबाक आज्ञा

देने रहथि आ हमसभ सएह केने रही । ओह! केहन रोमांचक दृष्य छल । आ निदेशक स्वयं हुलकबासँ बाज नहि आबि सकल रहथि । जनतासभ चिकरए-भोकरए लागल रहथि-"पर्दा हटाउ,पर्दा हटाउ । मुदा निदेशक हमरा लोकनिकेँ बेपर्द हेबासँ बचा लेने रहथि । आनंदक ओ चर्मोत्कर्ष छल । दूटा देह एकटा आत्मा भए गेल छल । आखिर निदेशक पर्दा नहि उठबए देलखिन आ लोकसभ व्यथित रहि गेल छल ।

सौरभ सोचिते जा रहल रहथि-“एहिना ओहिसाँझ हमरा लोकनि आपसमे प्रेमालाप करैत रहि गेल रही आ रत्ना जोर-जोरसँ कानैत छलि । मुदा ओ ओहिना बड़ी कालधरि कानैत रहि गेलथि । हमरालोकनिकेँ अवसरे नहि होअए जे केम्हरो ध्यान देल जाइत । मुदा रत्ना कानैत-कानैत बेहाल भए गेल रहथि । हमसभ चोट्टे रत्ना दिस भागल रही । बहुत मोसकिलसँ ओ चुप्प भेलि । हम अपना-आपपर तमसाएलो रही । आरती तँ बहुत मना केने रहथि । मुदा समय-समयक बात होइत छैक । आखिर ओहो झिकाएल लगीचमे आबि गेल रहथि । मुदा आब के हमर बात बूझत? ककरा हमरासँ कोन मतलब छैक ? जाबे आरती छलीह हम झाँपल-तोपल छलहुँ मुदा समय हमरा बेपर्द कइए कए मानलक । ओ हमरा कहथि-

"अखन अहाँकेँ नहि बुझा रहल अछि । जखन हम नहि रहब तँ देखि लेब । की हाल होएत?"

असलमे सौरभ कहिओ काल झक्कमे आबि कए किछु-किछु बाजए लगैत छलाह । गृहस्थ जीवनमे ई स्वाभाविक थिक । मुदा आरती बहुत संवेदनशील रहथि । ओ कैक बेर भावविह्वल भए जाइत छलीह ,कखनो काल उद्विग्नो भए जाइत छलीह । एहिसभक संग सौरभ आ आरतीक परिवारमे रत्नाक आगमनसँ मधुरता

आओर बढ़ि गेल छल । नवागन्तुक भविष्यक सुखद कल्पनामे दुनूगोटे आत्मबिभोर रहैत छलाह ।

धीरज आ घोषालक नाम ध्यानमे अबितहि सौरभक मोन तीत भए जाइत छलनि । ने ओ सभ बिदति करितथि ने आरतीक मोन विभक्त होइतनि । हिनका लोकनिक चलते सौरभक आरती प्रति कैक बेर कुभाव उतपन्न होइत रहलनि । मुदा हुनका ई नहि सोचाइन जे ओ एहिसभ हेतु स्वयं कम जिम्मेबार छलाह । जँ हुनकर मोनमे विश्वास बनल रहितनि तँ की मजाल केओ आन हुनकर भावनामे व्यवधान कए सकैत । हुनकर जीवनकेँ अशांत करबा हेतु ओ एहिदुनू व्यक्तिकेँ क्षमा नहि कए पाबि रहल छलाह,जखन कि आब धीरज,घोषाल आ आरतीमे सँ केओ जबाब देबाक हेतु बाँचल नहि रहथि । रहि गेल रहए मात्र सौरभक अपन मोन आ से सम्हरिए नहि रहल छल। इएह थिकैक मनुक्खक पराभवक कारण । जखन अपने मोन वशमे नहि अछि तखन ककरो की कहल जा सकैत अछि?

सोचएबला बात छैक जे सौरभक प्रति एतेक अनुराग रहितहु आरतीक मोन एमहर-ओमहर किएक भसिआ गेलनि? किएक ने ओ सौरभेकेँ धेने रहि गेलीह?एहि प्रश्नक जबाब आरती छोड़ि के दए सकैत अछि ? असलमे हुनकर देह आ मोनमे निरंतर संघर्ष चलैत रहैत छलनि । परिस्थिति तेहन ने भेल जे हुनकर देह आ मोन कखनहु एकाकार नहि भए सकल । तेँ मौका पबितहि आरतीक अतृप्त मोन देहपर भारी पड़ि जाइत छल ।

कमोवेस डाक्टर घोषालोक इएह हाल छलैक । ओकर पहिल प्रेमिकाकेँ ओकरे घरक लोक ततेक लांछित केलक,तरह-तरहक आरोप लगओलक जे ओ एकदिन हाबरा पूलपरसँ कुदि

गेलि । घोषालक आत्मा हाहाकार कए उठल । एहन भारी अत्याचारकेँ ओ सहि तँ गेल मुदा ओकर मोन जेना जरि गेलैक । ओहि जरल,पजरल मोनोपर करवनो ने करवनो देह भारी पड़ि जाइत छलैक। तहने परिस्थितिक निर्माण छल हुनकर आरतीक प्रति आकर्षण।

कैक राति निन्नमे डाक्टर घोषाल आरतीकँ सपनामे देखैत छल। कहि नहि कतेक मधुर होइत छल ओ दृश्यसभ। मुदा अनचोकेमे जखन ओकर निन्न टुटि जाइत छलैक तँ हाथमे अबैक फोकला । कतहु किछु नहि देखि ओकर मोन उदास भए जाइत छलैक । ओकर मोनक अतृप्तिबोध तीब्रतर भए जाइत छलैक । कैक बेर भावनाक अन्हरमे ओ दहो-बहो भए जाइत छल । मुदा सपना टुटितहि सभ जस के तस । एहि तरहें आरतीक ओकर भावलोककेँ हिला कए राखि देलक । अपना भरि घोषाल जे किछु कए सकैत छलाह से केलक । मुदा भावी प्रवल । अंततोगत्वा,ओकर मोन सशरीर हुगली नदीमे समाहित भए सभदिन हेतु शांत भए गेल।

ई दुनिआ बड़ विचित्र अछि । किछु भए जाउक लोक अपन गलती थोड़े मानैत अछि? ओ जे केलकसभ ठीक आ जे किछु गड़बड़ भेल ताहि हेतु अनकर माथपर खापरि फोड़ि देलक । असलमे ई कहब बड़ मोसकिल बात थिक जे दोख ककर छल? सभतँ अपन मोनक अभिलाषा पूर्तिक प्रयास कए रहल छलाह । नीक वस्तु ककरा नीक नहि लगैत अछि? तखन सभ की पाण्डवे सन उदार भए जाथु जे मनुक्खकेँ वस्तु जकाँ बाँटि कए संतुष्टिबोध करथि? फेर आजुक परिस्थितिमे एकरा समाजमे के नीक कहत? के

मान्यता देत? अखनो द्रोपदीक संग घटित भेल प्रसंगसभकेँ लोक कहि उठैत अछि-"सएह केहन छलाह पाण्डव जे एना केलाह।

कैक बेर आरती किछु एहन संकेत जरुर करैत छलखिन जकर संदर्भ भविष्यमे रहैत छल मुदा तकर सौरभ नहि बूझि पाबथि। एहिना एकबेर रत्नाकेँ सौरभक कोरामे दैत ओ कहने रहथिन-"एकरा नीकसँ रखबैक । अहींपर एकर सभ भार अछि आ रहत ।" सौरभ अकचका गेल रहथि ।

" ई एना किएक कहि रहल छथि? आरती अपन दायित्वसँ किएक भागि रहल छथि? की केओ माएक स्थान लए सकैत अछि? मनुक्खक असल रचनाकार ओकर माता होइत छथि? जखन रचनाकारकार स्वयं अपन निर्माणकेँ तिरस्कृत करए लागत तँ के की करत?"-सौरभ मोने-मोन सोचए लागैत छलाह । चिंतित भए सौरभ कैक बेर आरतीकेँ टोकि देथिन ।-

"अहाँ एना किएक बजैत रहैत छी? हमसभ तँ बहुतरास मोसकिलसँ एहिठाम धरि पहुँचलहुँ अछि । आबो तँ मोनमे चैन हेबाक चाही?" जखन सौरभ कैक बेर ई प्रश्न -प्रतिप्रश्न करैत रहलाह तँ एकबेर आरती कहलखिन-

"हम संन्यास लेबए चाहैत छी । हमरा आब एहिसभमे कनिको मोन नहि लगैत अछि? संसारक सभ वस्तु व्यर्थ लागि रहल अछि ।'

"मुदा अहाँक मोन एहन भेल कोना?"

"कहि नहि सकैत छी । भए सकैत अछि नियति स्वयं एकर जबाब देथि ।"

सोचैत-सोचैत हुनकर ध्यान रत्नापर पड़ि जाइत छलनि आ ओ थम्हि जाइत छलाह । हुनका लगनि जे अखन बहुत किछु करब

बाँकी अछि । रत्नाक उज्ज्वल भविष्यक निर्माणक आगू सभ बात बिसरा जाइत छलनि । ओ चाह पीबए लगैत छलाह । रत्ना कतहुसँ अबैत छलखिन आ ओ रत्नाकसंगे खेलाइति-धुपाइत सभकिछु बिसरि जाइत छलाह । हुनकर मोन एकबेर फेर हरिआ जाइत छलनि ।

ओहिदिन सौरभ भोरुका चाह पिबि लेने रहथि । रत्नाक दिखितहि हुनकर मोन फेरसँ हरिआ गेल रहनि। एकाएक हुनका मोनमे किछु विचार अएलनि -

"ई जीवन शोक मनएबाक हेतु नहि अछि । खाली बीतल बातकेँ गीरह बान्हि कए कतेक दिन रखने रहब? आगा बढ़ू । जीवन ईश्वरक वरदान अछि । किछु सार्थक,रचनात्मक काजमे लागि जाउ। सभटा दुख बिसरा जाएत । "

"की करी? बात तँ सही बुझाइत अछि?"

"किएक ने किछु एहन करी जाहिसँ आरतीक स्मृति सदति बनल रहि जाए।"

सौरभ आइ सुंदर परिधानमे सजल छलाह । लगैत जेना साक्षात सरस्वतीक वरदहस्त हुनका प्राप्त होनि । सौरभ रत्नाकेँ संगे आरतीक सारापर जा कए प्रार्थना केलनि । तकरबाद ओहिठाम एकटा अशोकक गाछ रोपि देलनि । चारूकात घेराबा दए देलखिन। गाछक जड़िमे पानि हेतु किआरी बना देलखिन । एहिक्रममे हुनकर वामा हाथ स्वतःसामान्य स्थितिमे आबि गेल । तकरबाद नित्यभोरे दुनू हाथे ओ ओहि गाछक जड़िमे पानि दैत रहलाह ।

रत्नामे नृत्य,संगीतक प्रतिए नेनेसँ रूचि छलनि । ओहि दिन गाछ रोपलाक बाद रत्नाकक नाम एकटा प्रसिद्ध नृत्य, संगीत विद्यालयमे लिखा देलखिन ।

कालक्रमे ओ गाछ बहुत झमटगर भए गेल । रत्नासे बढ़ैत गेलीह,पढ़ैत गेलीह । नृत्य संगीतक दुनिआमे आइ हुनकर नाम गर्वसँ लेल जाइत अछि । एहिसभसँ सौरभक मोनमे बहुत संतोरव भए रहल छनि ।

ओहि अशोकक झमटगर गाछक छाहरिमे बैसल सौरभ सोचि रहल छथि-

“जीवन मे जे चल गेल ताहिपर अपन कोनवश? मुदा जे बाँचल अछि से कोनो कम नहि थिक ।”

नियतिक एहि विधानकेँ सोचि-सोचि सौरभ आप्लावित छलाह ।

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847

The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।